Introducing
CHAPTERWISE
VIDEO LECTURES

Neo Star

आयांश

हिंदी पाठमाला

(Text-cum-Workbook)

DESIGNED ACCORDING TO NEP 2020 GUIDELINES

8

• डॉ० गीता रानी
• शोभा जैन

digibank

For Instructions turn the book or visit : www.vardhmanbooks.com

Neo Star

अयांश

हिंदी पाठमाला

(Text-cum-Workbook)

8

लेखिकाएँ
डॉ॰ गीता रानी
एम॰ ए॰ (हिंदी) गोल्ड मेडलिस्ट
पी-एच॰ डी॰
शोभा जैन
(एम.एड.)

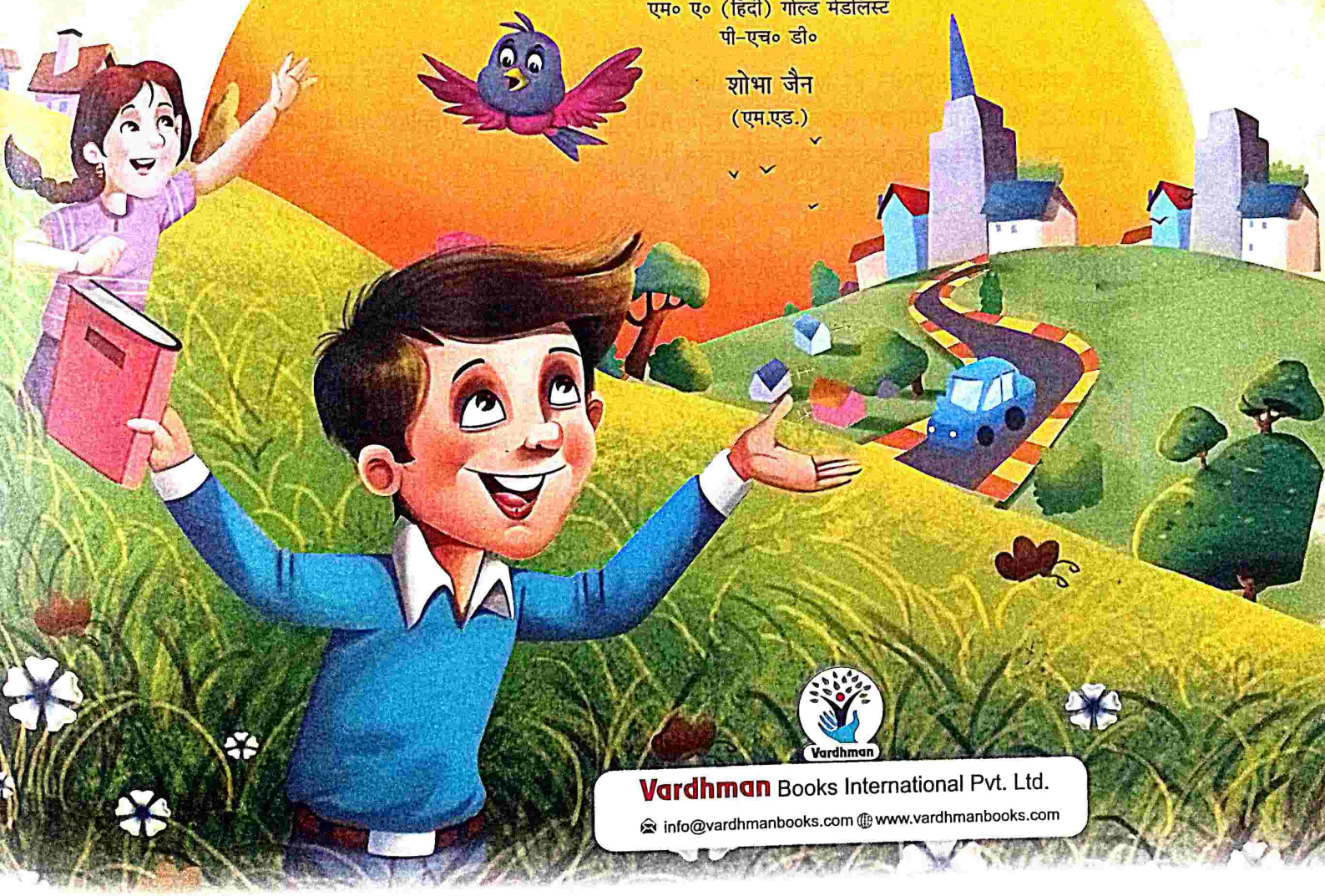

Vardhman
Vardhman Books International Pvt. Ltd.
info@vardhmanbooks.com www.vardhmanbooks.com

Vardhman Books International Pvt. Ltd.

Branch Office : Plot No. 16, Sector 10-C, IInd floor,
Vasundhara, Delhi/NCR—201012
info@vardhmanbooks.com
www.vardhmanbooks.com
Toll Free No. 1800-121-9968

© प्रकाशक :

सभी अधिकार प्रकाशकाधीन हैं। प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक में समाहित संपूर्ण पाठ्य-सामग्री के किसी भी भाग का मुद्रण, इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा अन्य किसी विधि से संग्रहण, प्रसारण अथवा प्रकाशन पूर्णतया वर्जित है।

यद्यपि इस पुस्तक को लेखन/संपादन/प्रूफ रीडिंग, तथा चित्रांकन की दृष्टि से त्रुटिरहित रखने तथा पाठ्य-सामग्री को शुद्ध रखने का यथासंभव प्रयास किया गया है तथापि भूलवश कोई त्रुटि, मशीनी या यांत्रिकी, रह गई हो तो इसके लिए प्रकाशक, लेखक और मुद्रक उत्तरदायी नहीं हैं। पुस्तक के सुधार हेतु प्राप्त सुझावों के लिए प्रकाशक/लेखक आभारी रहेंगे। त्रुटियों का परिमार्जन एवं प्राप्त विचारों और सुझावों का समायोजन आगामी संस्करण में कर दिया जाएगा।

संपादक मंडल : वर्धमान बुक्स संपादक मंडल
टाइप सेटिंग एवं चित्रांकन वर्धमान बुक्स
मुद्रक वर्धमान प्रिंट लाइन

रजिस्टर्ड ऑफिस : प्लॉट नं. 2, मोहकमपुर इंडस्ट्रियल एरिया,
फेज़-II, दिल्ली रोड, मेरठ (एन.सी.आर.)-250002

आमुख

प्रस्तुत हिंदी पाठमाला अयांश बालकों के मानसिक विकास की प्रक्रिया को रचनात्मक रूप से विविध स्तरों पर अग्रसर करने में एक महत्वपूर्ण शृंखला है।

इसे पूर्णतया संशोधित 'नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति' के अनुरूप पाठ्यक्रम पर आधारित किया गया है। पाठमाला में हिंदी साहित्य की विविध विधाओं जैसे— कविता, एकांकी, कहानी, संस्मरण, पत्र, जीवनी, डायरी, चित्रकथा, लोककथा आदि का समावेश किया गया है। राष्ट्र, समाज और संस्कृति के साथ-साथ पर्यावरण के प्रति भी विद्यार्थियों को सजग करने की चेष्टा इसमें निहित है।

ज्ञानवर्धन के साथ-साथ रोचकता और चित्रात्मकता इन पुस्तकों को अभिप्रायः पूर्ण बनाते हैं। भाषा की बारीकियों को सहज रूप से समझाने के उद्देश्य से व्याकरण को स्वाभाविक व रोचक रीति से समाहित किया गया है।

भाषा के सभी कौशलों जैसे— 'पढ़ना', 'लिखना', 'बोलना' और 'सुनना', आदि का विकास हो सके, इस उद्देश्य को इस पाठमाला की रचना के दौरान विशेष लक्ष्य में रखा गया है।

प्रश्नों को मौखिक, लिखित, बहुविकल्पीय, लघु उत्तरीय, दीर्घ उत्तरीय आदि में विभाजित करके पाठ का पूर्ण निहित अर्थ सुस्पष्ट रूप में समझने की विद्यार्थियों की पात्रता का विकास व मूल्यांकन किया गया है। साथ ही विविध प्रकार से विषय पर चिंतन-मनन करने तथा नए-नए बिंदुओं पर विचार करने की क्षमता को भी विकसित करने का प्रयास है।

पुस्तक बालकों में चिंतन-मनन की क्षमता को निश्चित की विकसित करेगी। साथ ही उनकी अनुभूति क्षमता भी गहन हो सकेगी।

स्वयं ही संवेदना की आंदोलित भावभूमि हमारे दावों का समर्थन करेगी। आदरणीय अध्यापक बंधुओं और विद्वत्जनों के सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

—लेखिकाएँ व प्रकाशक

विषय-सूची

1.	करें सेवा समर्पण से	*(कविता)*	5
2.	शिक्षा के लिए मेरा संघर्ष	*(आत्मकथा)*	9
3.	कर्ण और कुंती	*(एकांकी)*	16
4.	दो कविताएँ	*(कविता)*	24
5.	तुम कब जाओगे अतिथि?	*(हास्य-व्यंग्य)*	30
6.	मांडले जेल से (पत्र)	*(पत्र)*	35
*	शहीद का संदेश (पत्र)	*(पठन हेतु)*	41
*	साथी हाथ बढ़ाना (गीत)	*(पठन हेतु)*	42
7.	माँ, कह एक कहानी	*(कविता)*	43
8.	बिना हाड़-मांस के आदमी	*(कल्पना-कथा)*	48
9.	ईदगाह	*(कहानी)*	55
*	ओ अच्छी लड़कियो	*(पठन हेतु)*	62
10.	भाग्य विधाता कौन?	*(चिंतन-मनन)*	65
11.	समय	*(कविता)*	73
*	मेजर नवीन गुलिया	*(पठन हेतु)*	77
12.	नए जमाने के स्वाद	*(निबंध)*	79
*	सागर और मेघ	*(पठन हेतु)*	85
13.	शास्त्री जी	*(संस्मरण)*	88
*	जब गांधी जी फैशन करने चले	*(पठन हेतु)*	94
14.	कर्ण का मित्र-प्रेम	*(कविता)*	96
15.	धरती व पर्यावरण : संकट के घेरे में	*(लेख)*	100
*	सचिन तेंदुलकर की डायरी से	*(पठन हेतु)*	106
16.	हार की खुशी	*(कहानी)*	108
*	बरसात की आती हवा	*(पठन हेतु)*	116
17.	निक्की, रोज़ी और रानी	*(कहानी)*	117
18.	भक्ति पदावली	*(पद)*	127
*	पूर्व मध्यावधि प्रश्न-पत्र		131
*	मध्यावधि प्रश्न-पत्र		133
*	उत्तर मध्यावधि प्रश्न-पत्र		135

अध्याय

1. करें सेवा समर्पण से

मनुष्य भावनाशील प्राणी है। वह एक सुंदर जीवन व्यतीत करना चाहता है। इस कविता में उस अदृश्य शक्ति (ईश्वर) से कुछ भाव निवेदन किए गए हैं। आइए पढ़ें–

बने संसार यह सुंदर,
बहे धारा यहाँ निश्छल,
दया, करुणा, क्षमा, स्नेह की
सत्य का करें अभिनंदन,
उमड़े प्रेम हर आँगन।

स्वार्थ भाव विसर्जित हो,
मन की शांति अर्जित हो।
बने निष्ठुर न कोई जन,
न पीड़ा से भरा हो मन।

न कोई एकाकी–परित्यक्त रह जाए,
भाव सबके अभिव्यक्त हो पाएँ।
न छल–बल की विजय संभव हो
न क्रोधाग्नि से कोई संतप्त हो।

लोभ का लेश, न रहे शेष,
सब एक–दूजे को प्यारे हों।
करें सेवा समर्पण से
न अहंकार उर धारे हों।

यही विनती, सही निवेदन है
न हो कोई वंचित सुख को तरसे।
दे माँ सरस्वती विद्या विनय को,
संतों की आशीष हम पर बरसे।

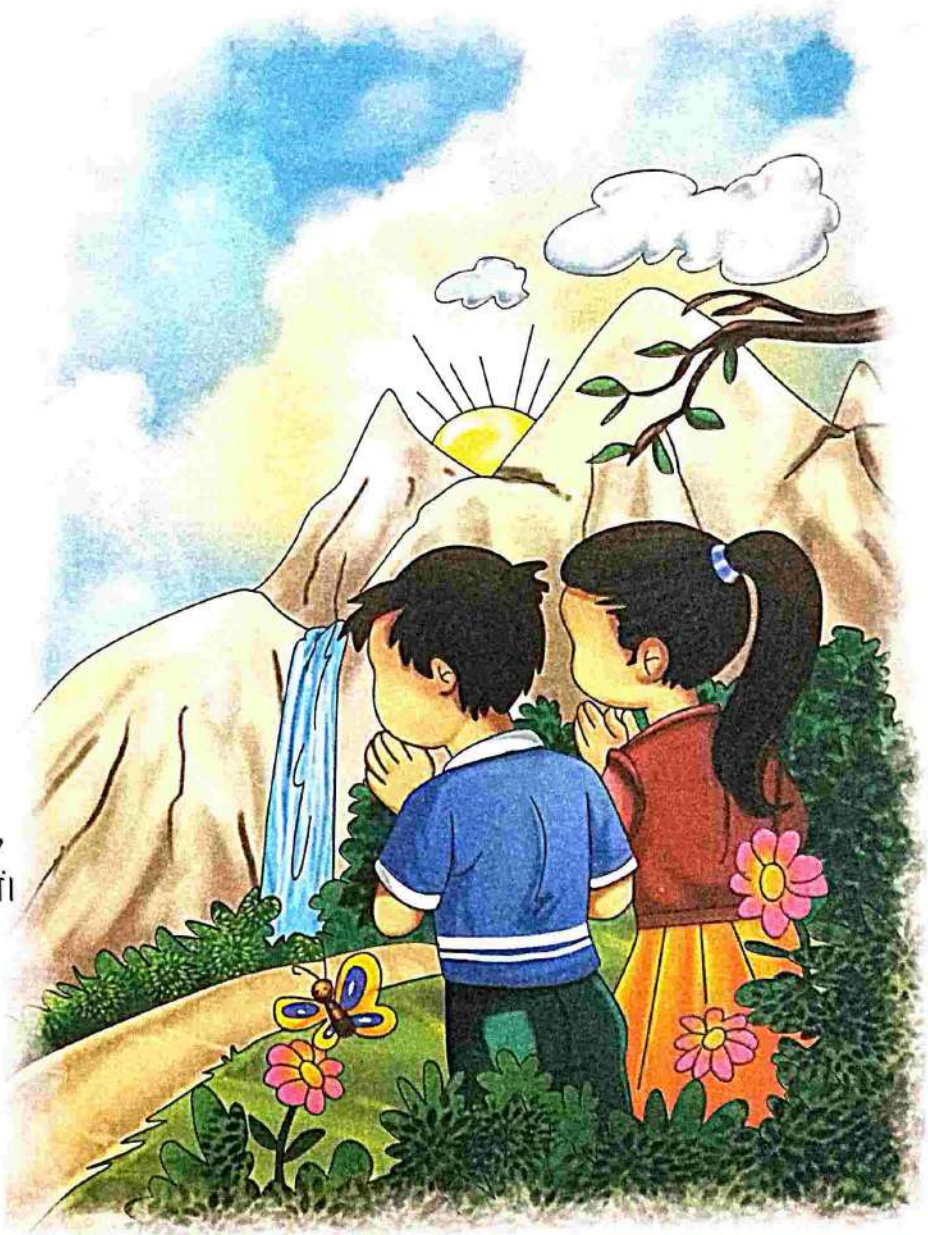

—डॉ० गीता रानी

अध्यापन संकेत विद्यार्थियों को बताएँ कि सफलता पाने के लिए उन्हें कभी भी छल-कपट का प्रयोग नहीं करना चाहिए। तभी साधु-महात्मा उन्हें आशीर्वाद देंगे।

शब्दार्थ

निश्छल - कपट रहित; अभिनंदन - सिर झुकाकर आदर देना; विसर्जित - बहाना; अर्जित - एकत्र करना; एकाकी - अकेला; परित्यक्त - छोड़ा हुआ, अकेला।

अभ्यास

कविता से

मौखिक प्रश्न

(क) कविता में किसके अभिनंदन की बात कही गई है?

(ख) कविता में किसे अर्जित करने की कामना की गई है?

(ग) किसकी विजय नहीं होनी चाहिए?

(घ) कविता में किनसे आशीष लेने की बात कही गई है?

लिखित प्रश्न

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए–

(क) अभिनंदन करना है–

(अ) नेता का (ब) अभिनेता का

(स) सत्य का (द) पंडित का

(ख) कोई नहीं रहना चाहिए–

(अ) शहर में (ब) परित्यक्त होकर

(स) गाँव में (द) विदेश में

(ग) सरस्वती देवी से माँगी गई है–

(अ) विद्या विनय की (ब) ऋद्धि-सिद्धि

(स) संपदा की (द) शत्रु पर विजय की

(घ) किसके शेष न रहने की कामना की गई है-

(अ) क्रोध (ब) पांखड

(स) अन्याय (द) लोभ

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) किस भाव को विसर्जित हो जाना चाहिए?

(ख) मन में क्या नहीं होना चाहिए?

(ग) सेवा किस भाव से की जानी चाहिए?

(घ) किसकी विजय नहीं होनी चाहिए?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

व्याख्या कीजिए—

'स्वार्थ भाव विसर्जित हो, मन की शांति अर्जित हो।
बने निष्ठुर न कोई जन, न पीड़ा से भरा हो मन।'

भाषा-ज्ञान

1. 'अभि' उपसर्ग लगाकर लिखिए-

(क) युक्त अभियुक्त (ख) व्यक्त ________

(ग) नंदन ________ (घ) वादन ________

(ङ) उत्थान ________ (च) शाप ________

2. उपसर्ग और मूल शब्द को अलग करके लिखिए-

(क) परित्यक्त परि + त्यक्त (ख) परिभ्रमण ________

(ग) परिक्रमा ________ (घ) परिपाक ________

(ङ) परिवेश ________ (च) परिव्याप्त ________

3. निम्नलिखित शब्दों के तुकांत शब्द लिखिए-

(क) विसर्जित ________ (ख) परित्यक्त ________

(ग) लेश ________ (घ) प्यारे ________

(ङ) तरसे ________ (च) जन ________

4. निम्नलिखित शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

(क) संसार

(ख) क्षमा

(ग) शांति

(घ) अहंकार

(ङ) निवेदन

रचना के क्षण

- **भाव-भूमि** – आपने अब तक जो कुछ अपने परिवेश में देखा-जाना-समझा, उसमें आप क्या और कैसा परिवर्तन चाहते हैं? अपने भाव व्यक्त कीजिए।

कल्पना एवं चिंतन

- कल्पना कीजिए कि यदि मूल रूप से हृदय में प्रेम न हो, तो परिवार व समाज में संबंध कैसे हो जाएँगे? यह अनुभव करते हुए भी लोग स्वार्थी व निष्ठुर व्यवहार क्यों करते हैं? चिंतन कीजिए।

क्रिया-कलाप

- आप भी अपने हृदय के भाव प्रकट करने के लिए कोई कविता लिखिए।
- दिन भर में आपके मन में अनेक भाव उमड़ते-घुमड़ते होंगे। उनका सूक्ष्मता से अवलोकन कीजिए और जानिए कि उनमें से कौन से भाव शुभ है और कौन से अशुभ।

अध्याय

2. शिक्षा के लिए मेरा संघर्ष

महान पुरुषों की जीवनी जानने पर प्रायः पता चलता है कि उन्होंने सफलता पाने के लिए अपने जीवन में कितना कठोर संघर्ष किया। यहाँ अमेरिका के प्रसिद्ध लेखक तथा विचारक ब्रूकर टी वाशिंगटन ने शिक्षा प्राप्त करने के लिए किए गए अपने संघर्ष को व्यक्त किया है-

एक दिन कोयले की खान में काम करते हुए, मैंने दो खनिकों को वर्जीनिया में कहीं अश्वेत लोगों के लिए एक उच्च स्तरीय स्कूल के बारे में बात करते हुए सुना। पहली बार ऐसे स्कूल या कॉलेज के बारे में सुनना काफ़ी आकर्षक लग रहा था।

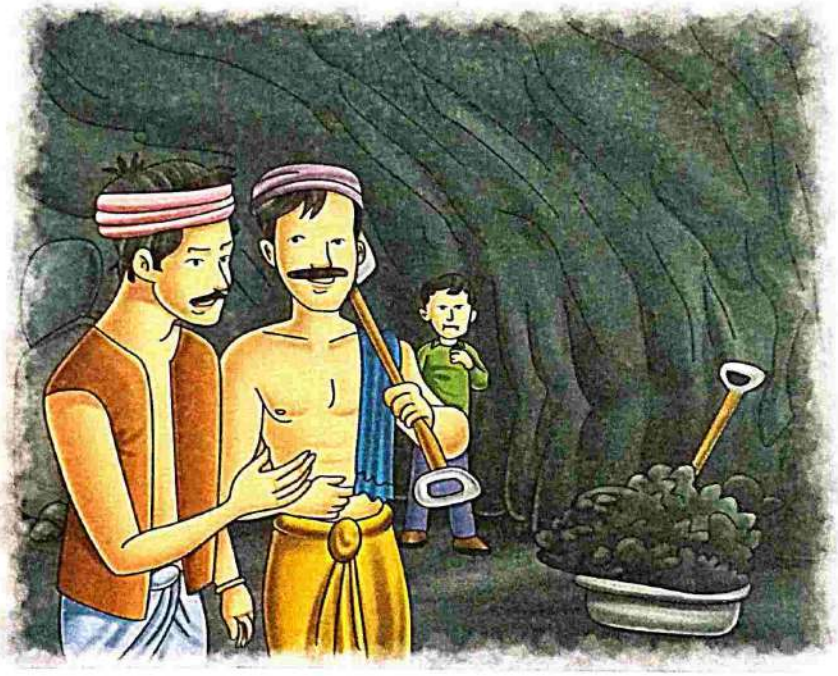

अपने आस-पास के अँधेरे का फ़ायदा उठाते हुए, मैं बिना आवाज़ किए जितना हो सकता था, उन दो आदमियों के नज़दीक खिसक आया। मैंने एक आदमी को दूसरे से कहते सुना कि वह स्कूल न केवल मेरी जाति के सदस्यों के लिए स्थापित किया गया है, वरन् उसमें ऐसे अवसर भी प्रदान किए जाते हैं जिनके द्वारा गरीब, लेकिन योग्य छात्र बोर्ड की परीक्षा देने के लिए छात्रवृत्ति प्राप्त कर सकते हैं और इसके साथ-साथ उन्हें किसी उद्यम की भी शिक्षा दी जाती है।

जब वे स्कूल के बारे में वर्णन कर रहे थे, तो मुझे लगा कि वह अवश्य ही धरती पर सबसे अच्छी जगह होगी। मैंने तुरंत उस स्कूल में जाने का निश्चय कर लिया, यद्यपि मुझे पता नहीं था कि वह कहाँ है या कितनी मील दूर है या मैं वहाँ कैसे पहुँचूँगा, बस मेरी केवल एक ही महत्वाकांक्षा थी कि मुझे हैंपटन जाना है। दिन-रात मैं इसी बारे में सोचता रहता।

1872 के खत्म होते-होते मैं दृढ़ संकल्प कर चुका था कि वहाँ जाकर ही रहूँगा। मेरी माँ के सिवाय और कोई मेरे हैंपटन जाने की महत्वाकांक्षा को लेकर सहमत नहीं था। माँ ने बेमन से सहमति दी, परंतु वह इस बात से भयभीत थीं कि मैं व्यर्थ की खोज में निकल रहा हूँ। कोयले की खान में काम करके मैंने जो पूँजी कमाई थी, उसे

मेरे सौतेले पिता और परिवार के अन्य सदस्य खर्च कर चुके थे। इसलिए कपड़े खरीदने और यात्रा-खर्च के लिए मेरे पास बहुत कम रुपये थे। अंततः वह दिन आ गया और मैं हैंपटन जाने के लिए निकल गया। मेरे पास केवल एक सस्ता-सा बस्ता था, जिसमें कुछ कपड़े थे। मालदेन से हैंपटन की दूरी लगभग 805 किलोमीटर है। मुझे घर से निकले कुछ ही घंटे हुए थे कि मुझे यह साफ़-साफ़ समझ आने लगा कि मेरे पास हैंपटन जाने के लिए किराया देने के लिए पर्याप्त धन नहीं है।

पैदल चलते हुए वैगन और कार दोनों में सवारी माँगते हुए, किसी तरह से कई दिनों के बाद हैंपटन से लगभग 132 किलोमीटर दूर वर्जीनिया के रिचमौंड शहर में पहुँच गया। जब मैं वहाँ थका, भूखा और गंदे कपड़ों में पहुँचा, तो बहुत रात हो चुकी थी। मैं उस जगह पर किसी को भी नहीं जानता था और शहरों के तौर-तरीकों से अवगत न होने के कारण मैं यह भी नहीं जानता था कि कहाँ जाना चाहिए। मैंने कई जगहों पर रहने की बात की, पर वे सब पैसा चाहते थे और वही मेरे पास नहीं था।

मैं आधी रात के बाद तक वहाँ की सड़कों पर घूमता रहा। आखिरकार मैं इतना थक गया कि मेरे लिए और चलना असंभव हो गया था। मैं थका हुआ था, भूखा था और बिल्कुल हताश हो चुका था। मैं सड़क के एक ऐसे स्थान पर पहुँचा, जहाँ पर किनारे की पटरी काफ़ी उठी हुई थी। मैं अपने बस्ते को तकिया बनाकर रात भर के लिए वहीं ज़मीन पर लेट गया। पूरी रात मैं अपने सिर के ऊपर पैरों की धब-धब सुनता रहा।

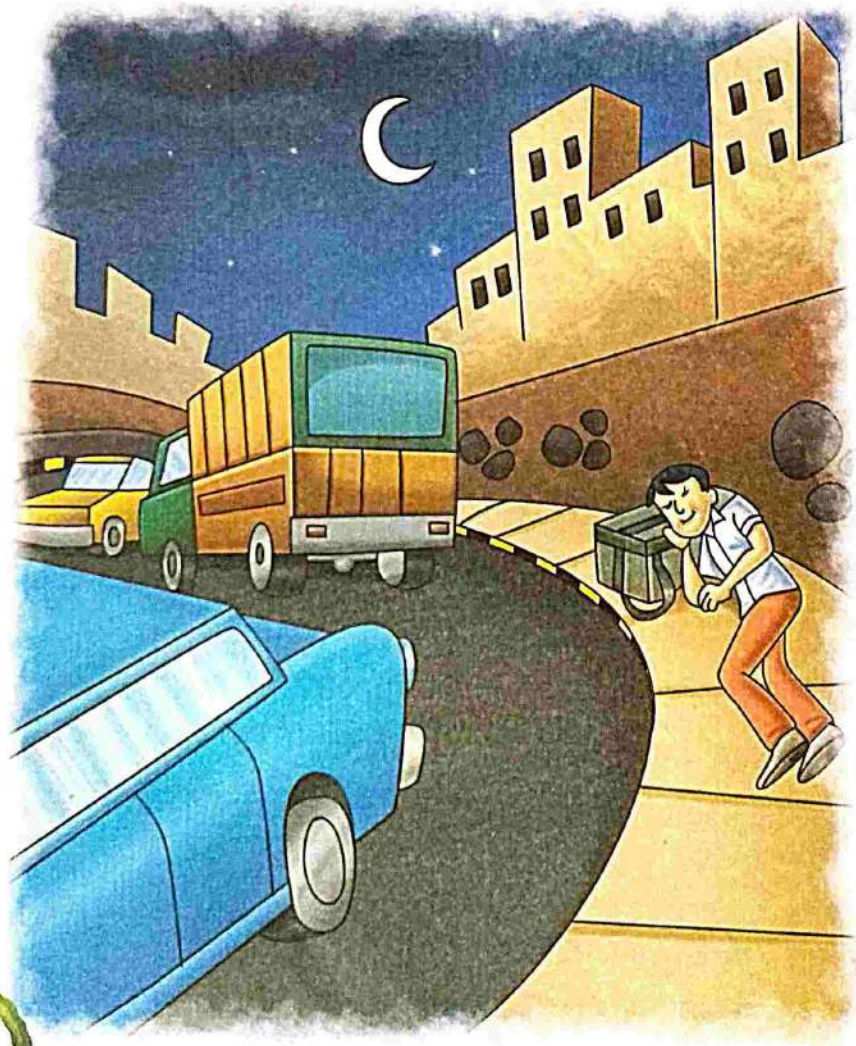

अगली सुबह जैसे ही उजाला हुआ, मैं उठ गया। मैंने देखा कि मैं एक बड़े से जहाज़ के पास हूँ और लग रहा था, मानों वह जहाज़ कच्चे लोहे के माल को उतार रहा है।

मैं तुरंत जहाज़ के नज़दीक गया और कप्तान से जहाज़ में से माल उतारने की अनुमति माँगी, ताकि खाने के लिए धन जुटा सकूँ क्योंकि लंबे समय से भरपेट भोजन न करने के कारण मैं बहुत भूखा था। कप्तान जो कि श्वेत था और दयालु लग रहा था, मान गया। अपने नाश्ते के लिए पैसे कमाने के लिए मैंने बहुत देर तक काम किया। जैसा कि अब मुझे याद आ रहा है, इतना बढ़िया नाश्ता मैंने पहले कभी खाया नहीं था।

मेरा काम कप्तान को इतना पसंद आया कि उन्होंने कहा कि अगर मैं चाहूँ, तो प्रतिदिन

कुछ रकम के लिए काम कर सकता हूँ। मैं भी यह सुनकर बहुत खुश हुआ। मैं काफ़ी दिनों तक जहाज़ पर काम करता रहा। मैंने रहने के लिए कोई जगह नहीं ली। मैं उसी पटरी के नीचे सोता रहा, जिसने मुझे पहली रात आसरा दिया था। मैं पैसे बचाता रहा, ताकि जल्दी से हैंपटन पहुँच जाऊँ।

जब मैंने इतने पैसे बचा लिए, जो मुझे लगा कि हैंपटन पहुँचने के लिए पर्याप्त हैं, तो मैंने जहाज़ के कप्तान को उनकी दयालुता के लिए धन्यवाद दिया और फिर से अपनी यात्रा शुरू कर दी। मैं पूरे पचास सेंट (लगभग तीस रुपये) के साथ हैंपटन पहुँच गया, जिनके साथ मुझे अपनी शिक्षा आरंभ करनी थी।

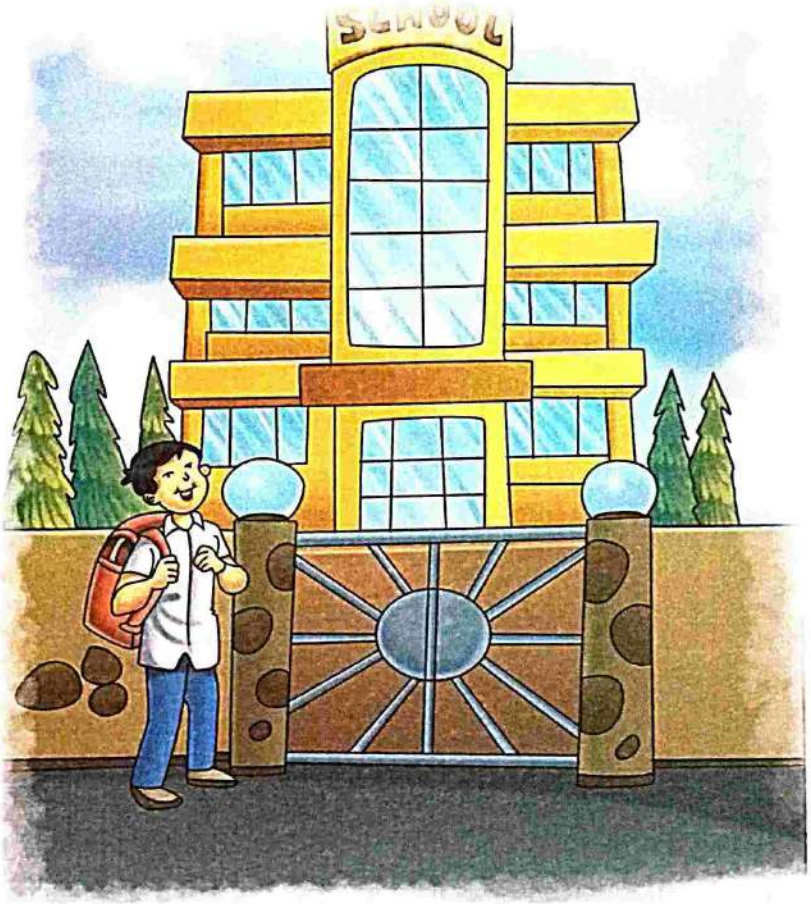

मेरे लिए यह एक लंबी अविस्मरणीय यात्रा थी, पर ईंट की विशाल, तीन मंजिला स्कूल की इमारत पर नज़र पड़ते ही मुझे लगा कि इस जगह पर पहुँचने के लिए मुझे जो सहना पड़ा, उसका मुझे इनाम मिल गया है। मैंने इससे पहले इतनी विशाल और भव्य इमारत नहीं देखी थी। उसे देखते ही लगा, मुझे नया जीवन मिल गया है। मुझे महसूस हुआ, जैसे एक तरह के जीने की शुरुआत हो गई है कि अब जीवन को एक नया अर्थ मिलेगा। मुझे लगा कि मैं स्वर्ग पहुँच गया हूँ और मैंने स्वयं से वादा किया कि दुनिया में सबसे उत्तम काम का निष्पादन करने के लिए बड़े से बड़े प्रयास करने से भी मुझे कोई बाधा रोक नहीं सकेगी।

हैंपटन इंस्टीट्यूट पहुँचते ही मैं हैड टीचर के सामने कक्षा के कार्य के लिए उपस्थित हो गया। हालाँकि इतने लंबे समय तक भोजन न खाने, नहा न पाने और वस्त्र न बदल पाने के कारण उनके ऊपर मेरा प्रभाव अच्छा नहीं पड़ा और मुझे तुरंत पता चल गया कि उनके दिमाग में मुझे छात्र की तरह प्रवेश देने के बारे में संदेह है।

उन्हें लगा कि मैं जैसे कोई निकम्मा-निठल्ला हूँ। कुछ समय के लिए न तो उन्होंने मुझे प्रवेश देने से मना किया और न ही मेरे पक्ष में निर्णय लिया और मैं उनके आगे-पीछे घूमता रहा और उन्हें हर तरह से प्रभावित करने की कोशिश करता रहा।

कुछ घंटे गुज़रने के बाद हैड टीचर ने मुझसे कहा, "साथ में कविता पाठ का कमरा है। उसमें सफ़ाई की ज़रूरत है। झाड़ू ले लो और उसकी सफ़ाई कर दो।" मुझे लगा कि अब मुझे मौका मिल सकता है। मैंने इससे पहले किसी आदेश का पालन इतनी खुशी से नहीं किया था। मैं जानता था कि मैं सफ़ाई कर सकता हूँ।

मैंने तीन बार कविता पाठ के कमरे को साफ़ किया। फिर मैंने धूल झाड़ने वाला कपड़ा (डस्टर) लिया और कमरे की धूल को चार बार झाड़ा। दीवारों के चारों ओर बने सारे लकड़ी के काम, प्रत्येक बेंच, मेज़ और डेस्क को मैंने चार बार पोंछा। इसके अलावा वहाँ रखे हर फर्नीचर, हर अलमारी को सरकाया और कमरे के हर कोने को अच्छी तरह से साफ़ किया। मुझे लग रहा था कि क़ाफी हद तक मेरा भविष्य उस प्रभाव पर निर्भर है, जो मैं कमरे की सफ़ाई करके हैड टीचर पर डालूँगा।

जब काम पूरा हो गया, तो मैंने हैड टीचर को जाकर बताया। वह एक अमेरिकी महिला थीं, जिनकी नज़रों से धूल बच नहीं सकती थी। वह कमरे में गईं और फ़र्श और अलमारियों को देखा, फिर उन्होंने रूमाल लिया और उसे दीवारों पर हुए लकड़ी के काम, मेज़ व बेंचों पर रगड़ा। जब उन्हें फ़र्श या फर्नीचर पर धूल का एक कण भी नहीं मिला तो वह शांत भाव से बोली, "मुझे लगता है कि तुमने इस संस्थान में प्रवेश पाने का अधिकार पा लिया है।"

मेरी खुशी का कोई ठिकाना न रहा। उस कमरे की सफ़ाई करना मेरी परीक्षा थी और कोई भी युवा हार्वर्ड या येल में प्रवेश पाने के लिए ऐसी कोई परीक्षा उत्तीर्ण नहीं कर सकता, जो उसे इससे अधिक संतुष्टि दे सके। तब से मैं अनेक परीक्षाएँ उत्तीर्ण कर चुका हूँ, पर मुझे हमेशा यही महसूस हुआ कि यह परीक्षा सबसे बेहतरीन थी।

—बूकर टी० वाशिंगटन

अध्यापन संकेत

विद्यार्थियों को बताएँ कि हमें कभी भी छोटे-छोटे काम करने में शर्म नहीं करनी चाहिए क्योंकि उससे ही हम सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

शब्दार्थ

छात्रवृत्ति – विद्यार्थी को सहायतार्थ मिलने वाला धन (वज़ीफ़ा); महत्वाकांक्षा – बड़ा आदमी बनने की इच्छा; अविस्मरणीय – न भूलने योग्य; प्रयास – कोशिश/प्रयत्न; दृढ़ संकल्प – पक्का इरादा; भव्य – सुंदर; उद्यम – उद्योग; हताश – निराश; निष्पादन – पूरा करना

अभ्यास

पाठ से

मौखिक प्रश्न

(क) लेखक ने कोयले की खान में दो लोगों को क्या कहते सुना?

(ख) लेखक ने उनकी बातें सुनकर क्या निश्चय किया?

(ग) लेखक की माँ किस बात से भयभीत थीं?

(घ) हैड टीचर ने लेखक से क्या करने को कहा?

लिखित प्रश्न

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए–

(क) स्कूल का वर्णन सुनकर लेखक को लगा कि स्कूल

(अ) में सख्ती होगी ⬭ (ब) धरती की सबसे अच्छी जगह होगी ⬭

(स) जाना बहुत कठिन है ⬭ (द) कभी नहीं जाना चाहिए ⬭

(ख) कविता पाठ वाले कमरे को लेखक ने-

(अ) बहुत अच्छी तरह झाड़ा-पोंछा ⬭ (ब) बेमन से साफ़ किया ⬭

(स) साफ़ नहीं किया ⬭ (द) बाद में साफ़ करने की बात कही ⬭

(ग) लेखक को शहर में रहने का ठिकाना इसलिए नहीं मिला क्योंकि वह-

(अ) अश्वेत था ⬭ (ब) अनपढ़ था ⬭

(स) परिचय पत्र नहीं लाया था ⬭ (द) पैसे नहीं दे सकता था ⬭

(घ) लेखक का काम देखकर अमेरिकी महिला-

(अ) संतुष्ट हुई ⬭ (ब) क्रोधित हुई ⬭

(स) उदास हुई ⬭ (द) डाँटने लगी ⬭

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) लेखक की महत्वाकांक्षा को लेकर परिवार में कौन सहमत था?

(ख) लेखक अपनी यात्रा पर घर से क्या लेकर चला था?

(ग) शहर पहुँचने पर लेखक की क्या दशा थी?

(घ) पहली बार लेखक का हुलिया देखकर हैड टीचर पर क्या प्रभाव पड़ा?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) जहाज के कप्तान से लेखक ने क्या अनुमति माँगी और क्यों?

(ख) जहाज़ का कप्तान कैसा व्यक्ति था? लेखक का काम उसे कैसा लगा?

(ग) स्कूल की इमारत देखकर लेखक को कैसा अनुभव हुआ?

(घ) लेखक ने स्वयं से क्या वादा किया?

भाषा-ज्ञान

1. सुमेल कीजिए-

स्तंभ 'अ'	स्तंभ 'ब'
(क) नज़दीक	(i) धनराशि
(ख) अलावा	(ii) व्यय
(ग) नज़र	(iii) प्रारंभ
(घ) डस्टर	(iv) समीप
(ङ) रकम	(v) दृष्टि
(च) खर्च	(vi) अतिरिक्त
(छ) शुरुआत	(vii) झाड़न

2. मुहावरों को उनके अर्थ से मिलाइए-

स्तंभ 'अ'	स्तंभ 'ब'
(क) खुशी का ठिकाना न रहना	(i) मुसीबत में और अधिक कठिनाई
(ख) कंगाली में आटा गीला	(ii) माँग अधिक, पूर्ति कम
(ग) ऊँट के मुँह में जीरा	(iii) गुणहीन व्यक्ति का अपनी बड़ाई करना
(घ) थोथा चना बाजे घना	(iv) बहुत अधिक प्रसन्न होना

3. संधि विच्छेद कीजिए-

(क) महत्वाकांक्षा _____

(ख) स्मरणीय _____

(ग) विद्यालय _____

(घ) निष्पादन _____

(ङ) सूर्योदय _____

(च) हताश _____

रचना के क्षण

भाव-भूमि - क्या आपको सरलता से विद्यालय में पढ़ने का सुअवसर मिला है? यदि हाँ, तो क्या आप इस बात को अपना सौभाग्य समझते हैं या पढ़ना आपको ऊबाऊ और बंधनकारी लगता है? अपने भाव व्यक्त कीजिए।

कल्पना व चिंतन

क्या होता यदि स्थान-स्थान पर विद्यालय और अध्यापक न होते? उन बच्चों के जीवन की कठिनाइयों की कल्पना कीजिए, जो किसी कारणवश (अभाव, निर्धनता, बीमारी या अनाथ होने के कारण) विद्यालय में नहीं पढ़ पाते।

क्रिया-कलाप

(क) 'शिक्षा और व्यक्तित्व निर्माण' इस विषय पर एक वार्ता प्रतियोगिता का आयोजन कीजिए।

(ख) 'विद्या धन अनमोल है' इस विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए–

अध्याय

3. कर्ण और कुंती

कर्ण कुंती का पुत्र था, जो उसे सूर्यदेव ने वरदान में दिया था। कुंती तब अविवाहित थी, इसलिए सामाजिक लज्जा के भय से उसने कर्ण को एक निर्धन दंपत्ति को दे दिया। महाभारत के युद्ध में जब कुंती के पुत्रों को कर्ण से अपने प्राणों का संकट पैदा हो गया, तब कुंती कर्ण से मिलने गई। इस एकांकी में माँ-पुत्र की गंभीर वार्ता है।

कर्ण : मेरा नाम कर्ण है, मैं एक सारथी का पुत्र हूँ, गंगा के किनारे बैठा हुआ सूर्यास्त की पूजा कर रहा हूँ। आप कौन हैं माता? मेरी माता राधा है।

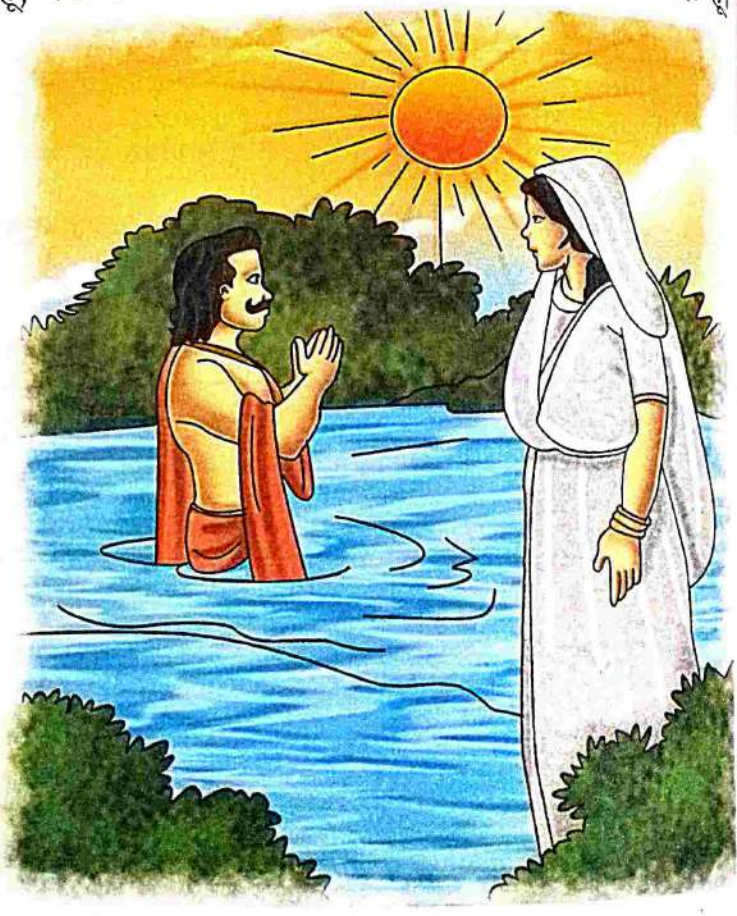

कुंती : वत्स! मैं वह स्त्री हूँ, जिसने तुम्हें संसार का यह प्रकाश सर्वप्रथम दिखाया और विश्व में तुम्हारा परिचय कराया। आज मैं अपने कुल की सब लाज तजकर अपना परिचय देने आई हूँ।

कर्ण : देवी! मैं आपकी बात समझा नहीं! आपके नेत्रों की दृष्टि मेरे हृदय को इस प्रकार पिघलाए जा रही है, जैसे पहाड़ की चोटी पर बर्फ़ को सूर्य की प्रातः कालीन किरणें पिघला देती हैं। आपकी आवाज़, लगता है, पूर्वजन्म में भी सुनी थी, जो कानों के द्वारा हृदय में पहुँचकर वेदनाएँ जगा रही हैं। कहो! कौन-सा रहस्य है, जो मेरे जन्म को तुम्हारे साथ बाँध रहा है। अपरिचिते! बताओ तो।

कुंती : क्षण भर धीरज धरो हे पुत्र! तनिक सूर्य भगवान अस्त हो ले और संध्या के अंधकार को तनिक गहरा हो लेने दो। सब कुछ बताती हूँ। सुनो, मैं कुंती हूँ।

कर्ण : कुंती! आप!! अर्जुन की माता जी!!!

कुंती : हाँ! मैं ही अर्जुन की माँ हूँ, पर यह सोचने भर से अपने मन में विद्वेष मत करना। मुझे रह-रहकर हस्तिनापुर का वह दिन याद आता है, जिस दिन अस्त्र परीक्षा हुई थी। तरुण कुमार तुरंग शाला में धीरे-धीरे इस प्रकार बैठे थे, मानों रात्रि की समाप्ति पर पहली किरण प्रकाशित हुई हो और पर्दे के पीछे महिलाएँ बैठी थीं। उन्हीं में एक अभागिन बैठी थी, जिसके नेत्रों से प्रेमाश्रु बह रहे थे और उसके कपोलों से ढुलककर गोद में गिर रहे थे। वह और कोई नहीं मैं ही थी, अर्जुन की माँ! उस समय जब तुमसे ब्राह्मण ने पिता का नाम पूछा था और कहा था कि तुम राजवंश से पैदा नहीं हो, इसलिए अर्जुन से युद्ध करने का तुम्हें कोई अधिकार नहीं है, तो तुम शांत, नीचे को गर्दन झुकाए खड़े रहे थे। भला उस समय तुम्हारी लज्जा से जिस भाग्यहीना के हृदय को ठेस लगी थी? वह अर्जुन की माँ ही थी। दुर्योधन-सा पुत्र धन्य है, जिसने तुम्हें तत्काल अपनाकर तुम्हारा राज्याभिषेक किया। वह कार्य वास्तव में प्रशंसनीय था। मेरे नेत्रों से उस समय हर्ष के कितने अश्रु बहे थे, तुम्हारे आशीर्वाद के हितार्थ, इसे मैं ही जानती हूँ। इस प्रकार कौरवों को एक योद्धा मिल गया। जब अधीरथ रथवान भीड़ को चीरता हुआ बाहर निकला, तो तुमने अपना राजमुकुट उसके चरणों में रख दिया, उस समय पांडव हँसने लगे... पर उस समय ऐसी कौन स्त्री थी, जिसका हृदय तुम्हारी बहादुरी को देखकर उछलने लगा... वह मैं ही थी, अर्जुन की जननी।

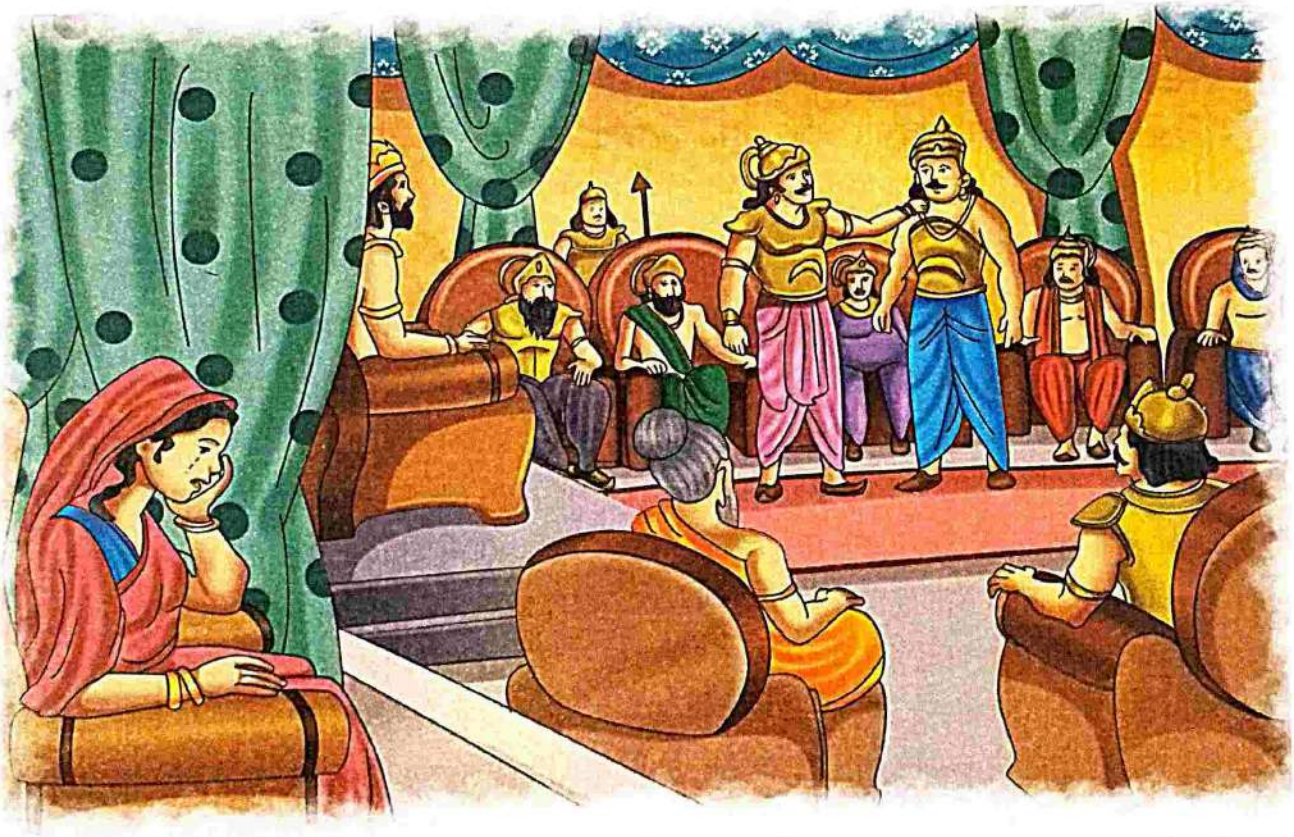

कर्ण : राजमाता, आपको प्रणाम! पर आप यहाँ अकेले कैसे आई हैं। यह युद्ध-स्थल संहारक है और आप जानती हैं कि मैं कौरवों का सेनापति हूँ।

कुंती : तुमसे एक भिक्षा माँगने आई हूँ। ना मत करना पुत्र।

कर्ण : राजमाता! मुझसे भिक्षा! क्षत्रिय के रूप में पौरुष और मेरा आत्मसम्मान। सब कुछ नतमस्तक होकर आपके चरणों में अर्पित कर दूँगा।

कुंती : मैं तो तुम्हें लेने आई हूँ।

कर्ण : मुझे! राजमाता, आप भला कहाँ ले जाएँगी, मुझे?

कुंती : मैं तुम्हारे स्नेह के लिए तड़प रही हूँ। अपने सीने से लगाना चाहती हूँ।

कर्ण : राजमाता! आप पाँच पुत्रों की भाग्यवती माँ हैं। मैं तो एक साधारण-सा राजा हूँ और वह भी हीन कुल का, भला मुझे हृदय में कैसे स्थान दे सकेंगी?

कुंती : मैं तुम्हें अपने हृदय में सर्वोच्च स्थान दूँगी, क्योंकि उन पाँच पुत्रों से भी तुम बड़े हो।

कर्ण : वहाँ प्रवेश पाने का भला मुझे क्या अधिकार है? जिसका सारा राज्य वैभव छीन लिया गया है, उनका एकमात्र मातृ स्नेह कैसे मैं बाँट लूँ, स्वार्थी बनकर। माता का हृदय ऐसा होता है, जिसे धन से प्राप्त नहीं किया जा सकता है। यह तो विधाता का ऐसा दान है, जिसे न कोई बाहुबल से जीत सकता है और न अन्य किसी प्रकार से।

कुंती : मेरे बेटे, मेरे लाल, एक दिन भगवान से यही अधिकार प्राप्त करके तुमने मेरी कोख से जन्म लिया था। बिना किसी विचार और सोच के उसी अधिकार के साथ गौरव सहित आओ! अपने भाइयों के बीच माँ की गोद का स्थान तुम भी प्राप्त करो।

कर्ण : देवी! आपकी बात मैं श्वान की तरह सुन रहा हूँ। सारे संसार में अँधेरा छा गया है, चारों ओर के दृश्य अँधेरे में छिप गए हैं, जाह्नवी भी शांत है। आप मुझे किस मायालोक में खींच ले जा रही हैं, जहाँ मेरी चेतना शून्य हो गई हैं। मेरा हृदय आपकी वाणी सुनकर मुग्ध हो गया है। लगता है, मेरा शैशवकाल अंधकार के जाल में मुझे लपेट रहा है। हे राजमाता, आओ सत्य हो या स्वप्न, तुम आओ और अपना वरदहस्त मेरे मस्तिष्क पर रख दो, क्षण भर के लिए लोगों से सुना था कि जब मैंने जन्म लिया था, उस समय माँ मुझे त्यागकर चली गई थी। मैं त्याज्य पुत्र हूँ। मैंने बहुत बार स्वप्न में देखा कि मेरी माता दयालु होकर धीरे-धीरे मेरे पास आई और ज्यों ही मुझे दिखी, तो वह स्वप्न मूर्ति तुरंत गायब हो गई और इस प्रकार मेरा सुख-स्वप्न टूट गया। आज वही स्वप्न सत्य हो रहा है, जो पांडवों की माँ जाह्नवी के किनारे संध्या के समय मेरी जननी के रूप में आई है। देवी, उस पार तो पांडवों के शिविरों में अँधेरे को दूर करने के लिए दीप जल गए हैं, और इस पार नज़दीक ही कौरवों की घुड़साला में घोड़ों के सुरों की टप-टप की आवाज़ आ रही है। कल प्रभात युद्ध का आरंभ होगा, तब आज की रात अर्जुन की माँ के कंठ में मुझे अपनी माँ का स्नेह स्वर मधुर संगीत-सा सुनाई क्यों पड़ा, तभी तो मेरा मन पांडवों की ओर उन्हें भाई समझकर दौड़ रहा है।

कुंती : तभी तो कहती हूँ, पुत्र आओ, मेरे साथ, मेरा कहना मानकर।

कर्ण : माँ! अब कुछ संशय या सोच नहीं रहा, तुम्हारे साथ चलूँगा। मुझे अब तुमसे कुछ नहीं पूछना तुम तो मेरी माता हो, सोचने की कोई बात नहीं रह गई। स्नेह पाकर मेरी अंतरात्मा जाग्रत हो उठी है। अव मेरे कान रणभेरी और जयशंख नहीं सुनते हैं। मुझे लगता है युद्ध की हिंसा, बहादुरों की प्रसिद्धि और हार-जीत मिथ्या है। कहाँ ले चलोगी, चलो।

कुंती : वहाँ, उस पार, जहाँ दीप जल रहे हैं, पांडवों के डेरों पर।

कर्ण : शुद्ध माँ का स्नेह देवी! एक बार फिर कह दो-तुम मेरे ही पुत्र हो।

कुंती : मेरे पुत्र!

कर्ण : माँ बताओ, तुम किसलिए मुझे मातृ-स्नेह से वंचित कर रेत पर फेंककर चली गई थी, जहाँ मुझे मान के बदले अपमान मिला था? क्यों तुमने मुझे भाइयों के परिवार से अलग कर दिया था? तुमने मुझे अर्जुन से अलग कर दिया, इसीलिए शैशव दोनों को खींच रहा है, द्वेष का रूप रखकर। माता! मैं जानता हूँ, तुम्हारे पास इसका कोई उत्तर नहीं है। शायद तुम्हें अपने किए का पछतावा हो रहा है, तभी तो लज्जा के कारण तुम्हारी दृष्टि नीची हो गई है। अच्छा माँ जाने दो, मत बताओ मेरे त्यागने का क्या कारण था। मैं अब इस बात का उत्तर नहीं चाहता हूँ कि तुमने संसार के सर्वश्रेष्ठ सुख माँ के स्नेह से मुझे क्यों वंचित किया था, पर फिर भी मैं जानता हूँ कि उन अज्ञात विवशताओं को आज त्यागकर मुझे गोद में लेने क्यों आई हो।

कुंती : पुत्र! तुम्हारी भर्त्सना पत्थर के समान है, जो मेरे हृदय को छलनी किए दे रही है। तुम्हारा मैंने त्याग किया था, यह उसी श्राप का तो दंड है कि आज मैं पाँच-पाँच पुत्रों की माँ होकर भी महसूस कर रही हूँ कि मैं निपुत्र हूँ। त्यागे हुए पुत्र को पाने के हेतु मैं दीपक जलाकर विश्व देवता की आरती किया करती थी, मेरा अहोभाग्य जो आज तुमसे मिल सकी। जब तुम बोल भी न सकते थे, तभी मैंने भीषण अपराध किया था, तो तेरी भर्त्सना ज्वाला मेरे हृदय के उस समय के पाप को जलाकर भस्म कर देगी और मैं पुनः पवित्र हो जाऊँगी।

कर्ण : माँ मुझे चरण-स्पर्श कर लेने दो जिससे मैं स्वयं को धन्य कर सकूँ और मेरे श्रद्धारूपी अश्रु स्वीकार करो।

कुंती : बेटा! मैं केवल इसलिए तुम्हारे द्वार पर नहीं आई कि तुम्हें प्यार करके हृदय से लगा लूँ। मेरी यह इच्छा दृढ़ है कि तुम्हें तुम्हारा वह अधिकार दे दूँ, जिससे तुम वंचित रहे हो। तुम सूत-पुत्र नहीं हो, राजा की संतान हो। अपने हृदय से पूर्व का सारा अपमान दूर करके मेरे साथ वहीं चलो, जहाँ तुम्हारे पाँचों भाई हैं।

कर्ण : जननी! मैं तो सूत-पुत्र ही हूँ, मेरी माँ तो राधा ही है, और इसी में गौरव भी है। मुझे किसी से कोई ईर्ष्या नहीं है, पांडव रहे, या कौरव रहें, मुझे क्या?

कुंती : बाहुबल से अपनी जीत का उद्‌गार करके राज्य पर अधिकार करो। युधिष्ठिर जैसे गंभीर योद्‌धा तुम्हारे सहकारी होंगे, भीम छत्रधर होगा और अर्जुन-सा सारथी होगा। धौम्य पुरोहित होगा, जो नित्य वेद गान किया करेगा। मेरे प्राणों से प्रिय तुम शत्रुओं को जीतकर अखंड प्रतापी राजा बन शत्रुहीन साम्राज्य के रत्नजड़ित सिंहासन को सुशोभित करो।

कर्ण : हे माता! जिसने मातृस्नेह तक मुझसे छीन लिया, वही मुझे सिंहासन का आश्वासन दे, यह असंभव है ना? जिस दौलत को तुमने मुझसे एक दिन छीन लिया था, उसे अब लौटाना क्या तुम्हारे सामर्थ्य की बात है? माँ, तुमने मेरा उच्च राजवंश, मेरे भाई, सब कुछ मुझसे छीन लिए मेरे जन्म लेते ही, तब तुमसे और क्या आशा करूँ? सूत जननी से कैसे छल करूँ, आज राजमाता को माता कहकर? माँ! जिन बंधनों से मैं कौरवों से बँधा हूँ, यदि उन्हें तोड़कर आज तुम्हारे साथ चला गया, तो मुझे सौ-सौ बार धिक्कार है।

कुंती : बहादुर, तू मेरा पुत्र है। तू धन्य है! ऐ धर्म, तेरा कितना कठोर दंड है। उस दिन कौन जानता था कि जिस छोटे शिशु को मैं असहायावस्था में तज रही हूँ, एक दिन सामर्थ्यवान बन फिर आएगा। अंधकारमय मार्ग से सिर उठाकर और पाषाण-हृदय बन अपने शस्त्र अपनी ही माँ की अन्य संतानों पर चलाएगा। कैसा शाप है यह!

कर्ण : भय मत करो। मैं कहता हूँ, युद्‌ध में पांडवों की जीत होगी, मुझे युद्‌ध का परिणाम स्पष्ट दिख रहा है। माँ! मेरा कहना मानो, पक्ष की हार स्पष्ट दिख रही है, उनसे नाता तोड़ने के लिए मत कहो। मेरी अच्छी माँ, मुझे ऐसी आज्ञा मत देना। पांडवों को राजपाट जीतना है, तो जीतने दो। मैं तो केवल कराहने और मृत्यु के घाट उतरने वालों का साथ दूँगा। बहुत समय हुआ, जब मैं पैदा हुआ था, तो आप मुझे नग्न और बिना नाम का छोड़कर चली गई थी। आज मुझे हार और मृत्यु के सामाने फेंककर चली जाओ, और आशीर्वाद देती जाओ कि विजय के लोभ या राज्य के लोभ से मैं वीरगति पाने के मार्ग से विचलित न होऊँ।

(संकलित)

अध्यापन संकेत हमें हर स्थिति में अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए, चाहे हमें उसके लिए किसी भी चीज का बलिदान करना पड़े।

शब्दार्थ

विद्वेष - शत्रुता; कपोल - गाल; लज्जा - शर्म; संहारक - नाश करने वाला; वैभव - समृद्धि; विधाता - ईश्वर; बाहुबल - शारीरिक बल; त्याग - छोड़ना; शैशव काल - बचपन; त्याज्य - छोड़ने योग्य।

अभ्यास

पाठ से

मौखिक प्रश्न

(क) कर्ण ने अपना परिचय क्या कहकर दिया?

(ख) कुंती ने दुर्योधन की प्रशंसा क्यों की?

(ग) कर्ण ने कौन-सा स्वप्न अनेक बार देखा था?

(घ) कुंती का स्नेह पाकर कर्ण को क्या व्यर्थ लगने लगा?

लिखित प्रश्न

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए–

(क) कुंती चाहती थी कि–

(अ) कर्ण उनका आदर करे ⬡ (ब) कर्ण पांडवों का साथ दे ⬡

(स) कर्ण विवाह करे ⬡ (द) कर्ण अपने शस्त्र त्याग दे ⬡

(ख) कर्ण ने कुंती के प्रस्ताव को–

(अ) मान लिया ⬡ (ब) स्वार्थपूर्ण बताया ⬡

(स) विचारकर के मानने का आश्वासन दिया ⬡ (द) विनम्रता से ठुकरा दिया ⬡

(ग) पाँच पुत्रों की माँ होकर भी कुंती को लग रहा था कि वह–

(अ) एक बोझ है ⬡ (ब) खतरे में है ⬡

(स) निपुत्र है ⬡ (द) निर्धन है ⬡

(घ) कुंती ने कर्ण को देने चाहे-

(अ) उसके अधिकार

(स) उसके वस्त्र व आभूषण

(ब) श्राप

(द) घोड़े-हाथी

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) कर्ण से कुंती ने क्या छीन लिया था?

(ख) कर्ण ने कुंती को किसकी जीत का आश्वासन दिया?

(ग) कर्ण ने किस दान को विधाता का दान कहा?

(घ) क्या कर्ण ने कुंती के प्रति द्वेष भाव रखा?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

आशय स्पष्ट कीजिए-

हे माता, जिसने मातृ-स्नेह तक मुझसे छीन लिया वही मुझे सिंहासन का आश्वासन दे, यह असंभव है ना? जिस दौलत को तुमने मुझसे एक दिन छीन लिया था, उसे अब लौटाना क्या तुम्हारे सामर्थ्य की बात है? माँ तुमने मेरा उच्च राजवंश, मेरे भाई सब कुछ मुझसे छीन लिए, मेरे जन्म लेते ही। तब तुमसे और क्या आशा करूँ? सूत जननी से कैसे छल करूँ, आज राजमाता को माता कहकर?

भाषा-ज्ञान

1. शब्दों का संधि विच्छेद कीजिए-

(क) असहायावस्था _____

(ख) सिंहासन _____

(ग) सर्वोच्च _____

(घ) राज्याभिषेक _____

(ङ) अंतरात्मा _____

(च) स्वार्थी _____

2. नीचे दिए गए निपात शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

(क) ही _____

(ख) भी _____

(ग) तक _____

(घ) मात्र _____

3. दिए गए विशेषण शब्दों में भाववाचक संज्ञा शब्द बनाइए-

(क) सुंदर _____

(ख) ऊँचा _____

(ग) बूढ़ा _____

(घ) गहरा _____

(ङ) योग्य _____ (च) सज्जन _____

(छ) शहरी _____ (ज) शांत _____

रचना के क्षण

भाव-भूमि - विचार कीजिए जब किसी बालक को उसके अन्य भाई-बहनों की तुलना में कम प्रेम मिलता है, तो उसकी क्या मनोदशा होती है।

कल्पना एवं चिंतन

कल्पना कीजिए, जब किसी निर्दोष व्यक्ति को भरी सभा में अपमानित किया जाए, तो उसको कैसी मानसिक पीड़ा होगी? क्या आपके साथी या किसी अन्य व्यक्तियों ने मिलकर कभी ऐसा किया है? इस पर आपने क्या प्रतिक्रिया की? बताइए।

क्रिया-कलाप

'महाभारत' एक महान ग्रंथ है। इसे पढ़िए और जानिए कि हमारी संस्कृति में कैसी-कैसी विकट स्थितियों से जूझने के लिए कितनी गाथाएँ दी गई हैं।

महाभारत के मुख्य पात्रों के नाम लिखिए।

दी गई एकांकी के कुछ अंशों के संवाद विद्यालय मंच पर बोलकर एक लघु नाटिका प्रस्तुत कीजिए।

अध्याय

4. दो कविताएँ

बच्चे अपनी माँ के प्रति प्रेम के आनंद को बड़ी गहराई से अनुभव करते है। इस कविता में कवि ने एक बालक की संवेदनाओं को बड़ी सूक्ष्मता व सुंदरता से व्यक्त किया है।

1. लुका-छिपी

यदि मैं शरारत करूँ,
फूल बनकर चंपा के पेड़ पर जा खिलूँ,
किसी भोर बेला में डाली पर हिलने-डुलने लगूँ,
तब तो माँ, तुम मुझसे हार जाओगी।

माँ, तब क्या तुम, मुझे पहचान सकोगी?
तुम पुकारोगी, मुन्ना कहाँ गया रे!
और मैं चुपचाप केवल हँसूँगा।
जब तुम किसी काम में लगी रहोगी।
तब मैं आँखें खोले हुए सब कुछ देखूँगा।
स्नान करके तुम चंपा के नीचे से,
निकलोगी, पीठ पर केश फैलाए हुए,

वहाँ से पूजा-घर में जाओगी,
तब तुम्हें दूर से फूल की सुगंध आएगी,
लेकिन तुम यह समझ नहीं पाओगी,
कि यह सुगंध तुम्हारे मुन्ना के शरीर से आ रही है।
सबको खिला-पिलाकर दोपहर में,

तुम महाभारत लेकर बैठोगी,
कमरे की खिड़की से पेड़ की छाया,
तुम्हारी पीठ और गोद में पड़ेगी।
मैं तुम्हारी पुस्तक पर आ झुलाऊँगा

अपनी नन्हीं-सी छाया
क्या तुम समझ सकोगी?
तुम्हारी आँखों में मुन्ना की छाया तैर रही है।
साँझ को दिया जलाकर,
जब तुम गाय की सार में जाओगी,
तब मैं फूल का यह खेल समाप्त करके,
टप से धरती पर टपक पड़ूँगा,
और फिर मैं तुम्हारा मुन्ना बन जाऊँगा।
तुम्हारे पास आकर कहूँगा, कहानी सुनाओ।
तुम पूछोगी, तू कहाँ गया था रे नटखट?
मैं कहूँगा, सो मैं नहीं बताऊँगा।

—रबींद्रनाथ टैगोर

2. श्रेय

व्यक्ति हो या वनस्पति, इनका अस्तित्व बड़ी गहराई से किसी अन्य से जुड़ा रहता है। जो इनको आधार देता है, यहाँ उसी की ओर संकेत किया गया है।

कहा किसी ने-पेड़, तुम इतने बड़े हो,
इतने कड़े हो,
न जाने कितने बरसों से,
आँधी-पानी में सीधे खड़े हो,
और हाँ, सिर ऊँचा किए,
अपनी जगह पर अड़े हो।

सूरज उदय होता है,
चाँद बढ़ता-घटता है, ऋतुएँ बदलती हैं,
बिजली गिरती है,

और तुम सब सहते हुए,
विनम्रता की हरियाली को ओढ़े,
लौह-स्तंभ की तरह खड़े हों,
अपनी जगह पर अड़े हो।

पेड़ काँप उठा,
अनहोनी को भाँप उठा,
पत्तियाँ चुप न रह सकीं,
सर्र-सर्र का शब्द गूँजा,

नहीं-नहीं झूठा श्रेय,
मुझे मत दो, मुझे मत दो,
मैं तो बार-बार झुका, गिरा,
डालियाँ टूटीं और मैं उखड़ा,
सूखा ठूँठ होकर कैसे उजड़ा।

श्रेय देना हो तो दो,
मेरे पैरों तले की मिट्टी को,
जिसने न जाने कैसे मेरी जड़ों को
अपनी गोद में सँभालकर रखा।

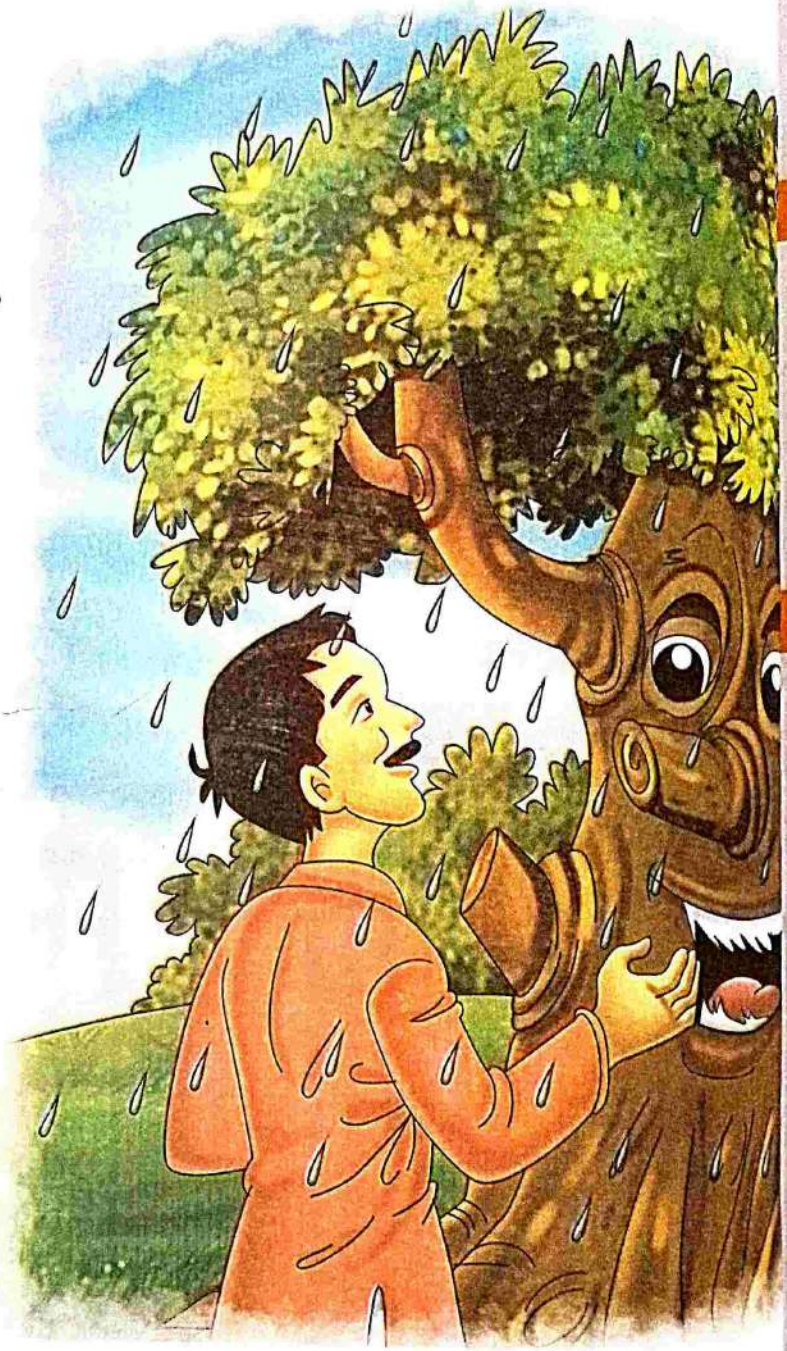

—अज्ञेय

अध्यापन संकेत स्पष्ट करें कि नई कविता शैली में लय का होना आवश्यक नहीं, केवल भाव ही इसमें प्रमुख होते हैं।

शब्दार्थ

श्रेय – महत्व; कठे – कठोर; बरसों – सालों; अड़े – स्थित; लौह-स्तंभ – लोहे का खंभा; अनहोनी – जो नहीं होना चाहिए; भाँप उठा – आभास हो गया; उखड़ा – ज़मीन से अलग हो जाना; उजड़ा – नष्ट होना; तले – नीचे।

अभ्यास

कविता से

मौखिक प्रश्न

(क) बच्चा क्या शरारत करना चाह रहा है?

(ख) मुन्ना कब चुपचाप हँसेगा?

(ग) पेड़ ने क्या लेने से इंकार किया?

(घ) पेड़ श्रेय किसे देना चाहता है?

लिखित प्रश्न

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए-

(क) 'लुका-छिपी' कविता के कवि हैं-

(अ) अज्ञेय ⬡ (ब) दिनकर ⬡

(स) कबीर ⬡ (द) रबींद्रनाथ टैगोर ⬡

(ख) किसी ने पेड़ से कहा-

(अ) तुम व्यर्थ हो ⬡ (ब) तुम कड़े हो ⬡

(स) तुम कायर हो ⬡ (द) तुम छोटे हो ⬡

(ग) मिट्टी ने सँभाली-

(अ) इमारत ⬡ (ब) धन-दौलत ⬡

(स) पेड़ की जड़ें ⬡ (द) सुख-सुविधा ⬡

(घ) मुन्ना कब अपना खेल समाप्त करेगा-

(अ) प्रातः ⬡ (ब) रात ⬡

(स) दोपहर ⬡ (द) साँझ ⬡

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) टप से धरती पर कौन टपकेगा?

(ख) मुन्ना से माँ क्या पूछेगी?

(ग) सबको खिला-पिलाकर माँ दोपहर में क्या करेगी?

(घ) मुन्ना माँ के पूछने पर क्या बताएगा?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) आशय स्पष्ट कीजिए-

'और तुम सब सहते हुए
विनम्रता की हरियाली को ओढ़े
लौह-स्तंभ की तरह खड़े हो
अपनी जगह पर अड़े हो।'

(ख) 'तब तुम्हें दूर से फूल की सुगंध आएगी,
लेकिन तुम यह समझ नहीं पाओगी
कि यह सुगंध तुम्हारे मुन्ना के शरीर से आ रही है।'

भाषा-ज्ञान

1. समानार्थी शब्दों को पढ़िए और याद कीजिए-

(क) सुगंध, खुशबू, महक।

(ख) माँ, माता, जननी।

(ग) धरती, पृथ्वी, भूमि।

(घ) फूल, पुष्प, सुमन।

2. वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

(क) लौह-स्तंभ _____

(ख) श्रेय _____

(ग) सर्र-सर्र _____

(घ) ढूँढ़ _____

3. 'अन' उपसर्ग लगाकर शब्द बना 'अनहोनी', इसी प्रकार दिए गए शब्द में 'अन' उपसर्ग लगाकर पुनः लिखिए-

(क) आवश्यक _____

(ख) बन _____

(ग) देखी _____

(घ) उपयोगी _____

रचना के क्षण

भाव-भूमि - आपने भी अपनी माँ के प्रति अनेक बार अनेक भाव किए होंगे। उनके बारे में अपनी कुछ भावनाएँ प्रकट कीजिए।

कल्पना व चिंतन

प्रायः जब कोई हमारी बढ़-चढ़कर प्रशंसा करता है, तो इसके पीछे उसके अनेक अभिप्रायः हो सकते हैं? वे क्या हो सकते हैं? कल्पना कीजिए व अनुमान लगाइए।

क्रिया-कलाप

रबींद्रनाथ टैगोर को विश्व का सर्वोच्च नोबेल पुरस्कार उनकी काव्य-रचना 'गीताजंलि' के लिए दिया गया है। पुस्तकालय से लाकर 'गीताजंलि' काव्य-रचना पढ़िए।

'अज्ञेय' या 'रबींद्रनाथ टैगोर' में से किसी एक की कोई अन्य कविता यहाँ लिखिए।

अध्याय

5. तुम कब जाओगे अतिथि?

मेहमान का आना कुछ समय के लिए ही सुखद होता है, किंतु जब वही मेहमान घर में लंबे समय तक रुक जाए, तो जीना कठिन होने लगता है। इन्हीं मनोभावों को यहाँ लेखक ने बड़ी कुशलता व हास्यपरक रीति से व्यक्त किया है–

हे अतिथि! आज तुम्हें पधारे हुए चार दिन हो गए हैं। मेरे विचलित मन में बार-बार यह प्रश्न उठ रहा है कि तुम कब स्वर्ग, मेरा मतलब है अपने स्वर्ग रूपी घर जाओगे। तुम मुझे मुक्ति कब दोगे मेरे प्रिय अतिथि?

तुम जिस सोफे पर टाँग पसारे बैठे हो, ठीक उसके सामने एक कैलेंडर लगा है जिसकी फड़फड़ाती तारीखें मैं तुम्हें रोज़ दिखाकर बदल रहा हूँ। यह मेहमान-नवाज़ी का चौथा दिन है, मगर तुम्हारे जाने की कोई संभावना नज़र नहीं आती।

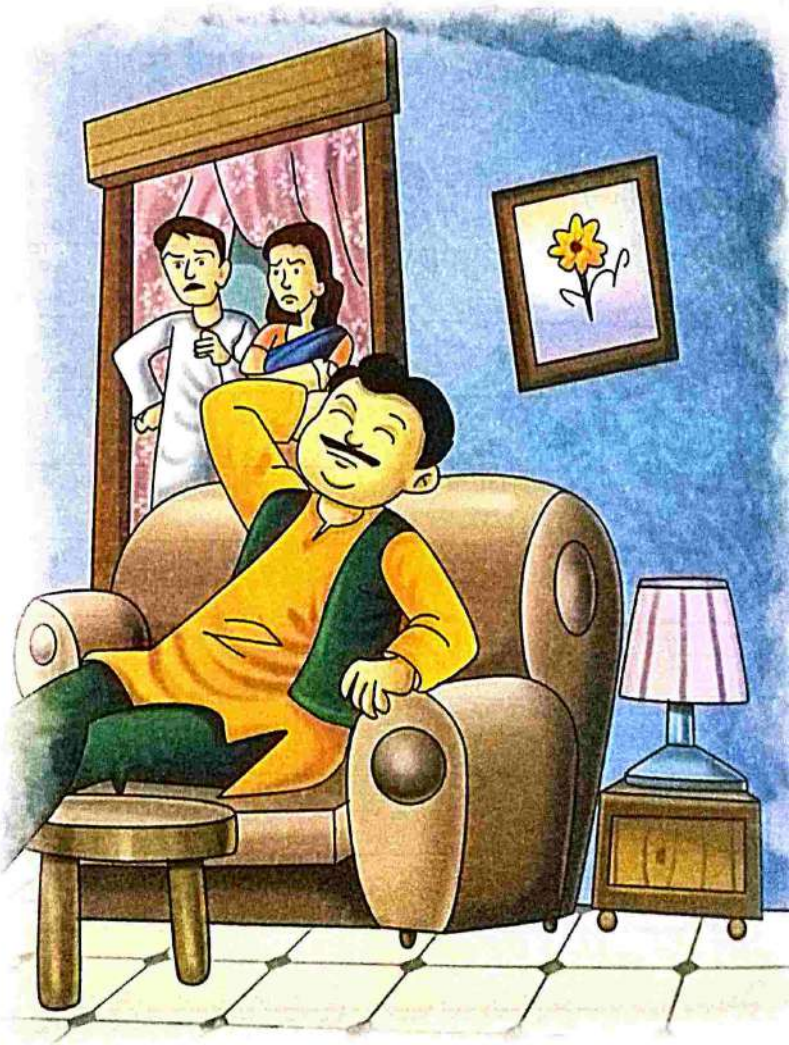

लाखों मील लंबी यात्रा करके एस्ट्रोनॉट्स भी इतना नहीं रुके, जितना तुम रुके। उन्होंने भी चाँद पर इतनी मिट्टी नहीं खोदी, जितनी तुम मेरी खोद चुके हो। क्या तुम्हें अपना घर याद नहीं आता? क्या तुम्हें अपनी मिट्टी नहीं पुकारती?

जिस दिन तुम आए थे, कहीं अंदर ही अंदर मेरा बटुआ काँप उठा था। फिर भी मैं मुस्कराता हुआ उठा और तुम्हारे गले मिला। मेरी पत्नी ने तुम्हें सादर नमस्ते की। तुम्हारी शान में, ओ मेहमान! हमने दोपहर के भोजन को लंच में बदलना और रात के खाने को डिनर में। हमने तुम्हारे लिए सलाद कटवाया, रायता बनवाया और मिठाइयाँ मँगवाईं, इस उम्मीद में कि दूसरे दिन शानदार मेहमाननवाज़ी की छाप लिए, तुम रेल के डिब्बे में बैठ जाओगे, मगर आज चौथा दिन है और तुम यहीं हो।

कल रात हमने खिचड़ी बनाई, फिर भी तुम यहीं हो। आज हम उपवास करेंगे और तुम यहीं हो। तुम्हारी उपस्थिति यों रबड़ की तरह खिंचेगी, हमने सोचा नहीं था।

परसों तुम आए और बोले, "लांड्री को कपड़े देने हैं।" मतलब? मतलब यह है कि जब तक कपड़े धुलकर नहीं आएँगे, तुम नहीं जाओगे? यह चोट मार्मिक थी, यह आघात अप्रत्याशित था।

मैंने पहली बार जाना कि अतिथि केवल देवता नहीं होता। वह मनुष्य और कई बार राक्षस भी हो सकता है। यह देख मेरी पत्नी की आँखें बड़ी-बड़ी हो गईं। तुम शायद नहीं जानते कि पत्नी की आँखें जब बड़ी-बड़ी होती हैं, तब मेरा दिल छोटा-छोटा होने लगता है।

कपड़े धुलकर आ गए और तुम यहीं हो। पलंग की चादर दो बार बदली जा चुकी है और तुम यहीं हो। अब इस कमरे के आकाश में ठहाकों के रंगीन गुब्बारे नहीं उड़ते। शब्दों का लेन-देन मिट गया। अब करने को कोई चर्चा नहीं रही। परिवार, बच्चे, नौकरी, राजनीति, रिश्तेदार, पुराने दोस्त, फिल्म, साहित्य, यहाँ तक कि हमने पुराने किस्सों का भी ज़िक्र कर लिया। सारे विषय खत्म हो गए। तुम्हारे प्रति मेरी प्रेम-भावना गाली में बदल रही है। मैं समझ नहीं पा रहा कि तुम कौन-सा फेवीकोल लगाकर मेरे घर आए हो।

पत्नी पूछती है, "कब तक रहेंगे?"

जवाब में कँधे उचका देता हूँ। जब वह प्रश्न पूछती है, तो मैं उत्तर नहीं दे पाता। जब मैं पूछता हूँ, तो वह चुप हो जाती है। तुम्हारा बिस्तर कब गोल होगा अतिथि?

मैं जानता हूँ कि तुम्हें मेरे घर में अच्छा लग रहा है। सबको दूसरों के घर में अच्छा लगता है। यदि लोगों का बस चलता, तो वह किसी और के घर ही रहते। लेकिन घर को सुंदर और होम को स्वीट होम इसलिए कहा गया है कि मेहमान अपने घर वापस लौट जाए।

मेरी रातों को अपने खर्राटों से गुँजाने के बाद अब चले जाओ मेरे दोस्त! देखो, शराफ़त की भी एक सीमा होती है और 'गेट आउट' भी एक वाक्य है, जो बोला जा सकता है। अतिथि! कल का सूरज तुम्हारे आगमन का चौथा सूरज होगा और वह मेरी सहनशीलता की अंतिम सुबह होगी। उसके बाद मैं लड़खड़ा जाऊँगा। यह सच है कि अतिथि होने के नाते तुम देवता हो, मगर मैं भी आखिर मनुष्य हूँ। एक मनुष्य ज़्यादा दिनों तक देवता के साथ नहीं रह सकता। देवता का काम है कि वह दर्शन दें और लौट जाएँ।

तुम लौट जाओ अतिथि! इससे पूर्व कि मैं गाली पर उतरूँ, तुम लौट जाओ।

उफ्! तुम कब जाओगे अतिथि।

—शरद जोशी

अध्यापन संकेत

बच्चों को बताएँ कि हमें कभी भी किसी के घर पर ज़्यादा दिनों तक मेहमान बनकर नहीं रहना चाहिए। इससे उसे बहुत असुविधा होती है।

शब्दार्थ

मेहमाननवाज़ी - अतिथि का स्वागत; संभावना - आशंका; एस्ट्रोनॉट्स - अंतरिक्षयात्री; बटुआ - पैसा रखने का छोटा थैला; सादर - आदर के साथ; लंच - दोपहर का भोजन; डिनर - रात का भोजन; आघात - चोट; अप्रत्याशित - जिसकी आशा न हो; अतिथि - मेहमान; देवता - भगवान; किस्से - लोककथा; मेज़बान - स्वागतकर्त्ता।

अभ्यास

पाठ से

मौखिक प्रश्न

(क) लेखक के घर अतिथि को आए हुए कितने दिन हो गए थे?

(ख) अतिथि के आने पर कौन काँप उठा था?

(ग) लेखक ने अतिथि के सत्कार हेतु क्या-क्या किया?

(घ) किस बात से लेखक को मार्मिक चोट लगी?

लिखित प्रश्न

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए–

(क) इस पाठ के लेखक हैं–

(अ) प्रेमचंद ⬡ (ब) शरद जोशी ⬡

(स) काका हाथरसी ⬡ (द) सुदर्शन ⬡

(ख) लेखक ने अतिथि के लिए कटवाया–

(अ) केक ⬡ (ब) फल ⬡

(स) सलाद ⬡ (द) गला ⬡

(ग) अतिथि ने अपने कपड़े धुलवाने को कहा–

(अ) नौकर से ⬡ (ब) गृहस्वामिनी से ⬡

(स) लांड्री से ⬡ (द) वाशिंग मशीन से ⬡

(घ) लेखक की अतिथि के प्रति प्रेम-भावना धीरे-धीरे बदलने लगी–

(अ) गाली में ⬡ (ब) नफ़रत में ⬡

(स) क्रोध में ⬡ (द) उदासी में ⬡

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) लेखक ने अतिथि के साथ किन-किन विषयों पर चर्चा कर ली थी?

(ख) लेखक के विचलित मन में बार-बार क्या प्रश्न उठ रहा था?

(ग) लेखक का दिल कब छोटा-छोटा होने लगता है?

(घ) घर को 'स्वीट होम' क्यों कहा जाता है?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

व्याख्या कीजिए-

'अतिथि कल का सूरज तुम्हारे आगमन का चौथा सूरज होगा और वह मेरी सहनशीलता की अंतिम सुबह होगी। उसके बाद मैं लड़खड़ा जाऊँगा। यह सच है कि अतिथि होने के कारण तुम देवता हो, पर मैं भी आखिर मनुष्य हूँ।'

भाषा-ज्ञान

1. सही शीर्षक के नीचे लिखिए—

एस्ट्रोनॉट, मेहमाननवाज़ी, बटुआ, खिचड़ी, फेवीकोल, कैलेंडर, संभावना, ज़िक्र, आघात, अप्रत्याशित, सादर, लंच, डिनर, किस्म, स्वीट होम, शराफ़त, खर्राटा, गेटआउट

हिंदी	_____	_____	_____	_____
अंग्रेज़ी	_____	_____	_____	_____
उर्दू	_____	_____	_____	_____
लोकभाषा	_____	_____	_____	_____

2. वाक्य बनाइए-

(क) दिल छोटा होना _____

(ख) टाँगें पसारना _____

(ग) छाप लगना _____

(घ) दर्शन देना _____

3. समानार्थी शब्दों को पढ़िए और याद कीजिए-

(क) विचलित, व्यग्र, बेचैन।

(ख) मेहमान, अतिथि, पाहुना।

(ग) प्रेम, प्यार, प्रीत।

(घ) सुबह, प्रातः, सवेरा।

रचना के क्षण

- भाव-भूमि – यदि कोई हृदय से आपको स्वीकार न करे तो क्या आप जबरन स्वयं को दूसरों पर थोपना पसंद करेंगे? अपने भाव व्यक्त कीजिए।

कल्पना व चिंतन

- किसी व्यक्ति को सामाजिकता और शिष्टाचार के नाम पर दबाना क्या मनुष्यता है? चिंतन-मनन कीजिए। यदि कोई अनचाहा व्यक्ति आपका मेहमान बनकर घर में आ जाए तो आप क्या करेंगे? कल्पना कीजिए।

क्रिया-कलाप

- कुछ अन्य हास्य-व्यंग्य ढूँढ़कर पढ़िए।
- यहाँ पर एक चुटकुला लिखिए।

अध्याय

6. मांडले जेल से (पत्र)

देश को स्वाधीन कराने के लिए अनेक देशभक्तों ने कारावास की यातनाएँ सहीं। यहाँ नेता जी सुभाष चंद्र बोस द्वारा कारागार से लिखा एक पत्र दिया जा रहा है, जिसमें उन्होंने देशभक्तों को दी जाने वाली यातनाओं को उजागर किया है।

मांडले सेंट्रल जेल, अपर बर्मा

20.08.1925

प्रिय श्री केलकर,

मैं गत कई महीनों से आपको लिखने की सोचता हूँ, जिसका कारण केवल यह रहा है कि मैं आप तक ऐसी जानकारी पहुँचा दूँ कि जिसमें आपको दिलचस्पी होगी। मैं नहीं जानता कि आपको मालूम है या नहीं कि मैं यहाँ गत जनवरी से कारावास में हूँ। जब बरहमपुर (बंगाल) जेल से मुझे मांडले जेल के लिए स्थानांतरण का आदेश मिला था, तब मुझे यह स्मरण नहीं आया था कि लोकमान्य तिलक ने अपने कारावास काल का अधिकांश भाग मांडले जेल में ही गुज़ारा था, जब तक मैं यहाँ सशरीर आ ही नहीं गया। चहारदीवारी में यहाँ के बहुत ही हतोत्साहित कर देने वाले परिवेश में स्वर्गीय लोकमान्य तिलक ने अपने सुप्रसिद्ध 'गीता-भाष्य' ग्रंथ का प्रणयन किया था, जिसने मेरी नम्र राय में उन्हें शंकर और रामानुज जैसे प्रकांड भाष्यकारों की श्रेणी में स्थापित कर दिया है।

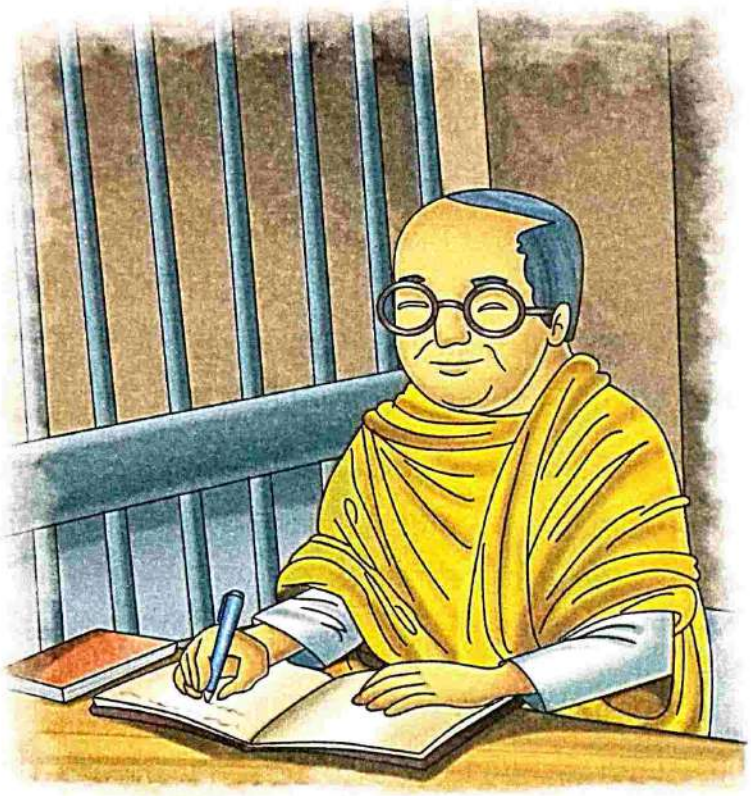

जिस वार्ड में लोकमान्य रहते थे, वह आज तक सुरक्षित है। यद्यपि उसमें फेरबदल किया गया है और बड़ा बनाया गया है। हमारे अपने वार्ड की तरह वह लकड़ी के तख्तों से बना है।

जिसमें गरमी में लू और धूप से, वर्षा में पानी, शीत में सर्दी से तथा सभी ऋतुओं में धूलभरी हवाओं से बचाव नहीं हो पाता। मेरे यहाँ पहुँचने के कुछ ही क्षण बाद मुझे उस वार्ड का परिचय दिया गया। मुझे यह बात अच्छी नहीं लग रही थी कि मुझे भारत से निष्कासित कर दिया गया। लेकिन मैंने भगवान को धन्यवाद दिया कि मांडले जेल में अपनी मातृभूमि और स्वदेश से बलात् अनुपस्थिति के बावजूद मुझे पवित्र स्मृतियाँ राहत और प्रेरणा देंगी। ऐसी ही अन्य जेलों की तरह यह एक ऐसा तीर्थस्थल है, जहाँ भारत का एक महानतम सपूत लगातार छह वर्ष तक रहा था।

हम जानते हैं कि लोकमान्य ने कारावास में छह वर्ष बिताए। लेकिन बहुत कम लोगों को यह पता होगा कि उस अवधि में उन्हें किस हद तक शारीरिक और मानसिक यातनाओं से गुज़रना पड़ा था। वे यहाँ एकदम अकेले रहे और उन्हें कोई बौद्धिक स्तर का साथी नहीं मिला। मुझे विश्वास है कि उन्हें किसी अन्य बंदी से मिलने-जुलने नहीं दिया जाता था। उनको सांत्वना देने वाली एकमात्र वस्तु किताबें थी और वे एक कमरे में एकदम एकाकी रहते थे।

यहाँ रहते हुए उन्हें दो या तीन भेंटों से अधिक का मौका नहीं दिया गया और ये भेंटें भी पुलिस और जेल अधिकारियों की उपस्थिति में हुई होंगी, जिससे वे कभी भी खुलकर और हार्दिकता से बात नहीं कर पाए होंगे।

उन तक कोई भी अखबार नहीं पहुँचने दिया जाता था। उनके जैसी प्रतिष्ठा और स्थिति वाले नेताओं को बाहरी दुनिया के घटनाचक्रों से एकदम अलग कर देना एक तरह की यंत्रणा ही है और इस यंत्रणा को जिसने भुगता है, वही जान सकता है। उनके कारावास की अधिकांश अवधि में देश का राजनीतिक जीवन मंदगति से खिसक रहा था और इस विचार ने उन्हें कोई संतोष नहीं दिया होगा कि जिस उद्देश्य को उन्होंने अपनाया था, वह उनकी अनुपस्थिति में आगे बढ़ रहा है।

उनकी शारीरिक यंत्रणा के विषय में जितना ही कम कहा जाए, बेहतर होगा। वे दंड संहिता के अंतर्गत बंदी थे और इस प्रकार आज के राजबंदियों की अपेक्षा कुछ मायनों में उनकी दिनचर्या कहीं अधिक कठोर रही होगी। जब लोकमान्य यहाँ थे, मांडले का मौसम तब भी प्रायः ऐसा रहा होगा जैसा वह आजकल है और अगर, आज नौजवानों को शिकायत है कि वहाँ की जलवायु शिथिल कर देने वाली और मंदाग्नि तथा गठिया को जन्म देने वाली है और धीरे-धीरे पर अटूट रूप से वह व्यक्ति की जीवन-शक्ति को सोख लेती है, तो लोकमान्य ने, जो वयोवृद्ध थे, कितना कष्ट झेला होगा।

लेकिन इस कारागार की चहारदीवारियों में उन्होंने यातनाएँ सहीं, इसके विषय में लोगों को बहुत कम जानकारी है। कितने लोगों को पता होता है उन अनेक छोटी-छोटी बातों का जो किसी बंदी जीवन में सुइयों की-सी चुभन बन जाती हैं और जीवन को दूभर बना देती हैं। वे गीता की भावना में मग्न थे और शायद इसीलिए दुख और यंत्रणाओं से ऊपर रहते थे। यही कारण है कि उन्होंने उनके बारे में किसी से कभी एक शब्द भी नहीं कहा।

समय-समय पर मैं सोच में डूबता रहा हूँ कि कैसे लोकमान्य को अपने बहुमूल्य इस जीवन के छह लंबे वर्ष इन परिस्थितियों में बिताने के लिए विवश होना पड़ा था और हर बार मैंने अपने आप से पूछा कि, "अगर नौजवानों को इतना कष्ट महसूस होता है, तो महान लोकमान्य को अपने समय में कितनी पीड़ा सहनी पड़ी होगी, जिसके

विषय में उनके देशवासियों को कुछ भी पता नहीं रहा होगा।'' यह विश्व भगवान की कृति है, लेकिन जेलें मानव के कृतित्व की निशानी हैं। उनकी अपनी एक अलग ही दुनिया है और सभ्य समाज ने जिन विचारों और संस्कारों को प्रतिबद्ध होकर स्वीकार किया है, वे जेलों में लागू नहीं होते। अपनी आत्मा के ह्रास के बिना बंदी-जीवन के प्रति अपने आपको अनुकूल बना पाना आसान काम नहीं है। इसके लिए हमें पिछली आदतें छोड़नी होती हैं और फिर भी स्वास्थ्य और स्फूर्ति बनाए रखनी होती है, सभी तरह के नियमों के आगे नत होना होता है और फिर भी आंतरिक प्रफुल्लता अक्षुण्ण रखनी होती है। दासवृत्ति ठुकरानी होती है और मानसिक संतुलन अडिग बनाए रखना होता है। केवल लोकमान्य जैसा दार्शनिक ही, जिसे अदम्य इच्छा शक्ति का वरदान मिला था, उस बंदी जीवन के शक्तिशाली हननकारी प्रभावों से बच सकता था और उस यंत्रणा और दासता के बीच मानसिक संतुलन बनाए रख सकता था और गीता-भाष्य जैसे विशाल एवं युग-निर्माणकारी ग्रंथ का प्रणयन कर सकता था।

अगर किसी को प्रत्यक्ष अनुभव पाना है कि इतने ज्यादा प्रतिकूल, शक्तिहारी और दुर्बल बना देने वाले वातावरण में लोकमान्य के गीता-भाष्य जैसे प्रकांड पांडित्यपूर्ण एवं महान ग्रंथ की रचना करने के लिए कितनी प्रबल इच्छाशक्ति, साधना की गहराई एवं सहनशीलता अपेक्षित है, तो जेल में आकर रहना चाहिए। जहाँ तक मेरी अपनी बात है, मैं जितना ही इस विषय में चिंतन करता हूँ, उतना ही ज्यादा मैं उनके प्रति आदर और श्रद्धा में डूब जाता हूँ। आशा करता हूँ कि मेरे देशवासी लोकमान्य महत्ता को आँकते हुए इन सभी तथ्यों को भी दृष्टिपथ में रखेंगे। जो महापुरुष मधुमेह से पीड़ित होने के बावजूद इतने कारावास को झेलता गया और फिर भी जिसने अपनी समस्त बौद्धिक क्षमता एवं शक्ति को अक्षुण्ण बनाए रखा और जिसने उन अंधकारमय दिनों में अपनी मातृभूमि के लिए ऐसी अमूल्य भेंट तैयार की, उसे विश्व के महापुरुषों की श्रेणी में प्रथम पंक्ति में स्थान मिलना चाहिए।

लेकिन लोकमान्य ने प्रकृति के जिन अटल नियमों से अपने बंदी जीवन के दौरान टक्कर ली थी, उनको अपना बदला लेना ही था, अगर मैं कहूँ तो मेरा विश्वास है कि जैसे देशबंधु के शरीरांत का क्रम अलीपुर केंद्रीय कारागार में आरंभ हो गया था, वैसे ही लोकमान्य ने जब मांडले को अंतिम नमस्कार किया था, तो उनके जीवन के दिन गिने-चुने ही रह गए। निस्संदेह यह एक गंभीर दुख का विषय है कि हम अपने महानतम पुरुषों को इस प्रकार खोते रहे। लेकिन मैं यह भी सोचता हूँ कि क्या वह दुखद दुर्भाग्य किसी प्रकार टाला नहीं जा सकता था।

आदरपूर्वक

आपका स्नेहभाजन

—सुभाष चंद्र बोस

अध्यापन संकेत

पाठ के माध्यम से स्वाधीनता के महत्व को प्रतिपादित करें और एकता की शक्ति के विषय में जागृति उत्पन्न करने का प्रयास करें।

शब्दार्थ

दिलचस्पी – शौक, चाव; हतोत्साहित – उत्साह कम करना; प्रणयन – निर्माण, रचना; प्रकांड – सर्वश्रेष्ठ, उत्तम; भाष्यकार – मूल ग्रंथ की व्याख्या लिखने वाला; बलात् – बलपूर्वक, जबरदस्ती; सांत्वना – तसल्ली; दंड संहिता – सज़ा देने वाले नियम; मंदाग्नि – पाचन शक्ति का कमज़ोर होना; प्रफुल्लता – अत्यधिक प्रसन्नता; अक्षुण्ण – अपराजित; अदम्य – जिसे दबाया न जा सके; दृष्टिपथ – नेत्र व्यापार का क्षेत्र; मधुमेह – पेशाब के साथ शक्कर आने का रोग; शरीरांत – मृत्यु, देहावसान।

अभ्यास

पाठ से

मौखिक प्रश्न

(क) यह पत्र किसने, कहाँ से और किसे लिखा है?

(ख) लोकमान्य तिलक को कितने वर्ष कारावास में बिताने पड़े थे?

(ग) जेल किसके कृतित्व की निशानी है?

(घ) जेल में तिलक जी को सांत्वना देने वाला कौन था?

लिखित प्रश्न

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए–

(क) लोकमान्य तिलक ने रचना की-

(अ) पुराण की ⬡ (ब) वेद की ⬡

(स) पंचतंत्र की ⬡ (द) गीता-भाष्य की ⬡

(ख) नेता जी ने तिलक जी के लिए व्यक्त की है-

(अ) श्रद्धा ⬡ (ब) सिफ़ारिश ⬡

(स) प्रार्थना ⬡ (द) ईर्ष्या ⬡

(ग) नेता जी ने दुख का विषय बताया है-

(अ) निर्धनता को ⬡ (ब) महापुरुषों को खोना ⬡

(स) अशिक्षा को ⬡ (द) हिंसा को ⬡

(घ) मांडले जेल की जलवायु थी-

(अ) मंदाग्नि और शीत (ब) उष्ण

(स) गठिया देने वाली (द) नम

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) कहाँ का परिवेश हतोत्साहित कर देने वाला था?

(ख) नेता जी को कहाँ से निष्कासित कर दिया गया था?

(ग) 'मातृभूमि के लिए तिलक की अमूल्य भेंट' नेता जी ने किसे कहा है?

(घ) लोकमान्य तिलक किस बीमारी से पीड़ित होते हुए भी कारावास के कठोर नियमों में रहे?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) नेता जी के अनुसार बंदी जीवन में अपनी आत्मा का ह्रास किए बिना रहने के लिए क्या-क्या आदतें अपनानी होती हैं?

(ख) तिलक जी किसके सहारे जेल के दुख और यंत्रणाओं को झेल गए?

भाषा ज्ञान

1. समास-विग्रह करके समास का नाम लिखिए-

(क) देशबंधु – _____ _____

(ख) पांडित्यपूर्ण – _____ _____

(ग) मंदाग्नि – _____ _____

(घ) निर्माणकारी – _____ _____

(ङ) दृष्टिपथ – _____ _____

. दिए गए श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्दों को वाक्यों में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि इनके अर्थ स्पष्ट हो जाएँ-

(क) अनल – _____

अनिल – _____

(ख) दिन – _____

दीन – _____

(ग) व्रत – _____

वृत्त – _____

(घ) कपट – _____

कपाट – _____

3. समझकर लिखिए (विशेषण शब्दों की तुलनात्मक अवस्थाएँ)-

लघु	लघुतर	लघुतम
(क) शीघ्र	_____	_____
(ख) निम्न	_____	_____
(ग) महान	_____	_____
(घ) मधुर	_____	_____
(ङ) दृढ़	_____	_____

रचना के क्षण

- भाव-भूमि – निर्दोष व्यक्ति को जेल में बंद कर देना क्या मानवीय मूल्यों को नष्ट नहीं कर देता? अपने भाव व्यक्त कीजिए।

कल्पना व चिंतन

- कल्पना कीजिए कि यदि सभी व्यक्ति न्याय और धर्म पर चलते, तो यह दुनिया कैसी होती। क्या जेलों का होना सभ्य समाज के लिए अनिवार्य है?

क्रिया-कलाप

- पता लगाइए कि देश की स्वाधीनता के लिए देशभक्तों ने कब-कब कहाँ-कहाँ कारावास की यातनाएँ भुगतीं।
- 'देश की रक्षा हेतु हमारा दायित्व' इस विषय पर एक वार्ता आयोजित कीजिए और उसमें भाग लीजिए।

पठन हेतु

शहीद का संदेश (पत्र)

बलिदान से एक दिन पहले कैदी साथियों को लिखा गया शहीद भगत सिंह का अंतिम पत्र

दिल्ली, जेल

22 मार्च, 1931

साथियो!

स्वाभाविक है कि जीने की इच्छा मुझमें भी होनी चाहिए, मैं इसे छिपाना नहीं चाहता, लेकिन मैं एक शर्त पर ज़िंदा रह सकता हूँ कि मैं कैद होकर या पाबंद होकर जीना नहीं चाहता।

मेरा नाम हिंदुस्तानी क्रांति का प्रतीक बन चुका है और क्रांतिकारी दल के आदर्शों और कुर्बानियों ने मुझे बहुत ऊँचा उठा दिया है—इतना ऊँचा कि जीवित रहने की स्थिति में इससे ऊँचा मैं हरगिज़ नहीं हो सकता।

आज मेरी कमज़ोरियाँ जनता के सामने नहीं हैं। अगर मैं फाँसी से बच गया, तो वे ज़ाहिर हो जाएँगी और क्रांति का प्रतीक चिह्न मद्धिम पड़ जाएगा या संभवत: मिट ही जाएगा, लेकिन दिलेराना ढंग से हँसते-हँसते मेरे फाँसी चढ़ने की सूरत में हिंदुस्तानी माताएँ अपने बच्चों को भगत सिंह बनाने की आरज़ू किया करेंगी और देश की आज़ादी के लिए कुर्बानी देने वालों की तादाद इतनी बढ़ जाएगी कि क्रांति को रोकना साम्राज्यवाद या तमाम शैतानी शक्तियों के बूते की बात नहीं रहेगी।

हाँ, एक विचार मेरे भी मन में आता है कि देश और मानवता के लिए जो कुछ करने की हसरतें मेरे दिल में थीं, उनका हज़ारवाँ भाग भी पूरा नहीं कर सका। अगर स्वतंत्र, ज़िंदा रह सकता, तब शायद इन्हें पूरा करने का अवसर मिलता और मैं अपनी हसरत पूरी कर सकता। इसके सिवा मेरे मन में कभी फाँसी से बचने को कोई लालच नहीं आया। मुझसे अधिक सौभाग्यशाली कौन होगा? आजकल मुझे स्वयं पर बहुत गर्व है; अब तो बड़ी बेताबी से अंतिम परीक्षा का इंतज़ार है। कामना है कि यह और नज़दीक हो जाए।

आपका साथी

—भगत सिंह

पठन हेतु

साथी हाथ बढ़ाना (गीत)

साथी हाथ बढ़ाना
एक अकेला थक जाएगा,
मिलकर बोझ उठाना
साथी हाथ बढ़ाना।

हम मेहनत वालों ने जब भी,
मिलकर कदम बढ़ाया।
सागर ने रस्ता छोड़ा,
परबत ने सीस झुकाया।
फ़ौलादी हैं सीने अपने,
फ़ौलादी हैं बाँहें
हम चाहें तो पैदा कर दें,
चट्टानों में राहें।
साथी हाथ बढ़ाना।

मेहनत अपने लेख की रेखा,
मेहनत से क्या डरना
कल गैरों की खातिर की,
अब अपनी खातिर करना।
अपना दुख भी एक है साथी,
अपना सुख भी एक।
अपनी मंजिल सबकी मंजिल,
अपना रस्ता नेक।
साथी हाथ बढ़ाना।

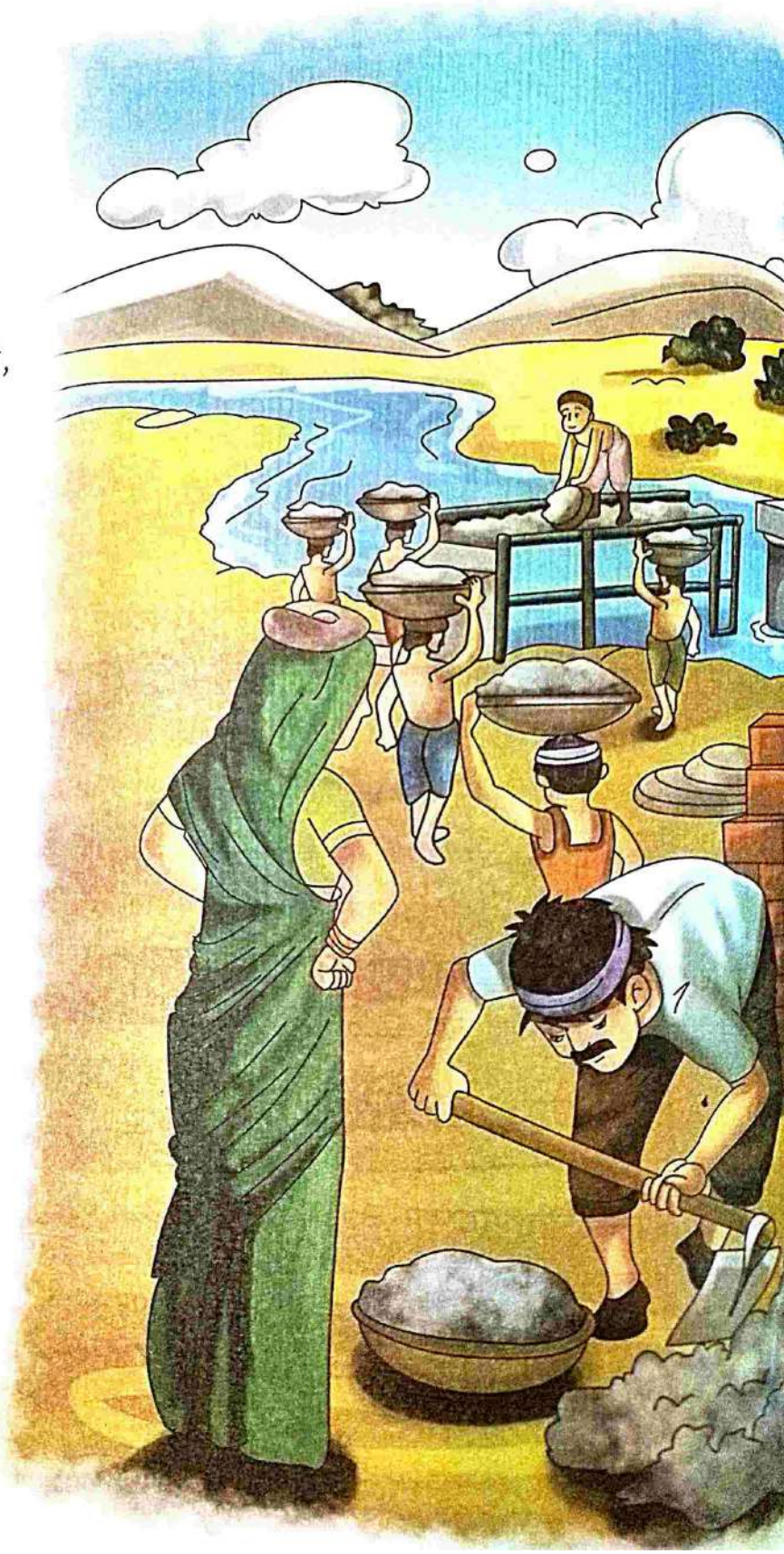

अध्याय

7.
माँ, कह एक कहानी

राजकुमार सिद्धार्थ ने संसार की पीड़ाओं से छुटकारा पाने के लिए राजमहलों को छोड़कर वनों की राह ली। यहाँ उनकी पत्नी यशोधरा, इनके पुत्र राहुल को उसके पिता के जीवन की एक घटना सुना रही है।

"माँ, कह एक कहानी,
राजा था या रानी,
माँ, कह एक कहानी।"

"तू है हठी मानधन मेरे,
सुन उपवन में बड़े सवेरे,
तात भ्रमण करते थे तेरे,
जहाँ सुरभि मनमानी।"

"जहाँ सुरभि मनमानी,
हाँ माँ! यही कहानी।"

"वर्ण-वर्ण के फूल खिले थे,
झलमल कर हिम-बिंदु मिले थे,
हलके झोंके हिले-मिले थे,
लहराता था पानी।"

"लहराता था पानी,
हाँ-हाँ! यही कहानी।"

"गाते थे खग सुमधुर स्वर में,
सहसा एक हंस ऊपर से,
गिरा बिद्ध होकर खर शर से,
हुई पक्षी की हानि।"

"हुई पक्षी की हानि,
करुणा भरी कहानी।"

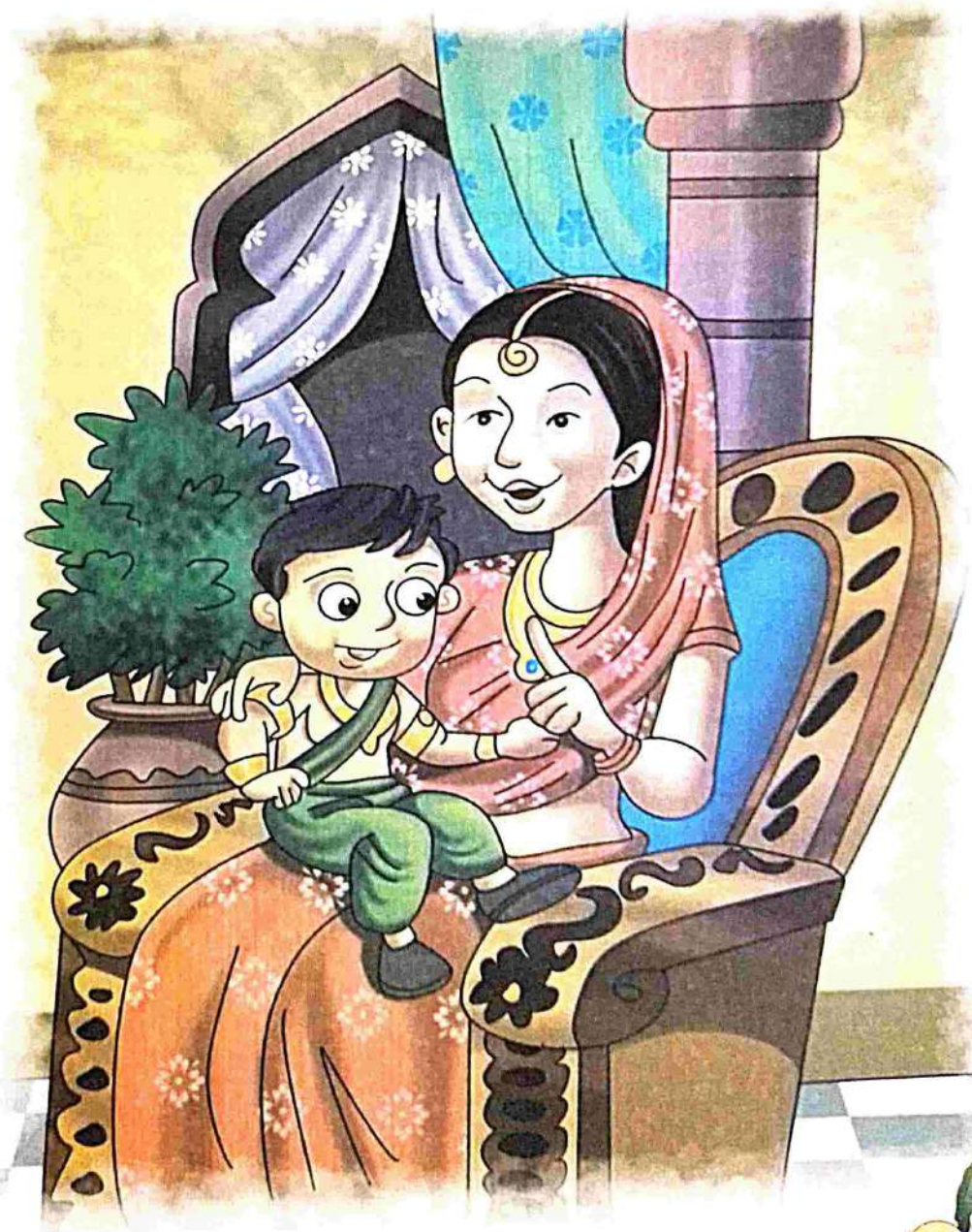

"चौंक उन्होंने उसे उठाया,
नया जन्म-सा उसने पाया,
इतने में आखेटक आया,
लक्ष्य सिद्धि का मानी।"

"लक्ष्य सिद्धि का मानी,
कोमल कठिन कहानी।"

"माँगा उसने आहत पक्षी,
तेरे तात किंतु थे रक्षी,
तब उसने जो था खगभक्षी,
हठ करने की ठानी।"

"हठ करने की ठानी,
अब बढ़ चली कहानी।"

"हुआ विवाद सदय-निर्दय में
उभय आग्रही थे स्व-विषय में,
गई बात तब न्यायालय में,
सुनी सभी ने जानी।"

"सुनी सभी ने जानी,
व्यापक हुई कहानी।"

"राहुल तू निर्णय कर इसका,
न्याय पक्ष लेता है किसका?
कह दे निर्भय, जय हो जिसका,
सुन लूँ तेरी बानी।"

"माँ मेरी क्या बानी?
मैं सुन रहा कहानी।
कोई निरपराध को मारे,
तो क्या अन्य उसे न उबारे?
रक्षक पर भक्षक को वारे,
न्याय दया का दानी।"

"न्याय दया का दानी
तूने गुनी कहानी।"

—श्री मैथिलीशरण गुप्त

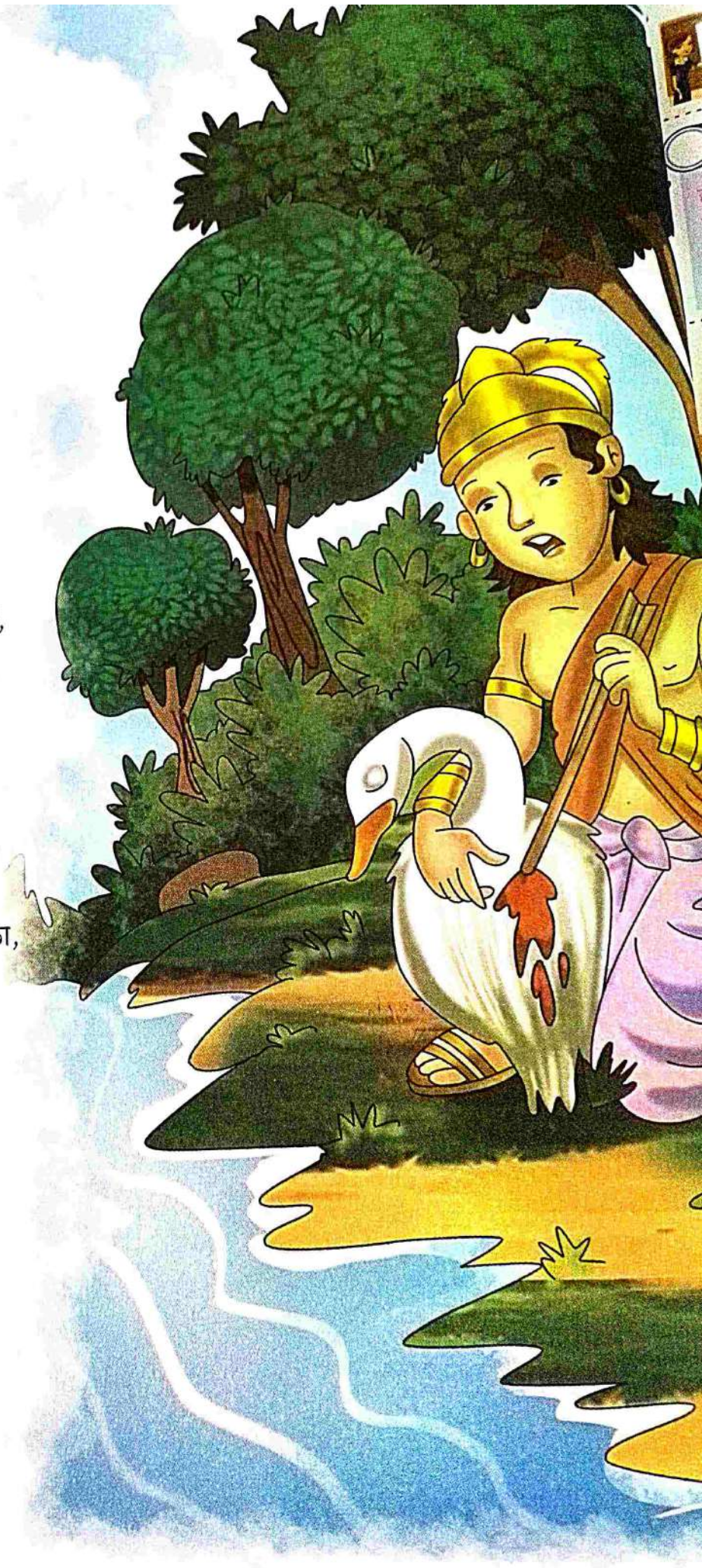

अध्यापन संकेत

अध्यापक बच्चों को बताएँ कि हमें कभी भी किसी जीव-जंतु को सताना नहीं चाहिए।

शब्दार्थ

हठी – जिद्दी; उपवन – बगीचा; भ्रमण – घूमना; सुरभि – खुशबू; वर्ण – रंग; हिम – बिंदु-ओस के कण; खग – पक्षी; सुमधुर स्वर – मीठे स्वर; बिद्ध – बिंधकर; खर – तेज़ धार वाला; शर – बाण; आखेटक – शिकारी; सिद्धि – सफलता; आहत – घायल; तात – पिता; रक्षी – रक्षक; विवाद – झगड़ा; सद – दयावान; उभय – दोनों; आग्रही – आग्रह करने वाला; व्यापक – फैला हुआ; निर्णय – फ़ैसला; निर्भय – बिना डरे; निरपराध – निर्दोष; उबारे – बचाए; गुनी – महत्व समझा।

अभ्यास

कविता से

मौखिक प्रश्न

(क) राहुल माँ से क्या कहने का अनुरोध कर रहा है?

(ख) प्रातः सिद्धार्थ कहाँ घूम रहे थे?

(ग) सिद्धार्थ के ऊपर अचानक क्या गिरा?

(घ) आखेटक ने सिद्धार्थ से क्या माँगा?

लिखित प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए–

(क) यशोधरा ने राहुल को हठी कहा-

(अ) लाड़ से

(ब) क्रोध से

(स) आवेश में

(द) दुखी होकर

(ख) उपवन में सिद्धार्थ कर रहे थे-

(अ) व्यायाम

(ब) भ्रमण

(स) मनोरंजन

(द) विश्राम

(ग) आखेटक और सिद्धार्थ के बीच हुआ-

(अ) युद्ध

(ब) बैर

(स) विवाद

(द) हिंसा

(घ) राहुल ने बड़ा माना-

(अ) रक्षक को

(ब) भक्षक को

(स) माता को

(द) राजा को

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) माँ ने राहुल को किसकी कहानी सुनाई?

(ख) उपवन में कैसा वातावरण था?

(ग) कौन सी कहानी को करुणा भरी कहा है?

(घ) आखेटक को किस बात का अभिमान था?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) राहुल ने अपने निर्णय के पक्ष में क्या तर्क दिया? क्या आप इससे सहमत हैं?

(ख) **व्याख्या कीजिए—**

'हुआ विवाद सदय-निर्दय में
उभय आग्रही थे स्व-विषय में,
गई बात तब न्यायालय में
सुनी सभी ने जानी।

भाषा-ज्ञान

1. तुक मिलाइए-

(क) रानी _____

(ख) स्वर _____

(ग) सवेरे _____

(घ) उठाया _____

(ङ) खिले _____

(च) पक्षी _____

2. समान अर्थ वाले शब्दों को पढ़िए और याद कीजिए-

(क) सहसा, अचानक, अकस्मात।

(ख) स्वर, आवाज, ध्वनि।

(ग) पक्षी, खग, विहग।

(घ) दया, करुणा, रहम।

3. निम्नलिखित शब्दों में मूल शब्द और प्रत्यय अलग-अलग करके लिखिए-

शब्द		मूल शब्द	प्रत्यय
(क) देवत्व	=	देव	
(ख) आलोकित	=		
(ग) उच्चतम	=		
(घ) आश्चर्यजनक	=		
(ङ) इंसानियत	=		

रचना के क्षण

भाव-भूमि– क्या आपके मन में भी किसी स्थिति या दृश्य को देखकर करुणा के भाव जाग्रत हुए हैं? यदि हाँ, तो उसका वर्णन कीजिए।

कल्पना व चिंतन

विचार कीजिए कि व्यक्ति अपने प्रति कोमल व दूसरों के प्रति कठोर व्यवहार क्यों करता है? क्या कठोरता करने वाला किसी को प्रिय हो सकता है? अपने विचार प्रकट कीजिए।

क्रिया-कलाप

महात्मा बुद्ध का जीवन चरित्र ढूँढ़कर पढ़िए।

बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार विश्व के किन-किन देशों में हुआ है? पता लगाकर उल्लेख कीजिए।

अध्याय

8.

बिना हाड़-मांस के आदमी

आजकल मनुष्य यंत्रों का इतना आदी हो गया है कि उसकी भावनाएँ और संवेदनाएँ मर-सी चली हैं। इसी भयावह स्थिति की चरम कल्पना करते हुए लेखक ने एक कल्पना कथा प्रस्तुत की है।

लोगों ने अखबारों में समाचार पढ़ा, तो किसी को उस पर विश्वास नहीं हुआ। समाचार था कि एक देश के वैज्ञानिकों ने ऐसे मशीनी आदमी का आविष्कार कर लिया है, जो आम आदमी से सौ गुना ज़्यादा सोच सकता है और सौ गुना ज़्यादा तेज़ी से अपनी सोच के अनुसार काम कर सकता है। इस समाचार से पैदा हुई हलचल अभी समाप्त नहीं हुई थी कि दूसरा समाचार आया। वह यह कि मशीनी विचारक रातोंरात अपने कमरे की खिड़की तोड़कर और न जाने कैसे चौथी मंजिल से नीचे कूदकर लापता हो गया।

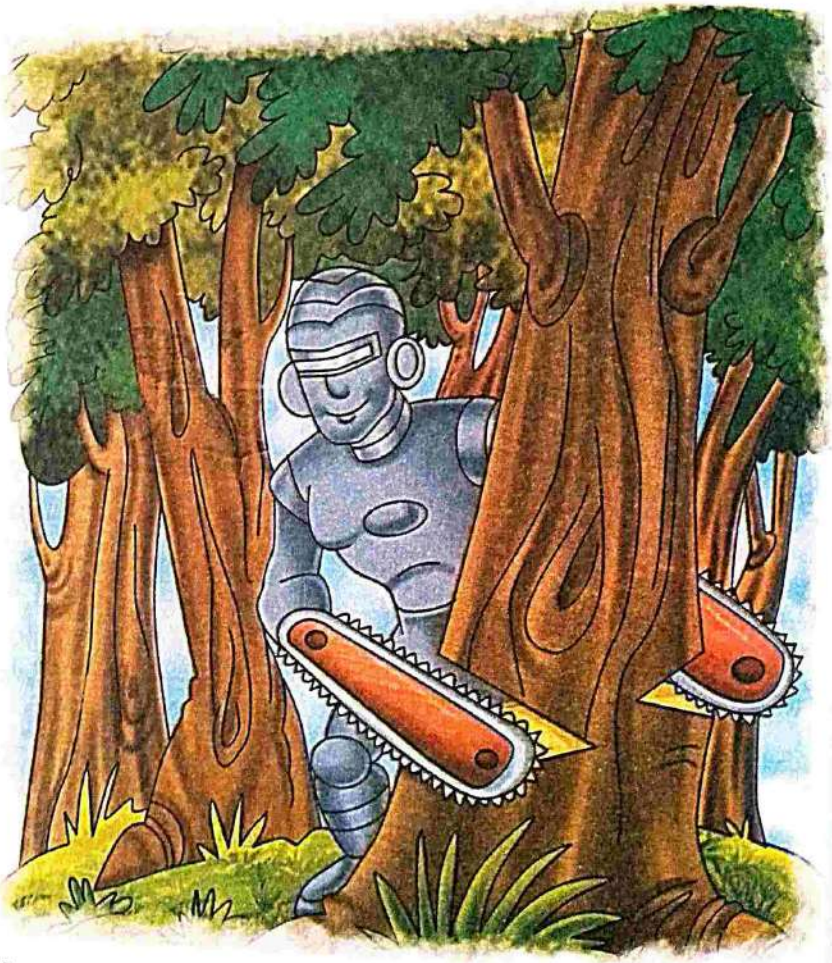

चारों तरफ़ हलचल मच गई। पुलिस की गाड़ियाँ दौड़ाई गईं। जगह-जगह टेलीफोन किए गए। रेडियो और टेलीविजन से घोषणाएँ की गईं। उसे पकड़ने के लिए एक बड़ा-सा पुरस्कार भी रखा गया। पर मशीनी विचारक एक बार जो चौमंजिले से कूदकर गायब हुआ, तो फिर किसी के हाथ नहीं आया। न ही यह पता चला कि दुनिया भर की आँखों में धूल झोंककर आखिर वह चला कहाँ गया। किसी शहर-गाँव, पहाड़-जंगल या नदी-नाले में उसका पता नहीं चला। कई दिनों की दौड़-धूप के बाद लोग थककर बैठ गए। उसके गुम होने के बारे में कई तरह के अंदाज़ लगाए गए। किसी का ख्याल था कि आम आदमी से सौ गुना ज़्यादा तेज़ी से सोचने की वजह से उसका दिमाग फट गया होगा और वह समुद्र या रेगिस्तान में कहीं पुर्ज़ा-पुर्ज़ा होकर गिर गया होगा। किसी का

कहना था कि अपने तेज़ दिमाग से उसने यहाँ से किसी और ग्रह-नक्षत्र पर जाने का तरीका सोच लिया होगा। वह वहीं चला गया होगा। जिन वैज्ञानिकों ने उसका आविष्कार किया था, वे अब सिर धुन रहे थे क्योंकि उसके बाद वैसा ही अगला आदमी बनाने के उनके आले वगैरह भी वह अपने साथ उड़ा ले गया था।

एक साल, दो साल, चार साल बीत गए। लोग उस बात को लगभग भूल गए। वैज्ञानिकों ने उसके बाद वैसा आदमी बनाने की कोशिश नहीं की। उन्हें डर था कि पहले आदमी ने ही जब ऐसा करतब दिखाया है, तो दूसरा जाने क्या गजब ढाएगा।

उसके बाद शायद कभी उसकी बात भी न होती, अगर बीच समुद्र के एक टापू में एक माहीगीर की उससे मुलाकात न हो जाती।

वह माहीगीर समुद्र में मछली पकड़ने निकला था। इससे पहले कि वह एक भी पछली पकड़ पाता, उसकी नाव तूफ़ान में फँसकर उसे उस टापू की तरफ़ ले गई। टापू के किनारे पहुँचकर वह नाव को वहाँ बाँधने लगा, तो अपने आस-पास देखकर उसे बहुत हैरानी हुई। कितने ही लोग वहाँ पेड़ चीर रहे थे, या रुई धुन रहे थे। कुछ ऐसे भी थे, जो चिरी हुई लकड़ियों को आग लगाकर कोयला बना रहे थे। पर वे सब आम आदमियों से बिल्कुल अलग तरह के थे। आपस में भी एक गिरोह के लोग दूसरे गिरोह से मेल नहीं खाते थे। जो लकड़ी चीर रहे थे, वे खुद भी लकड़ी के बने लगते थे और उनकी बाँहों के आगे हाथों की जगह आरियाँ लगी थीं। जो लोहा खोद रहे थे, उनके जिस्म कच्चे लोहे के थे। हाथों की जगह कुदालियाँ थीं और वे चलते थे, तो लगता था, जैसे कवायद कर रहे हों। इसी तरह रुई धुनने वाले आदमी रुई के बने थे। हाथ-पैर और नाक-कान कच्ची कपास के थे और गले के नीचे का धड़ का हिस्सा धुनकी की शक्ल का था। जो लकड़ियों को जलाकर कोयला बना रहे थे, वे सिर

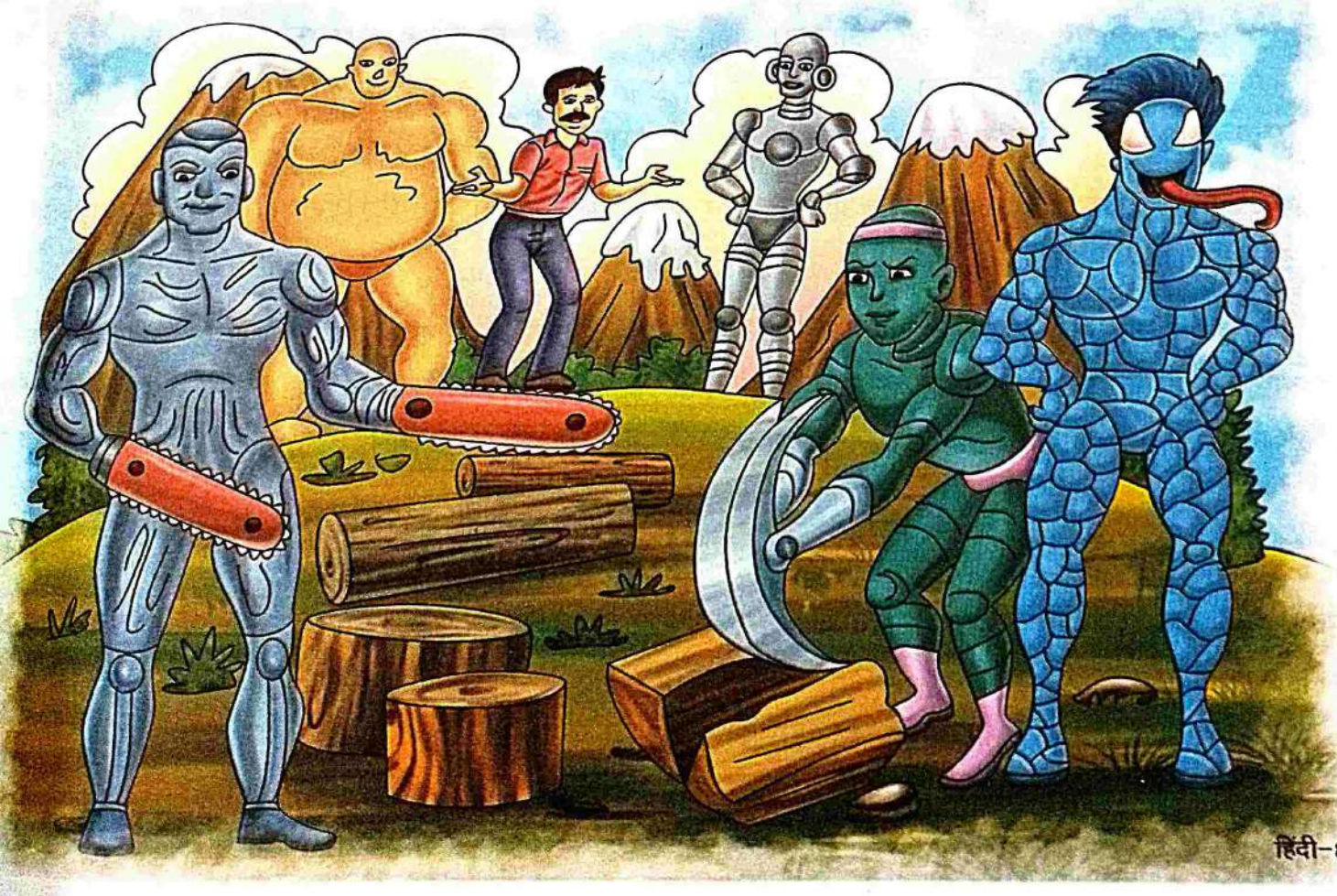

से पैर तक खुद भी कोयला ही थे। उनके हाथ-पैरों से लपटें निकली थीं और आँखें जलते अंगारों की सी थीं। माहीगीर पहले तो उन्हें देखकर डरा। पर जब उनमें से किसी ने न तो उसकी तरफ़ देखा और न ही उससे कुछ कहा, तो उसका डर धीरे-धीरे जाता रहा।

उसे भूख लगी थी, इसलिए वह नाव को किनारे पर छोड़कर टापू में इधर-उधर घूमने लगा। पर उसे न तो कोई ऐसा पेड़ नज़र आया, जिस पर फल लगे हों और न ही एक भी जानवर दिखाई दिया, जिसका कि वह शिकार कर सके। जब भूख के मारे उसका बुरा हाल होने लगा, तो उसने सोचा कि बेहतर यही है कि अपनी नाव लेकर फिर से समुद्र में चला जाए और वहीं पर कोई मछली वगैरह पकड़ने की कोशिश करे। उस टापू पर भूखा मरने से अच्छा है कि तूफ़ान से जूझकर जिस किसी तरह से भी अपना पेट तो भर ले।

जब वह किनारे की तरफ़ लौटने लगा, तो अचानक उसकी मुलाकात मशीनी विचारक से हो गई थी। विचारक उस समय बहुत-सी घास और मिट्टी हाथ में लिए उनसे एक पुतला गढ़ रहा था। माहीगीर को लौटते देखा, तो वह हँसता हुआ उसके सामने आ गया।

"तुम मुझे पहचानते हो?" उसने माहीगीर से पूछा।

माहीगीर ने अखबारों में उसकी तस्वीरें देखी थीं, फिर भी वह तुरंत उसे नहीं पहचान सका। कुछ देर तक वह हक्का-बक्का सा उसकी तरफ़ देखता रहा। फिर बोला, तुम ..... तुम वही हो जिसके लिए .....।"

"जिसके लिए चार साल से तुम्हारे लोग परेशान हैं," विचारक ने उसकी बात पूरी कर दी, "वे लोग चार साल से मेरा पता तक नहीं लगा पाए, जबकि मैंने इस अरसे में एक नई दुनिया ईज़ाद कर ली है। तुमने देखी है मेरी दुनिया? इस दुनिया में कोई किसी चीज़ के लिए किसी का मोहताज़ नहीं है। हर आदमी अपनी जगह अपने में पूरा है, दूसरों से अलग, अकेला और आज़ाद। यहाँ न किसी को तुम लोगों की तरह भूख लगती है, न काम करके पसीना आता है। न किसी को नींद सताती है, न समुद्र और तूफ़ान से डर लगता है। हर आदमी हर वक्त काम करता रहता है और अपनी तरह काम करने वाले नए-नए आदमी तैयार करता रहता है।"

माहीगीर उसकी बात से बहुत प्रभावित हुआ, पर और कुछ भी कहने से पहले उसने पूछ लिया, "यहाँ कुछ खाने को मिल सकता है?"

विचारक इस पर और भी हँसा। बोला, "यह दुनिया तुम्हारी दुनिया की तरह भूख और ठंड से सताए जाने वाले लोगों की नहीं है जो कि खाने और कपड़े बगैर जी ही न सकें। खाना, पीना, ठिठुरना, साँस लेना, ये सब पुरानी बातें हैं, जिन्हें यहाँ कोई नहीं जानता," कहते हुए उसने माहीगीर की बाँह थाम ली और पलभर में ही वे वहाँ से काफ़ी दूर एक खुले मैदान में पहुँच गए।

वहाँ आकर माहीगीर की आँखें फटी-सी रह गईं। उसने देखा कि मैदान में चारों तरफ़ लोहे-लकड़ी और रुई कोयले के आदमी ढेरों के ढेर पड़े हैं। उनकी तरफ़ इशारा करते विचारक ने कहा, "देख रहे हो इन्हें? यह इतनी बड़ी जनसंख्या में तुम्हारी दुनिया में बसाने के लिए तैयार कर रहा हूँ। आठ-दस साल में मेरे पास इतने आदमी तैयार हो जाएँगे कि तुम्हारी पूरी दुनिया का कामकाज सँभाल लेंगे। उसके बाद दुनिया को रोटी-पानी और साँस के सहारे जीने वालों की कोई ज़रूरत ही नहीं रह जाएगी।"

माहीगीर का पहले ही भूख के मारे बुरा हाल था, इस बात को सुनकर और आस-पास के ढेरों को देखकर, गला भी खुश्क हो गया। "इन लकड़ी-कोयले के आदमियों को दुनिया में बसाकर तुम क्या करोगे?" उसने किसी तरह पूछा।

"तब मैं दुनिया को अपने ढंग से चलाऊँगा," विचारक बोला, "अब दुनिया में न आज की तरह रोना-धोना रहेगा, न चीखना-चिल्लाना। ये लोग आपस में जिएँगे और अपना काम करेंगे, बस!"

माहीगीर ने उस तरह की दुनिया की कल्पना की, तो उसके शरीर में सिहरन दौड़ गई। उसे न जाने क्यों अपने बच्चे का ध्यान हो आया। खुश्क गले से उसने पूछ लिया, "तब हमारे बच्चे क्या करेंगे?"

"तुम्हारे बच्चे उन्हें काम करते देखेंगे, तो खुश होंगे", विचारक बोला।

माहीगीर के मन में अचानक एक बात आई, जिसे सोचकर उसका चेहरा खिल गया। "तुम्हारे इन आदमियों के तो बच्चे नहीं होंगे? उसने पूछा।

"नहीं" विचारक ने सिर हिलाया, "इन्हें बच्चों-वच्चों की ज़रूरत ही नहीं पड़ेगी। दुलार-प्यार जैसी चीज़ों के लिए न इनके पास वक्त होगा, और न ही उनसे इनका कोई वास्ता रहेगा। ये बस जिएँगे और काम करेंगे, काम करेंगे और जिएँगे।"

माहीगीर को इस बात से इतनी खुशी हुई कि वह ठहाका लगाकर हँस दिया। हँसता हुआ किनारे की तरफ भाग खड़ा हुआ।

"तुम्हारी दुनिया नहीं चलती," उसने भागते हुए कहा, "जिस दुनिया में बच्चे नहीं होंगे, दुलार-प्यार नहीं होगा, वह दुनिया कभी नहीं चलेगी, एक दिन भी नहीं चलेगी।"

उसे डर था कि विचारक उसका पीछा करेगा। पर उसने घूमकर पीछे देखा, तो विचारक ठगा-सा अपनी जगह पर खड़ा था। माहीगीर ने किनारे पर आकर जल्दी से अपनी नाव खोली और उसे तूफ़ानी पानी में खेना शुरू कर दिया। जब वह काफ़ी आगे निकल आया, तो अचानक तेज़ आग की लपटों ने उसे चौंका दिया। उसने देखा कि उसके पीछे सारा टापू धू-धू करके जल रहा है। लोहे, लकड़ी और रुई के आदमी जलकर राख हुए जा रहे हैं। जो आदमी दोनों हाथों में जलती टहनियाँ लिए पागलों की तरह टापू में चारों तरफ़ आग लगा रहा था, वह खुद विचारक ही था।

—मोहन राकेश

अध्यापन संकेत

बच्चों को बताएँ कि हमें कभी भी मशीनों पर अत्यधिक निर्भर नहीं रहना चाहिए, वरना हमें भविष्य में बहुत परेशानी हो सकती है।

शब्दार्थ

आँखों में धूल झोंकना – धोखा देना; सिर धुनना – झल्लाना; अरसे से – काफ़ी समय से, अवधि में; ईज़ाद – आविष्कार; माहीगीर – मछली पकड़ने वाला; जिस्म – शरीर; आँखें फटी-सी रह जाना – हैरान हो जाना; खुश्क – सूखा।

अभ्यास

पाठ से

मौखिक प्रश्न

(क) किस खबर पर लोगों को विश्वास नहीं हुआ?

(ख) मशीनी विचारक को ढूँढ़ने के क्या-क्या प्रयास किए गए?

(ग) मशीनी विचारक को बनाने वाले वैज्ञानिक क्यों सिर धुन रहे थे?

(घ) वैज्ञानिकों ने दूसरा मशीनी आदमी बनाने की कोशिश क्यों नहीं की?

लिखित प्रश्न

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए–

(क) टापू के किनारे पहुँचकर माहीगीर को-

(अ) हँसी आई
(ब) हैरानी हुई
(स) डर लगा
(द) क्रोध आया

(ख) लोहा खोदने वालों के जिस्म-

(अ) पत्थर के थे
(ब) लकड़ी के थे
(स) लोहे के थे
(द) रुई के थे

(ग) भूख लगने पर माहीगीर को टापू पर खाने के लिए मिला-

(अ) फल
(ब) रोटी
(स) मछली
(द) कुछ नहीं

(घ) मशीनी विचारक ने माहीगीर को बताया कि उसकी बनाई दुनिया में-

(अ) प्रेम है
(ब) सौंदर्य है
(स) समानता है
(द) कोई किसी का मोहताज़ नहीं

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) मशीनी विचारक की दुनिया की क्या-क्या विशेषताएँ थीं?

(ख) किन बातों को मशीनी विचारक ने पुरानी बातें कहा?

(ग) विचारक किन पदार्थों से नई दुनिया के लिए आदमी बना रहा था?

(घ) किस कल्पना से माहीगीर के शरीर में सिरहन दौड़ गई?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) इस पाठ की रचना का क्या उद्देश्य है?

(ख) माहीगीर को क्यों विश्वास हो गया कि विचारक की दुनिया चलने वाली नहीं है?

(ग) माहीगीर के जाने के बाद मशीनी विचारक ने क्या किया?

भाषा ज्ञान

1. निम्नलिखित मुहावरों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

(क) सिर धुनना –

(ख) मोहताज़ होना –

(ग) गला खुश्क होना –

(घ) चेहरा खिलना –

वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखिए-

विचार करने वाला – विचारक

(क) मशीन से चलने वाला –

(ख) काव्य-रचना करने वाला –

(ग) भाषण देने वाला –

(घ) भाषण, कविता आदि सुनने वाला –

दिए गए विस्मयादिबोधक शब्दों से वाक्य बनाइए-

(क) अरे –

(ख) हाय –

(ग) ओह –

(घ) छिः –

(ङ) वाह –

रचना के क्षण

- भाव-भूमि – यदि आपको मशीनी विचारक की दुनिया में कुछ दिन रहना पड़े, तो आप कैसा अनुभव करेंगे? अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

कल्पना व चिंतन

- प्रस्तुत पाठ आज की मशीनी सभ्यता और भावशून्यता के खतरों की ओर संकेत करती है। यदि आपको एक नई दुनिया बनाने का अवसर मिले, तो आप कैसी दुनिया बनाना चाहेंगे, कल्पना कीजिए।

क्रिया-कलाप

- जो कुछ प्रकृति ने हमें दिया है, उसके पीछे गहन समझ है। उसकी अवहेलना करके मानव स्वयं को भले ही प्रगतिशील समझे, वास्तव में वह स्वयं को खतरे में ही डाल रहा है। इस विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए-

'सहज प्राकृतिक और कृत्रिम आधुनिक जीवन : एक तुलना'

अध्याय

9. ईदगाह

ईदगाह प्रेमचंद की सर्वश्रेष्ठ कहानियों में से एक है। इसमें लेखक ने एक छोटे से बालक के द्वारा अभावों में जीवन जीने की कला का वर्णन किया है।

रमज़ान के पूरे तीस रोज़ों के बाद ईद आई है। कितना मनोहर, कितना सुहावना प्रभाव है! वृक्षों पर कुछ अजीब हरियाली है, खेतों में कुछ अजीब रौनक है। आज सूर्य कितना प्यारा लग रहा है, मानो संसार को ईद की बधाई दे रहा है। गाँव में कितनी हलचल है! ईदगाह जाने की तैयारियाँ हो रही हैं। बड़े-बूढ़े, जवान अपने कपड़े सँभालने में लगे हैं। सब अपने-अपने ज़रूरी काम निपटाकर जल्दी से जल्दी ईदगाह जाने के लिए बेचैन हैं। चारों ओर खुशी का माहौल है।

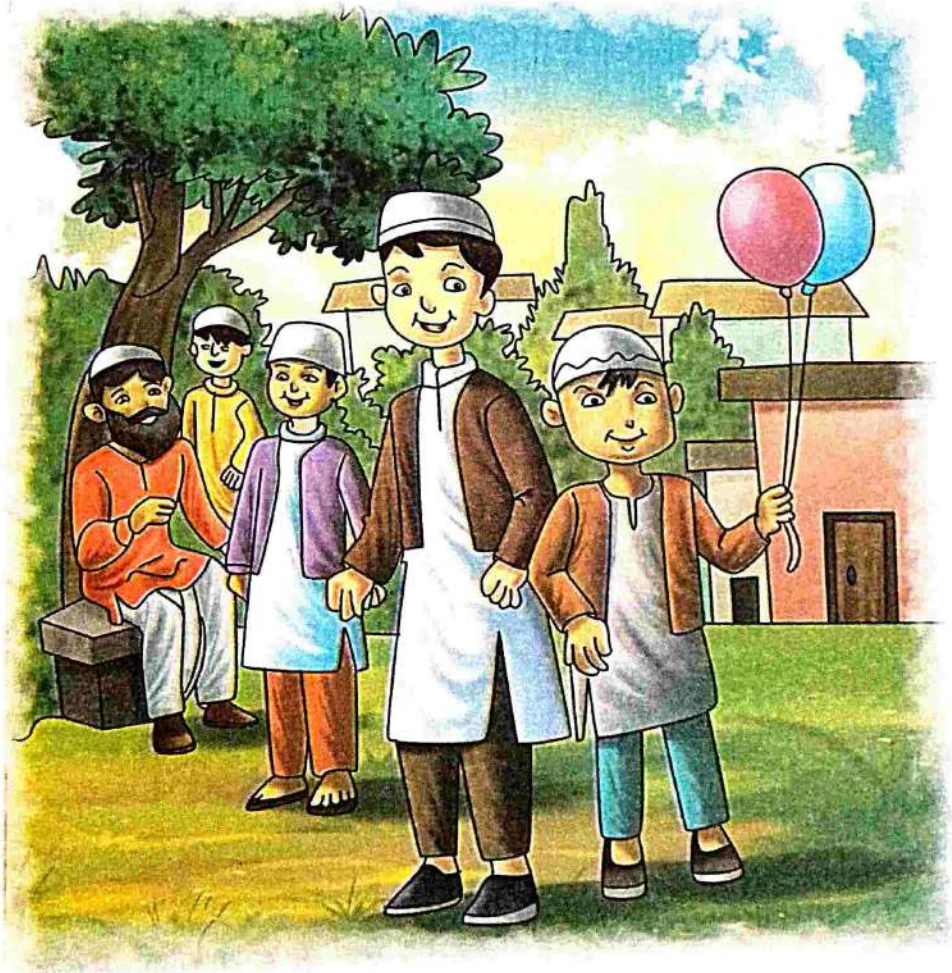

लड़के सबसे ज्यादा प्रसन्न हैं। किसी ने एक रोज़ा रखा है वह भी दोपहर तक; किसी ने वह भी नहीं, लेकिन ईदगाह जाना उनके हिस्सों की चीज़ है। रोज़े बड़े-बूढ़ों के लिए होंगे, उनके लिए तो ईद है। रोज़ ईद-ईद की रट लगा रखी थी। आज वह आ गई। अब जल्दी पड़ी है कि लोग ईदगाह क्यों नहीं चलते? इन्हें घर-गृहस्थी की चिंताओं से क्या प्रयोजन। गुल्लक से अपना खज़ाना निकालकर गिनते हैं और गिनकर फिर रख लेते हैं। महमूद गिनता है—एक, दो, तीन, आठ, नौ, पंद्रह पैसे हैं। अनगिनत पैसों में अनगिनत चीज़ें लाएँगे—मिठाइयाँ, बिगुल और न जाने क्या-क्या?

इन लड़कों में से एक है—हामिद जो सबसे ज़्यादा प्रसन्न है। हामिद चार-पाँच साल का गरीब-सूरत, दुबला-पतला लड़का है। उसके अब्बा गत वर्ष चल बसे थे। माँ न जाने क्यों पीली होती-होती एक दिन मर गई। अब हामिद अपनी बूढ़ी दादी अमीना की गोद में सोता है और उतना ही प्रसन्न है। दादी ने बताया कि उसके अब्बाजान रुपए कमाने गए हैं। रुपयों की बहुत-सी थैलियाँ भरकर लाएँगे। अम्मीजान अल्लाह मियाँ के घर से उसके लिए बड़ी अच्छी-अच्छी चीज़ें लेने गई हैं। हामिद के अब्बा और अम्मी की मृत्यु के बाद उसकी दादी लोगों के कपड़े सीकर तथा छोटे-मोटे काम करके दोनों का पेट पालती है। आज ईद है। सब खुशियाँ मना रहे हैं। लेकिन हामिद की दादी अमीना के पास केवल दो आने हैं। इनमें से तीन पैसे उसने हामिद को दे दिए। पाँच पैसे उसके बटुए में हैं। इनमें ईद का त्योहार कैसे मनेगा? कैसे सेवइयाँ बनेंगी? लेकिन हामिद को इन सबसे क्या लेना-देना? वह तो खुश है, भले ही उसके पैरों में जूते तक नहीं है।

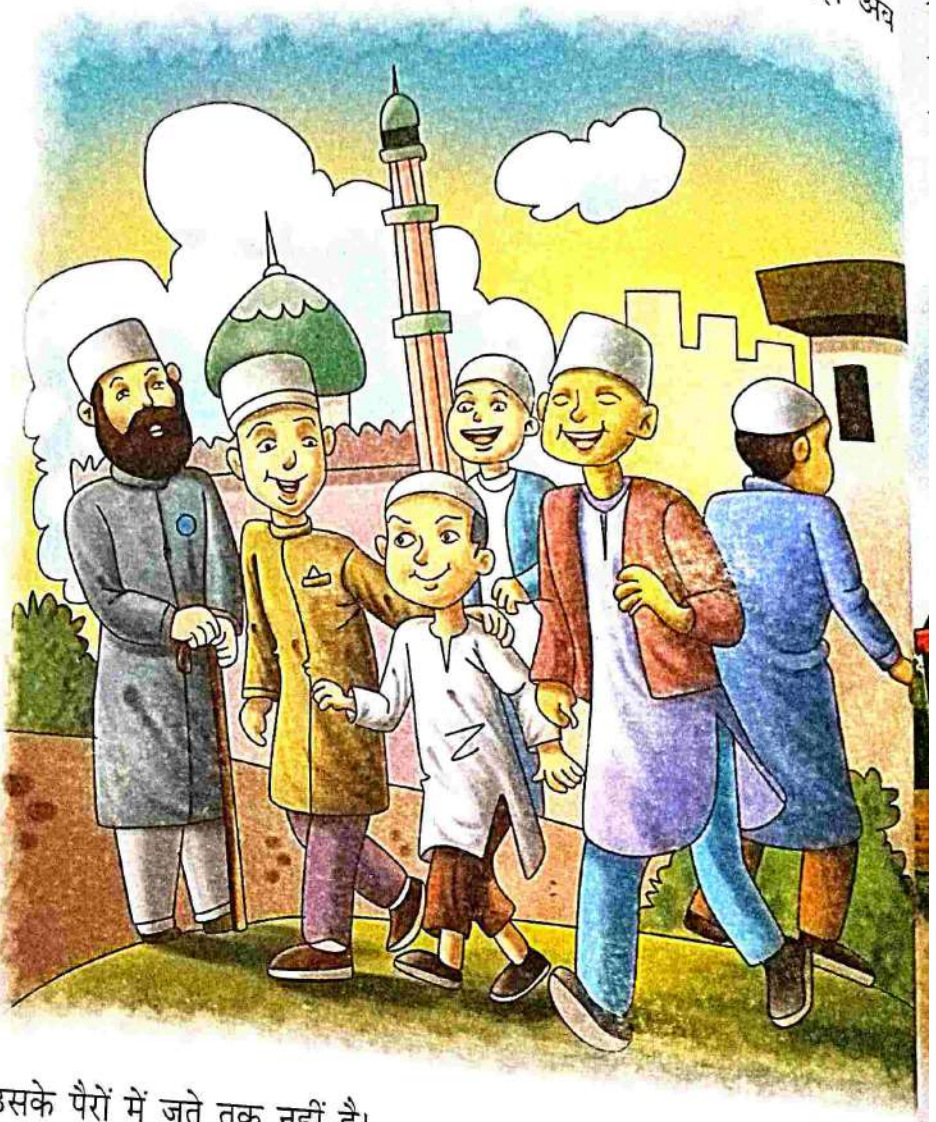

वह फिर भी प्रसन्न है, उत्साहित है ईदगाह पर जाने को। लेकिन अमीना का दिल कचोट रहा है। गाँव के बच्चे अपने-अपने अब्बा के साथ जा रहे हैं। हामिद का अमीना के सिवा और कौन है? उसे कैसे अकेले मेले में जाने दे। लेकिन हामिद दादी को दिलासा देता है—"तुम डरना नहीं अम्मी? मैं सबसे पहले आऊँगा। बिल्कुल न डरना।" गाँव से मेला चला और बच्चों के साथ हामिद भी जा रहा था। कभी सब के सब दौड़कर आगे निकल जाते, फिर किसी पेड़ के नीचे खड़े हो जाते, फिर चल पड़ते। इसी तरह चलते, शहर निकट आता जा रहा था। शहर के बाग-बगीचों में फलदार पेड़ों पर पत्थर मारते, लेकिन माली के आने पर भाग खड़े होते हैं। इसी तरह शरारत करते बच्चे सबके साथ आगे बढ़ते रहे। शहर की बड़ी-बड़ी इमारतों, अदालतों, कॉलेजों, घरों आदि को देखते हुए बच्चों का काफ़िला आगे बढ़ता रहा।

शहर खत्म होते ही ईदगाह दिखने लगी। ऊपर इमली के घने वृक्षों की छाया हैं। नीचे पक्का फर्श है। लोग पंक्तियों में खड़े होकर नमाज़ पढ़ रहे हैं। हज़ारों सिर एक साथ सजदे में झुक जाते हैं। फिर सबके सब एक साथ खड़े हो जाते हैं। एक साथ झुकते हैं और एक साथ घुटनों के बल बैठ जाते हैं। यहाँ सब बराबर हैं। कोई छोटा-बड़ा नहीं। नमाज़ खत्म हो गई है, लोग आपस में गले मिल रहे हैं। अब मिठाई और खिलौनों की दुकानों पर धावा बोल

जाता है। मेले में कई तरह के खेल-तमाशे हैं। यह देखो हिंडोला है, एक पैसा देकर चढ़ जाओ। कभी आसमान पर जाते मालूम होंगे, तो कभी ज़मीन पर गिरते हुए। यह चर्खी है, लकड़ी के हाथी, घोड़े, ऊँट छड़ों से लटके हैं। एक पैसा देकर बैठ जाओ और पच्चीस चक्करों का मज़ा लो। महमूद और मोहसिन, नूरे और सम्मी, इन घोड़ों और ऊँटों पर बैठते हैं। हामिद दूर खड़ा है। तीन ही पैसे तो हैं उसके पास। अपने कोष का एक तिहाई, ज़रा-सा चक्कर खाने के लिए वह नहीं दे सकता।

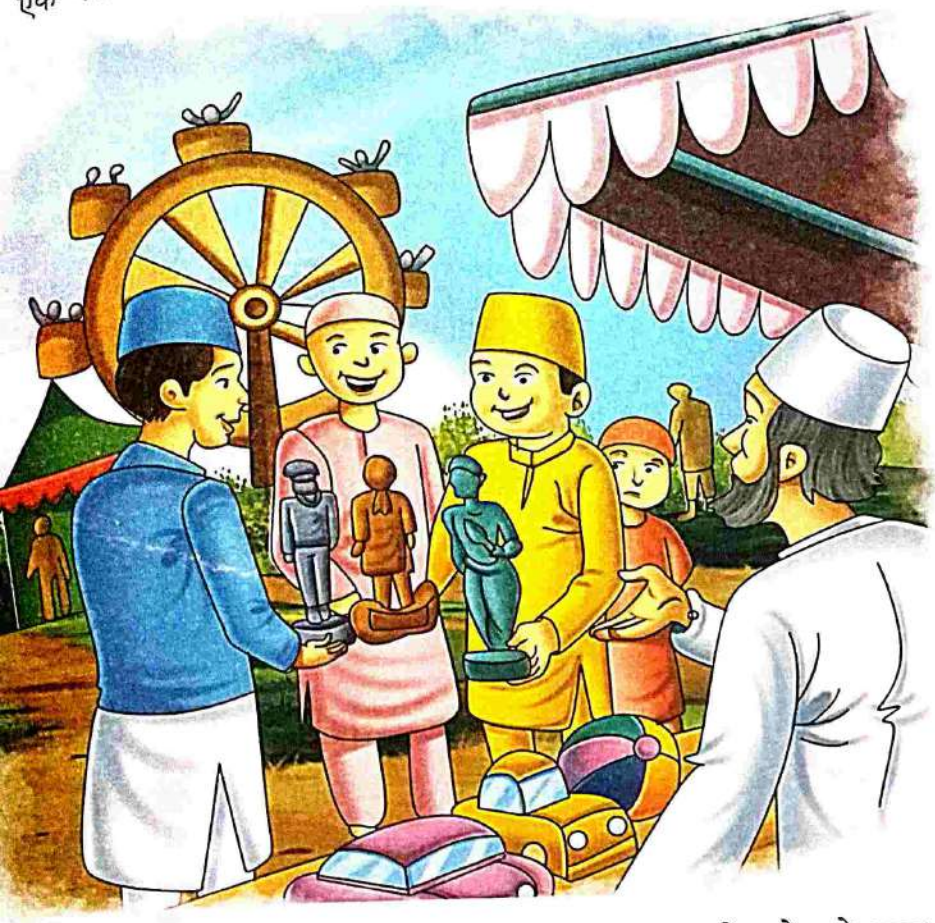

सब चर्खियों से उतरे हैं। अब खिलौने लेंगे। इधर दुकानों की कतार लगी हुई है। तरह-तरह के खिलौने हैं— सिपाही और गुजरिया, राजा और वकील, भिश्ती, धोबिन और साधु। वाह! कितने सुंदर खिलौने हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि मानो अब बोलना ही चाहते हो। अहमद सिपाही लेता है। मोहसिन को भिश्ती पसंद आया। नूरे ने वकील खरीदा है। ये सब दो-दो पैसे के खिलौने हैं।

हामिद के पास तीन पैसे हैं। इतने महँगे खिलौने वह कैसे ले? खिलौना कहीं हाथ से छूट जाए, तो चूर-चूर हो जाए। इन पर ज़रा पानी पड़े, तो सारा रंग धुल जाए। ऐसे खिलौनों का वह क्या करेगा, किस काम के? मोहसिन, महमूद, नूरे और सम्मी अपने-अपने खिलौने की तारीफ़ करते हैं। हामिद खिलौनों की निंदा करता है— मिट्टी के ही तो हैं। गिरे, तो चकनाचूर हो जाएँ।

लेकिन ललचाई हुई आँखों से खिलौनों को देख रहा है और चाहता है कि काश ज़रा-सी देर के लिए उन्हें हाथ में ले ले। उसके हाथ अनायास ही लपकते हैं, लेकिन लड़के इतने त्यागी नहीं होते। हामिद ललचाता रह जाता है। खिलौनों के बाद मिठाइयाँ आती हैं। किसी ने रेवड़ियाँ ली हैं, किसी ने गुलाब-जामुन, किसी ने सोहन हलवा। सब मज़े से खा रहे हैं। हामिद बिरादारी से पृथक है। अभागे के पास तीन पैसे हैं। क्यों नहीं कुछ लेकर खाता? ललचाई आँखों से सबकी ओर देखता है। बच्चे हामिद को देखा-दिखाकर और चिढ़ा-चिढ़ाकर मिठाइयाँ खा रहे हैं।

मिठाइयों के बाद कुछ दुकानें लोहे की चीज़ों की हैं। लड़कों के लिए यहाँ कोई आकर्षण नहीं है। वे सब आगे बढ़ जाते हैं। हामिद लोहे की दुकान पर रुक जाता है। कई चिमटे रखे हुए थे। उसे ख्याल आया, दादी के पास चिमटा नहीं है। तवे से रोटियाँ उतारती है, तो हाथ जल जाता है। अगर वह चिमटा ले जाकर दादी को दे दे, तो वह कितनी प्रसन्न होगी! फिर उनकी उँगलियाँ कभी न जलेंगी। घर में एक काम की चीज़ हो जाएगी। खिलौने से क्या लाभ? व्यर्थ में खराब होते हैं। कुछ ही समय की तो खुशी होती है। फिर तो खिलौने को कोई आँख उठाकर

भी नहीं देखता। चिमटा कितने काम की चीज़ है, अम्मा, बेचारी को कहाँ फुर्सत है कि बाज़ार जाए और इतने पैसे ही कहाँ मिलते हैं? रोज़ हाथ जला लेती है।

यह सोचते-सोचते हामिद ने मोलभाव करके छह पैसे का चिमटा तीन पैसे में ही खरीद लिया। हामिद ने चिमटे को इस तरह कंधे पर रखा मानो बंदूक है और शान से अकड़ता हुआ साथी-संगियों के पास आ गया।

साथियों ने कहा— "यह कोई खिलौना है?"

हामिद बोला— "खिलौना क्यों नहीं है? अभी कंधे पर रखा, तो बंदूक हो गई। हाथ में ले लिया, तो फकीरों का चिमटा हो गया। इसे बजाया भी जा सकता है और सबसे बड़ी बात यह है कि मेरी दादी की उँगलियाँ नहीं जलेंगी, तो वह मुझे दुआ देगी। तुम्हारे खिलौनों को देखकर कौन तुम्हें दुआ देगा?" तरह-तरह की बातें करके हामिद ने अपने चिमटे का सिक्का जमा दिया। इसी तरह हँसते-बोलते, चिढ़ाते वे अपने गाँव लौट आए। अमीना हामिद की आवाज़ सुनते ही दौड़ी। उसे गोद में उठाकर प्यार करने लगी। सहसा उसके हाथ में चिमटा देखकर वह चौंकी।

"यह चिमटा कहाँ से आया?"

"मैंने मोल लिया है।"

"कितने पैसे में?"

"तीन पैसे दिए।"

अमीना ने छाती पीट ली। "यह कैसा बेसमझ लड़का है कि दोपहर हो गई न कुछ खाया, न पीया। लाया क्या चिमटा। सारे मेले में तुझे और कोई चीज़ नहीं मिली, जो यह लोहे का चिमटा उठा लिया?"

हामिद ने अपराधी भाव से कहा— "तुम्हारी उँगलियाँ तवे से जल जाती थीं, इसलिए मैंने इसे खरीद लिया।" बुढ़िया का क्रोध स्नेह में बदल गया। कैसा बच्चा है? दूसरे बच्चों ने खिलौने, मिठाइयाँ ली होंगी। इसका जी कितना ललचाया होगा? इतना ज़ब्त इससे हुआ कैसे? इसे तब भी अपनी बुढ़िया दादी की याद बनी रही। अमीना का मन गद्गद हो गया। वह रोने लगी। दामन फैलाकर हामिद को दुआएँ देती जाती थीं और आँसू की बड़ी-बड़ी बूँदें गिराती जाती थीं। हामिद की समझ में कुछ नहीं आया। वह तो बस दादी को एकटक निहार ही रहा।

अध्यापन संकेत बच्चों को बताएँ कि उन्हें हमेशा अपने बूढ़े दादा-दादी का आदर तथा सम्मान करना चाहिए क्योंकि उन्हें अपने पोते-पोतियों से सबसे ज़्यादा प्रेम होता है।

शब्दार्थ

अल्लाह - भगवान, ईश्वर; उमंग - उमंग, जोश; काफ़िला - यात्रियों का दल; पंक्ति - कतार; दुआ - प्रार्थना; व्यर्थ - बेकार; अलग - अलग; क्रोध - गुस्सा

अभ्यास

पाठ से

मौखिक प्रश्न

(क) गाँव में किस बात की हलचल थी?

(ख) हामिद कौन था?

(ग) अमीना का दिल उसे क्यों कचोट रहा था?

(घ) दादी हामिद के पालन-पोषण के लिए क्या करती थी?

लिखित प्रश्न

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए–

(क) हामिद था-

(अ) दुबला-पतला (ब) हृष्ट-पुष्ट

(स) तेज-तर्रार (द) निराश-उदास

(ख) हामिद समझता था कि उसकी माँ अल्लाह मियाँ के पास गई है-

(अ) घूमने के लिए

(ब) काम करने के लिए

(स) उसके लिए अच्छी-अच्छी चीज़ें लाने के लिए

(द) प्रश्न पूछने के लिए

(ग) बच्चों ने पैसे खर्च किए-

(अ) कपड़ों पर (ब) खिलौनों और मिठाइयों पर

(स) घर-गृहस्थी की वस्तुओं पर (द) पढ़ने-लिखने की वस्तुओं पर

(घ) हामिद ने मेले से खरीदा-

(अ) पटरा (ब) चिमटा

(स) गुब्बारा (द) मिठाई

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) माता-पिता की मृत्यु के पश्चात् हामिद की देखभाल किसने की?

(ख) बच्चों ने ईद के मेले से क्या-क्या खरीदा?

(ग) हामिद ने चिमटा क्यों खरीदा?

(घ) चिमटे की सच्चाई जानकर अमीना के मन में क्या भाव उठे?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) हामिद ने बच्चों को चिमटे की क्या-क्या खूबियाँ बताईं?

(ख) हामिद ने अपने मन पर किन-किन प्रलोभनों का प्रभाव नहीं पड़ने दिया?

भाषा-ज्ञान

1. सही स्थान पर उचित विराम चिह्न का प्रयोग कीजिए-

रीटा गीता मेले जाने की ज़िद कर रही थीं माँ ने समझाया कि मेले में एक दूसरे का हाथ मत छोड़ना ज़्यादा खिलौने मत छेड़ना और बाबू जी जो दिलवा दें चुपचाप ले लेना मेले में रीटा आगे चली गई तो गीता ने पुकारा सुनो रुको मैं भी आती हूँ तुम क्या लोगी रीटा ने पूछा।

2. सुमेल कीजिए-

स्तंभ 'अ'	स्तंभ 'ब'
(क) दामन	(i) आशीर्वाद
(ख) दुआएँ	(ii) नादान
(ग) दिलासा	(iii) बदकिस्मत
(घ) बेसमझ	(iv) सांत्वना
(ङ) अभागा	(v) आँचल

3. वे शब्द जिनके एक से अधिक अर्थ होते हैं 'अनेकार्थी शब्द' कहलाते हैं।

दिए गए अनेकार्थी शब्दों का अलग-अलग अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए-

(क) कर _____ _____

कर _____ _____

(ख) मन _____ _____

मन _____ _____

(ग) दो _____ _____

दो _____ _____

(घ) हल _____ _____

हल _____ _____

(ङ) पर _____ _____

पर _____ _____

(च) जल _____ _____

जल _____ _____

रचना के क्षण

भाव-भूमि - क्या आपको भी कभी मेले या बाजार में रुपयों के अभाव के कारण मन मसोसकर रह जाना पड़ा, तब आपके मन में क्या भाव उमड़े? व्यक्त कीजिए।

_____

_____

_____

_____

_____

कल्पना व चिंतन

कल्पना कीजिए कि धन व माता-पिता के स्नेह से वंचित बालकों की मनोस्थिति कैसी होती होगी। ऐसे वंचित बालक को यदि उसके साथी अपने सुखों का प्रदर्शन करके चिढ़ाए, तो उसे कैसा अनुभव होता होगा?

_____

_____

_____

_____

_____

पठन हेतु

ओ अच्छी लड़कियो!

स्त्री-जाति का कुछ समय पहले बहुत शोषण हुआ, उसकी प्रतिक्रिया के रूप में नई कविता में उनके लिए क्रांतिकारी विचार देकर कवयित्री ने एक विद्रोह तथा स्वतंत्रता का भाव उभारना चाहा है-

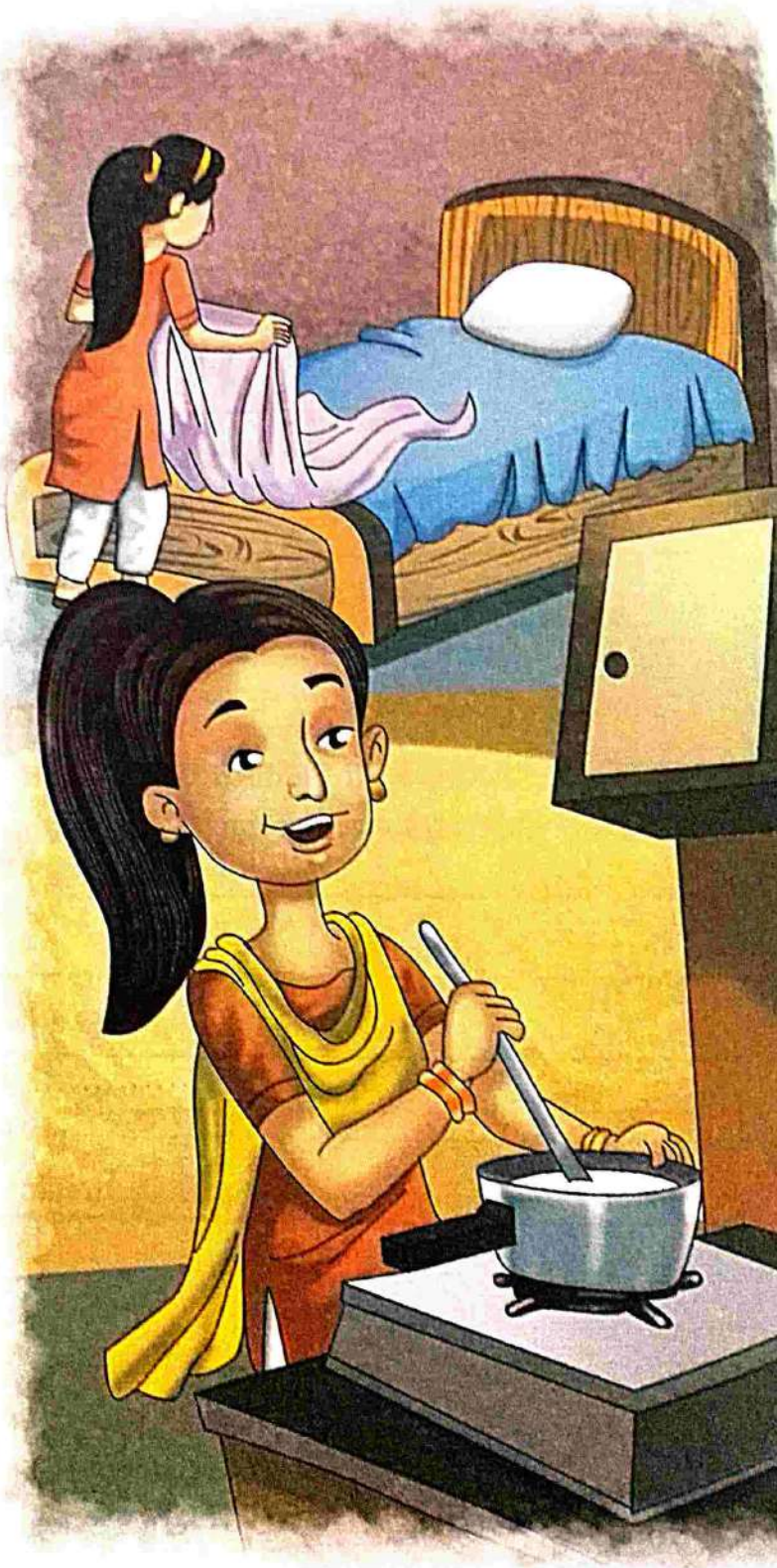

ओ अच्छी लड़कियो!
तुम्हें कितना ख्याल है घर का
परिवार का, समाज का?

तुम जानती हो कैसे निभाए जाते हैं रिश्ते,
कैसे सँभाला जाता है दो घरों का मान,
कैसे रखी जाती है बड़ों की बात?

और कैसे खामोशी के खंडहरों में
छुपा दी जाती हैं जिज्ञासाएँ
और उमड़ते हुए सवाल

ओ अच्छी लड़कियो!
तुम मुस्कराहटों में सहेज देती हो दुख
ओढ़ लेती हो चुप्पी की चूनर

जब बोलना चाहती हो दिल से
तो बाँध लेती हो बतकही की पाजेब
नाचती फिरती हो अपनी ही ख्वाहिशों पर
और भर उठती हो संतोष से
कि खुश है लोग तुमसे।

ओ अच्छी लड़कियो!
तुम अपने ही कंधे पर ढोना जानती हो
अपने अरमानों की लाश
तुम्हें आते हैं हुनर अपनी देह को सजाने के
निभाने आते हैं रीति-रिवाज़, नियम

जानती हो कि तेज़ चलने वाली और
खुलकर हँसने वाली लड़कियों को
जमाना अच्छा नहीं कहता।

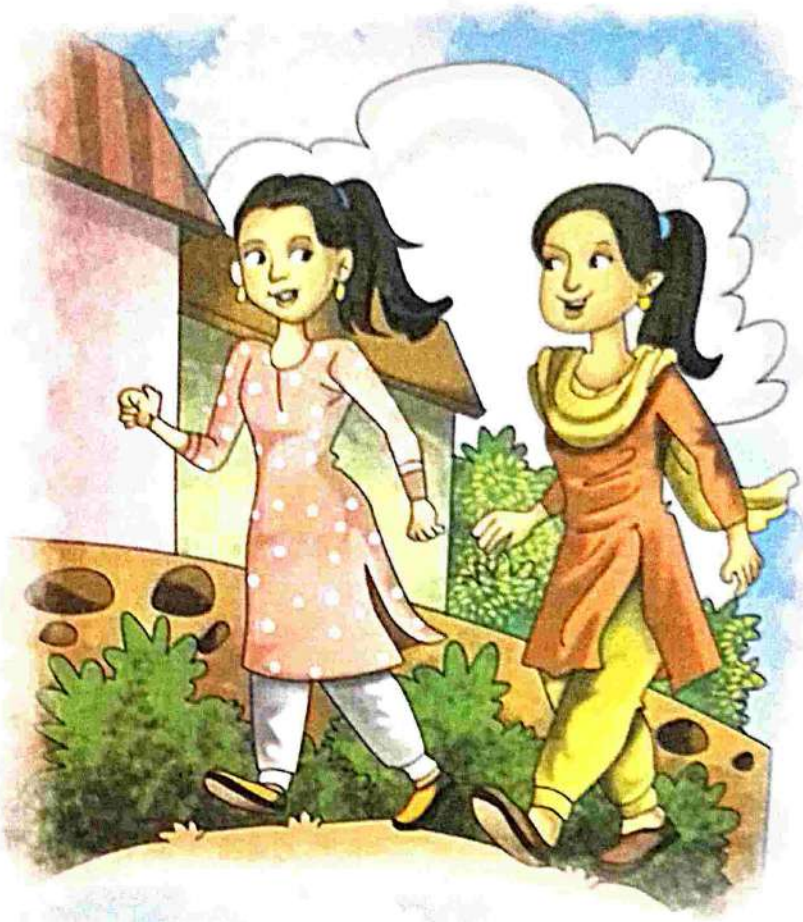

तुम जानती हो कि तुम्हारे
अच्छे होने पर टिका है
इस समाज का अच्छा होना।

ओ अच्छी लड़कियो!
तुम देखती हो सपने में कोई राजकुमार
जो आएगा और ले जाएगा किसी महल में
जो देगा ज़िंदगी की तमाम खुशियाँ।

सँभालोगी उसका घर-परिवार
उसकी खुशियों पर निसार दोगी ज़िंदगी
बच्चों की खिलखिलाहटों में सार्थकता
होगी जीवन की और चाह सुहागन मरने की

ओ अच्छी लड़कियो!
तुम थक नहीं गई
क्या अच्छे होने की सलीब ढोते-ढोते।

सुनो, उतार दो अपने सिर से
अच्छे होने का बोझ
लहराओ न आसमान तक अपना आँचल
हँसो इतनी तेज़ कि धरती का कोना
उस हँसी में भीग जाए।

उतार दो रस्मो-रिवाज़ के जेवर
और मुक्त होकर देखो संस्कारों की
भारी-भरकम ओढ़नी से

अपनी ख्वाहिशों को गले से लगाकर रो लो
जीभर के आँखों में समेट लो सारे ख्वाब
जो डर से देखे नहीं तुमने अब तक

ओ अच्छी लड़कियो!
अब किसी का नहीं सँभालो सिर्फ़ अपना मान

बेलगाम, नाचने दो अपनी ख्वाहिशों को
और फूँक मारकर उड़ा दो सीने में पलते
सदियों पुराने दुख को।

पहन के देखो
लोगों की नाराज़गी का ताज एक बार
और फोड़ दो अच्छे होने का ठीकरा

ओ अच्छी लड़कियो .....

—प्रतिभा कटियार

अध्याय

10. भाग्य विधाता कौन?

प्रस्तुत पाठ में पश्चिम के आधुनिक विचारक स्वेट मार्टन ने पाठ के माध्यम से व्यक्ति को कर्म करने की प्रेरणा दी है। उनका मानना है कि कर्मठ मनुष्य प्रतिकूल परिस्थितियों में भी संघर्ष करता है और विजयी होता है, जबकि भाग्यवादी मनुष्य संघर्ष करने की बजाय भाग्य पर भरोसा करके पीछे रह जाता है।

प्रत्येक व्यक्ति का रहन-सहन अलग-अलग होता है। उसके क्रिया-कलाप अलग-अलग होते हैं। कोई लखपति है, तो किसी के पास खाने के लिए भी पैसे नहीं हैं। कोई हज़ार पौंड माहवार कमा रहा है, तो कोई नौ पौंड माहवार।

यह विषमता क्यों?

इसका तत्काल जवाब है—अपना-अपना भाग्य।

भाग्य!

इस भाग्य ने मनुष्य को जितना गुमराह कर रखा है, उतना किसी और बात ने नहीं किया है।

इस भाग्यवाद की उत्पत्ति कहाँ से हुई? इसका कुछ इतिहास नहीं है। पर इतना अवश्य है कि कुछ अकर्मण्य लोगों ने ही इसका प्रचलन किया होगा।

जो कुछ कार्य नहीं करते, परिश्रम करने से घबराते हैं और जिनकी एकमात्र इच्छा यह रहती है कि उनके पास मुफ़्त में सब कुछ चला आए, वही भाग्य की बात करते हैं।

"क्या करें यार। मेरी तकदीर ही ऐसी नहीं है।"

दूसरे को प्रगति करते देख और संपन्न पाकर वे कहते हैं, "उसका भाग्य प्रबल है।"

यह भाग्य क्या बला है? मैं आज तक नहीं समझ पाया हूँ। भाग्य की जब कोई बात करता है, तो मुझे लोमड़ी का किस्सा ज़रूर याद आता है, जिसने अंगूर न पाने के कारण उनको खट्टा कहना शुरू किया था, जबकि वह वास्तव में मीठे थे। उनको न पाकर उसने यह मानकर संतोष कर लिया था कि वे खट्टे हैं।

इसी प्रकार भाग्यवादी मनुष्य जब कुछ पाने की क्षमता रखने के बावजूद, आलस्य के कारण या कामचोरी के कारण भाग्य की बात मानकर पड़ा रह जाता है।

जिसका भाग्य आप प्रबल मानते हैं, उसके बारे में पता लगाकर देखो तो। क्या वह भाग्य के बल पर ही उतना सब पा सका है?

पूछो उससे। देखो उसकी दिनचर्या।

रात-दिन कितना कठोर श्रम करके उसने अपने-आपको इस प्रकार बनाया है? तब आपको पता चलेगा कि मनुष्य अपना भाग्य स्वयं बनाता है। जो कुछ भी उसके पास होता है, अपने कर्मों और सूझ-बूझ का फल होता है। आप ऐसा नहीं कर पाते हैं। इस कारण आपकी दिशाहीनता है। यह एक ऐसा सत्य है, जिसे ईमानदारी से आप स्वयं स्वीकार करेंगे। इसलिए सूझ-बूझ और कर्म की सफलता को अकर्मण्य-ईर्ष्यालु लोगों ने भाग्य का नाम दे दिया है। इस प्रकार भाग्य का प्रचलन हो गया है।

भाग्य की इस प्रकार रचना करने के बाद उसका विधाता ईश्वर को बना दिया गया। यह तर्क दिया जाने लगा कि जो कुछ ईश्वर ने भाग्य में लिख रखा है, वही होगा। आदमी का अपने भाग्य के आगे वश नहीं चलता। इसके प्रमाण में नाना प्रकार के तर्क भी दिए जाने लगे।

इस प्रकार भाग्य के नाम पर एक बहुत बड़ा वर्ग गुमराह कर दिया गया। मनुष्य ने 'भाग्य' की बात कर अपना प्रगति-पथ स्वयं अवरुद्ध कर लिया।

यह 'भाग्य' मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है। भाग्य मनुष्य को कुछ नहीं करने देता है। उसे अकर्मण्य बना देता है। किसी कार्य में हाथ डालने पर असफलता के कारण यह इस बात को मान लेता है कि भाग्य साथ नहीं दे रहा है। फिर उस काम में हाथ नहीं लगाता। काम ही छोड़ देता है। भले ही उस असफलता के बावजूद उस काम में हाथ लगाए रखने पर सफलता निश्चित हो। यहीं पर आदमी सबसे बड़ा धोखा खाता है। हीरे की खोज के लिए एक आदमी ने थोड़ी-सी ज़मीन ली, काफ़ी खुदाई के बाद कुछ हाथ न लगा, तो उसने वह ज़मीन छोड़ दी। जब वही ज़मीन दूसरे ने ली तो थोड़े-से परिश्रम से ही उसे एक बड़ा हीरा मिल गया।

क्या कहोगे इसे आप?

भाग्य !

पहले वाला ठेकेदार अपने आलस्य, अपनी अकर्मण्यता, अपनी हड़बड़ी पर इसे 'भाग्य' की संज्ञा दे, परदा डाल देगा। तकदीर में नहीं था। मिलता कैसे? जिसकी तकदीर में था, उसे मिला।

इस प्रकार की धारणाएँ केवल निर्बल मन और श्रम तथा संकल्प से डरने वाले लोग किया करते हैं। भाग्य वास्तव में एक धोखा और अपनी असफलता पर परदा डालने का एक बहाना मात्र है। अतएव भाग्य की बात पर विश्वास करने की सलाह मैं कभी नहीं दे सकता हूँ। हीरे वाले मामले में पहले का निराश हो जाना, असफलता को सत्य मान लेना, अपने श्रम से मुँह चुराना ही उसकी हानि का कारण बन गया।

एक घटना और है।

किसी नवयुवती ने, जो अविवाहित थी, अपने असामाजिक संबंधों के कारण उत्पन्न शिशु को समाज के भय से चुपचाप रात के आखिरी प्रहर में कूड़े के ढेर पर डाल दिया।

नवजात शिशु जीवित था। हाथ-पैर मार रहा था। सवेरा होते ही राहगीरों की उस पर नज़र गई। भीड़ लग गई। तभी एक ईसाई महिला वहाँ से निकली। भीड़ देख अपनी कार से उतर आई। उसने सारा नज़ारा देखा। दृश्य समझा। नवजात शिशु को उठाकर ले गई।

उसने शिशु-संरक्षण-गृह खोल रखा था। अवैध अनाथ शिशुओं का पालन-पोषण करती थी। जन सहयोग मिलता था। संतानहीन दंपत्ति उस संस्था में जाते और कोई शिशु जँच जाया करता था, तो उसे गोद ले लिया करते थे। वह नवजात शिशु भी वहीं संरक्षण पा गया।

कुछ समय बाद एक दंपत्ति आए।

शिशु पसंद आ गया।

उसे गोद ले लिया।

वह दंपत्ति करोड़पति था। इस प्रकार अनायास ही वह शिशु करोड़ों की संपत्ति का उत्तराधिकारी बन गया। अब इस घटना को आप क्या कहेंगे?

यह शुद्ध भाग्यवादी घटना मानी जाएगी। ऐसी बात नहीं है।

परिस्थितियाँ और संयोग इसके कारण थे। वैसे भाग्यवादी इस संबंध में बराबर तर्क कर परिस्थिति और संयोग की भी उत्पत्ति भाग्य से बतला देंगे। तर्क तो अनंत है, पर भाग्यवादी बनना तो ठीक नहीं है।

एक प्रश्न आप स्वयं से करें।

आपका भाग्य-विधाता कौन है?

जब आप इस प्रश्न पर गंभीरतापूर्वक विचार करेंगे, तो आपके अलावा दूसरा व्यक्ति न होगा।

तब···? इसका अर्थ यह रहा कि आप अपना भाग्य स्वयं बना या बिगाड़ सकते हैं। सब कुछ आपके हाथ में है और इस बात से कौन इंकार कर सकता है कि हम जो कुछ भी हैं या जिस किसी भी दिशा से गुज़र रहे हैं, वह सब हमारे कार्यों का ही परिणाम है···· सोचिएगा ज़रा। आप स्वयं अपनी वर्तमान दशा या हालत के लिए जिम्मेदार हैं। इसका दोष या श्रेय ईश्वर अथवा भाग्य पर रखकर आप अपनी कमज़ोरियाँ छिपाते हैं। स्वयं को ही धोखा देते हैं। इस बात को आप मानेंगे।

तब ईश्वर क्या है?

एक बार यही प्रश्न एक व्यक्ति ने बर्टेंड रसेल से पूछा था।

रसेल का जवाब था, "मन को शक्ति देने वाली इस आध्यात्मिक कल्पना का नाम ईश्वर है।"

ईश्वर का नाम लेकर उस पर विश्वास कर हम मन में शक्ति का एकीकरण कर कार्यरत होते हैं। हमारा विश्वास मज़बूत होता है कि हमारे साथ ईश्वर है। हम इस कार्य में सफल होंगे। आत्म-विश्वास को दृढ़ बनाने के लिए ईश्वर का अस्तित्व बनाया गया है। इसके साथ-साथ 'ईश्वर' की कल्पना मनुष्य को भयभीत भी करती है। एकांत में भी मनुष्य कोई पाप या गलत काम न कर सके, इसी आधार पर उसे सर्वव्यापी, सर्वद्रष्टा बतलाया गया है। कण-कण में उसका निवास माना गया है।

मनुष्य नितांत अकेला है।

कोई पाप कर रहा है।

अपने एकांत पर उसे पूरा विश्वास है कि कोई नहीं देख रहा है। ठीक इसी मौके के लिए ईश्वर का अस्तित्व बनाया गया है कि सावधान, वह देख रहा होगा। वह सर्वव्यापी है। तुम्हारे इस पाप को देख रहा है। मनुष्य को एकांत में भी कुमार्ग पर जाने से रोकने के लिए यह सिद्धांत है।

वास्तव में यह ठीक भी है।

मनुष्य पर नियंत्रण रखने के लिए किसी-न-किसी शक्ति की आवश्यकता तो है ही। इसी आधार पर ईश्वर का निर्माण किया गया और इसी प्रकार असफलताओं को रोकने के लिए, अपने दोष पर परदा डालने के लिए 'भाग्य' का भी निर्माण कर दिया गया है।

इस प्रश्न का यही उत्तर सही है—

हम स्वयं अपने भाग्य-विधाता हैं। जैसा कार्य हम करेंगे, वैसा फल पाएँगे। अतएव भाग्य को आप दोष न दें। चींटी को देखें। वह कितनी बार चढ़ती-गिरती है। अगर वह भाग्यवादी होती, तो फिर चढ़ ही न पाती।

निरंतर प्रयास करती है।

सफल हो जाती है।

वह भाग्य नहीं, कर्म करके दिखलाती है। इस कारण बराबर कार्य में लगे रहें। सफलता हाथ आए या फिर असफलता···सफलता पर प्रसन्न होकर अपनी प्रगति को धीमी न करें। असफलता पर घबराकर या निराश होकर मैदान छोड़कर न भागें। अपना कार्य बराबर आगे बढ़ाते रहें। जो उद्यम करते हैं, परिश्रमरत रहते हैं, निरंतर अपने कदम का ध्यान रखते हैं, वे अवश्य जो भी इच्छा करते हैं, सब पा जाया करते हैं।

आप भी अपने को ऐसा ही बनाएँ। सचमुच जब एक बार आप सफलता प्राप्त कर लेंगे, तो आप इसका मतलब समझ सकेंगे और फिर आप बराबर प्रगति-पथ पर बढ़ सकते हैं।

अपने भाग्य का आप स्वयं निर्माण करें। सब कुछ आपके हाथ में है। संकल्प करें, शक्ति लगा दें। आपको सब कुछ मिल जाएगा। आवश्यकता धैर्य की, साहस की, समय की है।

जब आप ईमानदारी से इस पर पूरा-पूरा अमल करेंगे, तो आप सब कुछ पा सकते हैं। मनुष्य क्या नहीं कर सकता है। ईमानदारी के साथ कभी आपने इस प्रश्न पर सोचा है?

देखिए, विचार कीजिए।

मनुष्य ही संसार के सभी प्राणियों में एकमात्र ऐसा प्राणी है, जिसे ईश्वर या प्रकृति ने सब कुछ दिया है। वह अपने प्राकृतिक गुणों के अलावा भी अपने कौशल के द्वारा औरों के गुण अपना सकता है। उदाहरणतया केवल मछलियाँ ही पानी में तैर सकती हैं, मनुष्य में यह गुण जन्मजात नहीं है। फिर भी वह तैरना सीख लेता है। उड़ना पक्षियों का धर्म है, पर मनुष्य भी हवाई जहाज़ बनाकर उड़ना सीख गया है। इस प्रकार मनुष्य को प्रकृति ने कुछ इस प्रकार का बनाया है कि वह सब कुछ कर सकता है। अतएव जब प्रकृति से प्राप्त सुविधा का लाभ हम स्वयं नहीं उठाते हैं, तो हमारे जैसा मूर्ख और कौन हो सकता है?

प्रकृति ने हमको सब कुछ दिया है। यह हमारी अपनी कमज़ोरी है कि हम उस सबको पहचान नहीं पाते, वरना हम जो कुछ भी चाहते हैं, वह हमारे आस-पास हमारे चारों ओर विद्यमान है।

अरस्तू ने कहा है, "इस दुनिया में सब कुछ है। जो चाहो सो पाओ···पर उस योग्य अपने को बनाओ।"

अरस्तू ने ही कहा है, "इस दुनिया में सब कुछ है। जो कर्महीन हैं, वह नहीं पाते हैं।"

सचमुच यह एक सच्चाई है।

आपको क्या चाहिए ?

इस पर विचार कीजिए। फिर गंभीरतापूर्वक उसके लिए योजना बनाइए। योजना बनाकर उस पर अमल कीजिए। बराबर प्रयत्नशील रहिए। एक दिन आप अपनी इच्छापूर्ति करके रहेंगे।

कैप्टन स्कॉट की बात लें। कोलंबस की बात करें। एक ध्रुव पर जाना चाहता था। एक भारत की खोज करना चाहता था। योजना बनाई। जहाज़ लिया, साथी लिए, चल पड़े। स्कॉट ध्रुव की ओर गया। कोलंबस समुद्र की लहरों पर। राह भटक गए दोनों। कोलंबस के साथी भूखे-प्यासे। कोलंबस वापस लौटने का नाम नहीं ले रहा था। सबने उसे मार डालने की योजना बनाई। अगले दिन किनारा दिख गया। सब खुश हो गए। कोलंबस अमेरिका के किनारे जा लगा। स्कॉट ध्रुव की खोज में राह भटक गए। उसकी स्लेज गाड़ी के कुत्ते मर गए, परंतु हारकर वह वापस नहीं लौटा। दोनों अपना लक्ष्य पा गए। एक ने ध्रुव खोजा, दूसरे ने अमेरिका। इतिहास के पन्नों पर आज भी उनका गुणगान है।

आवश्यकता है कर्म की। श्रम, परिश्रम और साहस की।

आप सब कुछ पा सकते हैं।

सब कुछ आपके भाग्य में लिखा है। अपने भाग्य-विधाता आप स्वयं हैं। आप अपना भाग्य स्वयं बना और बिगाड़ सकते हैं।

अतएव मैदान में आइए। बिना संघर्ष और परिश्रम के कुछ नहीं मिलता है। अगर आपके पास श्रम है, साहस है आप सब कुछ पा सकते हैं।

यहाँ तक कि जिसकी लाठी उसकी भैंस। जिसका कर्म, उसका फल। आप स्वयं इस पर निर्णय करें। विचार करें। आपको सब मिलेगा।

अपने बलबूते पर आप सब कुछ प्राप्त कर सकते हैं।

अध्यापन संकेत

अध्यापक बच्चों को कर्मठ बनने और विपरीत परिस्थितियों में भी संघर्षरत रहने की प्रेरणा दें। उन्हें भाग्य के भरोसे न बैठने की सीख दें।

शब्दार्थ

क्रिया-कलाप - कार्य; विषमता - भीषणता; गुमराह - भटका हुआ; दशा - अवस्था; सर्वद्रष्टा - जो सब जगह देखें; नितांत - एकदम, बिलकुल; उद्यम - परिश्रम; कर्महीन - जो अच्छा कार्य न करे; अकर्मण्य - निकम्मा; सर्वव्यापी - सबमें रहने वाला, ईश्वर; अवरुद्ध - रोका हुआ, बंद; आध्यात्मिक - आत्मा या परमात्मा से संबंध रखने वाला; प्राकृतिक - स्वाभाविक; अमल - कर्म, कार्य

अभ्यास

पाठ से

मौखिक प्रश्न

(क) भाग्यवाद का प्रचलन संभवतः किसने किया?

(ख) दूसरों की प्रगति देखकर भाग्यवादी क्या कहते हैं?

(ग) भाग्य का असली विधाता कौन है?

(घ) ईश्वर का अस्तित्व क्यों बनाया गया?

लिखित प्रश्न

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए–

(क) हम मन में शक्ति का एकीकरण किस प्रकार करते हैं?

(अ) ईश्वर की बातें करके ⬡ (ब) ईश्वर का नाम लेकर ⬡

(स) अपनी सोच बदलकर ⬡ (द) लोगों को बदलकर ⬡

(ख) आत्मविश्वास को दृढ़ करने के लिए किसका अस्तित्व बनाया गया है?

(अ) बच्चों का ⬡ (ब) ईश्वर का ⬡

(स) मनुष्य का ⬡ (द) इनसान का ⬡

(ग) लेखक ने ईश्वर का निवास कहाँ माना है?

(अ) मंदिर में ⬡ (ब) आकाश में ⬡

(स) घर में ⬡ (द) कण-कण में ⬡

(घ) प्रस्तुत गद्यांश के लेखक कौन हैं?

(अ) अरस्तू (ब) स्कॉट

(स) स्वेट मार्टन (द) वर्टेंड रसेल

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु किसे माना गया है?

(ख) भाग्य मनुष्य को कैसा बना देता है?

(ग) लेखक ने भाग्य की उत्पत्ति कहाँ से मानी है?

(घ) भाग्य की बात का लोमड़ी से क्या संबंध है?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) स्वेट मार्टन के अनुसार सफलता का मूल मंत्र क्या है?

(ख) समाज में फैली विषमता के लिए कौन जिम्मेदार है और क्यों?

(ग) लेखक के अनुसार ईश्वर की रचना किस उद्देश्य से की गई?

(घ) मनुष्य अपने भाग्य का स्वयं ही निर्माता है, स्पष्ट कीजिए।

(ङ) 'भाग्य वास्तव में एक धोखा और अपनी असफलता पर परदा डालने का एक बहाना मात्र है' प्रस्तुत कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।

भाषा-ज्ञान

1. जिस मूल शब्द से क्रियापद बनते हैं, उसे धातु कहा जाता है; जैसे– खा, पी, पढ़, लिख, चल आदि।

निम्नलिखित वाक्यों में कोष्ठक में दी गई धातु का सही क्रिया रूप रिक्त स्थान में भरिए–

(क) कोलंबस के साथी नाव में _____। (बैठ)

(ख) माँ को देखकर बच्चा _____ लगा। (हँस)

(ग) हमें अपना कार्य स्वयं _____ चाहिए। (कर)

(घ) बच्चा घर आकर _____ लगा। (पढ़)

2. **निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–**

(क) सफलता _____ (ख) विश्वास _____ (ग) विवाहित _____

(घ) कर्मण्य _____ (ङ) सामाजिक _____ (च) सत्य _____

3. **निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित वाक्यांश के स्थान पर एक शब्द का प्रयोग कर वाक्य को पुनः लिखिए–**

(क) गेम्स का पीरियड सप्ताह में एक बार होता है, प्रतिदिन नहीं।

_____

(ख) मेरी माता जी ईश्वर को मानने वाली है।

_____

(ग) आजकल इतिहास से संबंधित फिल्में नहीं बनती।

_____

(घ) ईश्वर सब कुछ जानने वाला है।

_____

4. **उदाहरण के अनुसार दिए गए यौगिक शब्दों को अलग-अलग कीजिए–**

(क) महायुद्ध — महा + युद्ध

(ख) आश्चर्यजनक — _____ + _____

(ग) प्रतिनिधि — _____ + _____

(घ) सशस्त्र — _____ + _____

(ङ) स्वराज्य — _____ + _____

(च) देशभक्त — _____ + _____

रचना के क्षण

- 'भाग्यवाद मनुष्य का मित्र है या शत्रु' विषय पर एक अनुच्छेद लगभग 80 शब्दों में लिखिए।

कल्पना व चिंतन

- पाठ में कोलंबस, अरस्तू, बर्टेंड रसेल आदि का ज़िक्र है। इनके संबंध में इंटरनेट से जानकारी प्राप्त करके लिखिए।

क्रिया-कलाप

- 'मनुष्य का कर्म श्रेष्ठ है या भाग्य' विषय पर कक्षा में विचार विमर्श कीजिए।

अध्याय

11.

समय

समय निरंतर गतिमान रहता है, पर हम प्रायः अच्छा समय आने की प्रतीक्षा ही करते रहते हैं, यह सब हमारा आलस्य है, कवि ने यहाँ यही बात कही है।

अभी समय है, अभी नहीं कुछ बिगड़ा है,
देखो अभी सुयोग तुम्हारे पास खड़ा है,
करना है जो काम, उसी में चित्त लगा दो,
आत्मा पर विश्वास करो, संदेह भगा दो।

पूर्ण तुम्हारा मनोभीष्ट क्या कभी न होगा,
होगा तो बस अभी, नहीं तो कभी न होगा,
देख रहे हो श्रेष्ठ समय के किस सपने को,
छलते हो यों हाय स्वयं ही क्यों अपने को।

आवेगा क्या समय जो चला जा रहा,
देखो जीवन व्यर्थ, तुम्हारा छला जा रहा,
तो पुरुषों की भाँति, खड़े हो जाओ अब भी,
करके कुछ जग के बीच, बड़े हो जाओ अब भी।

उद्योगी को कहाँ नहीं सुसमय मिल पाता,
समय नष्ट कर नहीं सौख्य कोई पाता,
आलस ही है करा रहा ये सभी बहाने,
जो करना है करो अभी, कल क्या हो जाने।

तुच्छ कभी तुम नहीं एक पल को भी जानो,
पल-पल से बना हुआ जीवन ही मानो,
इसके सद्व्यय रूप नीर-सिंचन के द्वारा,
हो सकता है हरा-भरा जन्म-तरु यहाँ तुम्हारा।

ऐसा सुसमय भला और तुम कब पाओगे,
खोकर पीछे इसे सर्वथा पछताओगे,
तो इसमें वह काम नहीं क्यों तुम कर जाओ,
हो जिसमें परमार्थ और तुम भी सुख पाओ।

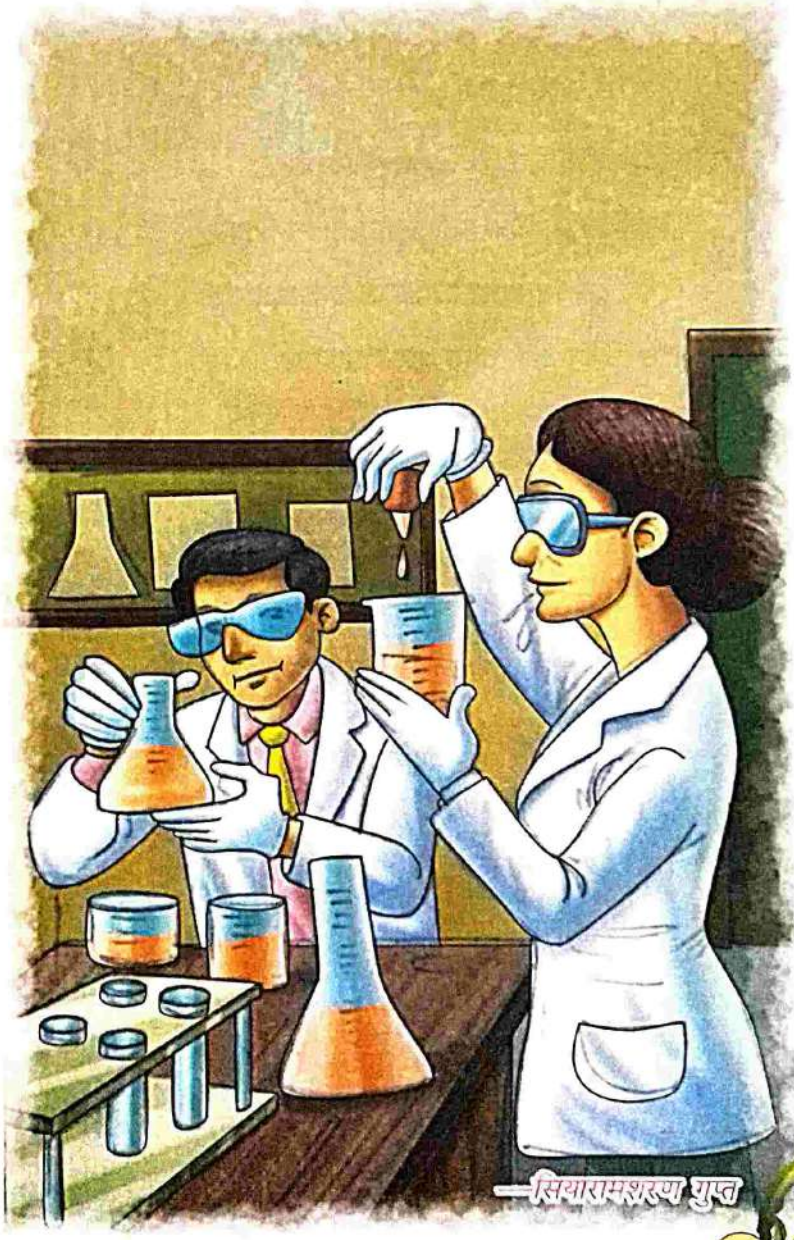

—सियारामशरण गुप्त

अध्यापन संकेत बच्चों को बताएँ कि हमें कभी भी समय व्यर्थ नहीं करना चाहिए क्योंकि गया हुआ समय कभी भी वापस नहीं आता।

शब्दार्थ

सुयोग – अच्छा अवसर; संदेह – शंका; मनोभीष्ट – मन की इच्छा; श्रेष्ठ – सर्वोत्तम; छलना – धोखा देना; उद्योगी – परिश्रमी; सौख्य – सुख; तुच्छ – अति सामान्य; सद्व्यय – अच्छी तरह से खर्च करना; नीर-सिंचन – पानी से सींचना; जन्म तरु – जीवन रूपी वृक्ष; सुसमय – अच्छा समय; परमार्थ – दूसरों की भलाई का कार्य

अभ्यास

कविता से

मौखिक प्रश्न

(क) हमें किसमें चित्त लगाना है?

(ख) जाने वाला समय कब वापस आएगा?

(ग) जीवन किसके मेल से बना हुआ है?

(घ) हमें कैसे काम करने चाहिए?

लिखित प्रश्न

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए–

(क) हमें विश्वास करना होगा-

(अ) दुनिया पर ⬡ (ब) रिश्तेदारों पर ⬡

(स) आत्मा पर ⬡ (द) विद्या पर ⬡

(ख) हमें पछताना पड़ेगा-

(अ) धन खोकर ⬡ (ब) समय खोकर ⬡

(स) यश खोकर ⬡ (द) परिवार खोकर ⬡

(ग) अच्छे समय के सपने देखना-

(अ) बुद्धिमता है ⬡ (ब) आवश्यक है ⬡

(स) अनिवार्य है ⬡ (द) स्वयं के साथ छल करना है ⬡

(घ) इस कविता के कवि हैं-

(अ) मैथिलीशरण गुप्त

(ब) सियारामशरण गुप्त

(स) अज्ञेय

(द) नागार्जुन

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) किस समय की प्रतीक्षा करना स्वयं को छलना होगा?

(ख) कल करने के बहाने क्यों बनाए जाते हैं?

(ग) जीवन में कौन से पल व्यर्थ हैं?

(घ) हमें कैसा कार्य करना चाहिए?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

आशय स्पष्ट कीजिए—

ऐसा सुसमय भला और तुम कब पाओगे, खोकर पीछे इसे सर्वथा पछताओगे,

तो इसमे वह काम नहीं क्यों तुम कर जाओ, हो जिसमें परमार्थ और तुम भी सुख पाओ।

भाषा-ज्ञान

1. 'सु' उपसर्ग लगाकर शब्द बना है 'सुसमय'।

इसी प्रकार 'सु' उपसर्ग लगे अन्य शब्द लिखिए।

_____

_____

_____

_____

_____

_____

2. संधि विच्छेद कीजिए-

(क) परमार्थ _____

(ख) मनोभीष्ट _____

(ग) सर्वोच्च _____

(घ) पदार्पण _____

3. जो शब्द संज्ञा की विशेषता बताते हैं उन्हें **विशेषण** तथा जिनकी विशेषता बताई जाती है, उन्हें विशेष्य कहते हैं।

निम्नलिखित शब्दों में से विशेषण तथा विशेष्य को अलग-अलग करके लिखिए—

	विशेषण	विशेष्य
(क) नया जीवन	_____	_____
(ख) सुंदर समय	_____	_____
(ग) चंचल युवती	_____	_____
(घ) मनमोहक दृश्य	_____	_____
(ङ) उज्ज्वल प्रातः	_____	_____

रचना के क्षण

- भाव-भूमि– क्या आप भी अच्छे समय की प्रतीक्षा में कुछ कार्य टालते रहते हैं? प्रेरणादायक शब्दों या आलोचना का आप पर कैसा प्रभाव पड़ता है? बताइए।

कल्पना व चिंतन

- कल्पना कीजिए कि यदि आपके सामने कुछ करने की चुनौती ही न होती, तो जीवन कैसा होता। जीवन में आप समय की क्या भूमिका मानते हैं? बताइए।

क्रिया-कलाप

- इसी प्रकार की कुछ अन्य प्रेरणादायक कविताएँ ढूँढ़कर लिखिए।

_____

_____

_____

_____

_____

_____

पठन हेतु

मेजर नवीन गुलिया

इस कविता के भाव से मेल खाता यह संस्मरण पढ़िए, जिसमें जीवन की चुनौती का डटकर सामना करने की सच्ची कहानी है।

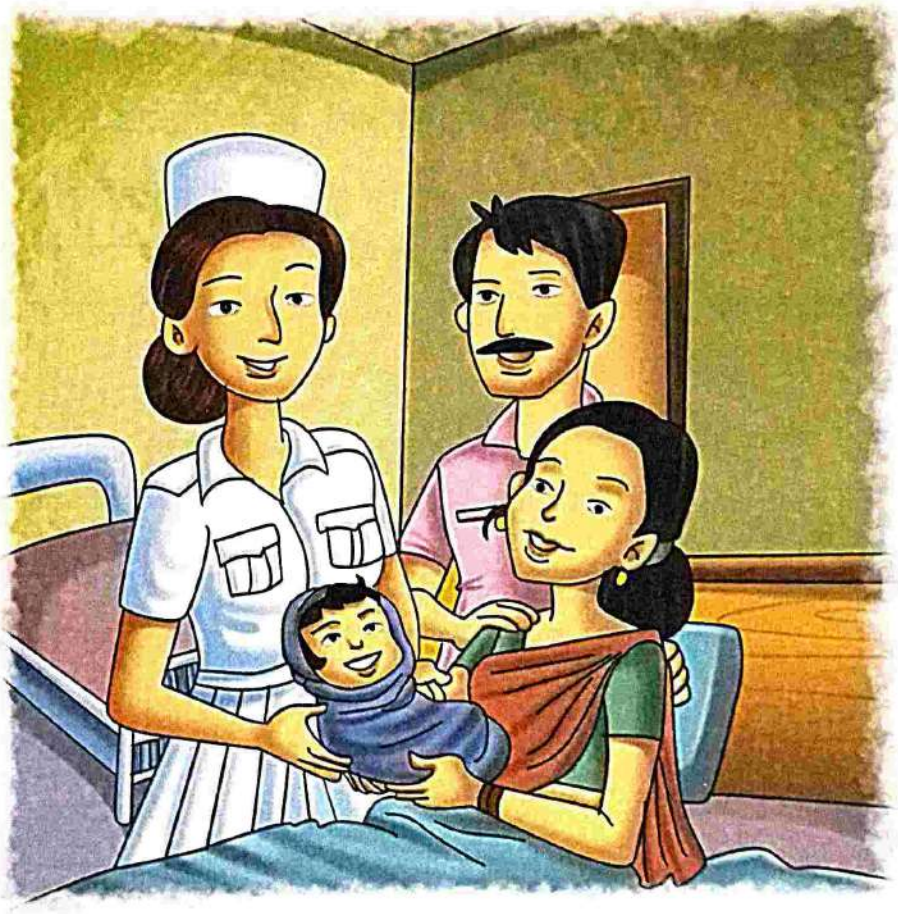

16 जुलाई, 1973 को नई दिल्ली के आर्मी अस्पताल में श्रीमती निर्मला देवी एवं श्री नारायण सिंह गुलिया जी के यहाँ एक पुत्र ने जन्म लिया, जिसका नाम रखा गया नवीन। जी हाँ, यह नवीन गुलिया मैं ही हूँ, अर्थात् मेरा ही जन्म 16 जुलाई को हुआ। मेरे पिता सेना में अधिकारी थे।

ऐसा नहीं है कि होश सँभालते ही मैंने जो कुछ पाना चाहा, वो सब मुझे मिलता गया या मैं जीवन में कभी हारा नहीं। बस, फ़र्क सिर्फ़ यह था कि हार ने मुझे तोड़ा नहीं, बल्कि आगे बढ़ने का हौंसला ही दिया। मैं मानता हूँ 'किस्मत एक बार रोक सकती है, हो सकता है दो बार, तीन बार या चार बार रोके, पर हर बार नहीं'।

बचपन से ही मुझमें कुछ कर गुज़रने की तीव्र इच्छा थी, किंतु मैं पढ़ाई और खेल में अच्छा नहीं कर पा रहा था। मेरे साथी मेरा मज़ाक उड़ाते थे और कोई भी मुझे अपनी टीम में नहीं लेना चाहता था। तब, एक दिन मैंने ठान लिया कि मैं खेल और पढ़ाई दोनों में अव्वल आकर दिखाऊँगा। मेरे ठानते ही, मेरी किस्मत ने भी मेरा साथ देना शुरू कर दिया।

18 वर्ष की आयु में मैंने भारतीय सेना में प्रवेश के लिए राष्ट्रीय रक्षा अकादमी की राष्ट्रीय प्रवेश परीक्षा में उत्तम स्थान प्राप्त किया, और इस अकादमी में दाखिला लिया। मैं सेना में कमांडो अफ़सर बनना चाहता था। चार साल के कठोर प्रशिक्षण के बाद मैं अपने लक्ष्य के काफ़ी करीब था, जब अंतिम प्रशिक्षण के अंतर्गत मुझे एक सैन्य हादसे में गंभीर चोट लगी। तब कमांडो अफ़सर बनना तो दूर, मेरे बचने की भी उम्मीद नहीं थी। डॉक्टरों ने भी

कह दिया मैं शायद तीन दिन भी जीवित न रह पाऊँ। पूरा शरीर लकवाग्रस्त हो गया था। गरदन भी नहीं हिला सकता था। पूरा शरीर मशीनों से जकड़ा हुआ था।

एक खिलाड़ी के रूप में मैंने हमेशा यही सीखा कि परिस्थितियाँ कैसी भी हों, हमें हमेशा प्रयत्नशील रहना चाहिए। इसलिए उस हादसे के बाद, दो साल तक बिस्तर पकड़ने पर भी मेरे अंदर जोश व उत्साह बरकरार था। मुझे याद है कि एक बार मैं कुछ निराश-सा था कि तभी मेरी नज़र एक मकड़ी पर गई। मकड़ी अपना जाला बुन रही थी। सफ़ाई कर्मचारी उसके जाले को रोज़ साफ़ कर देते, पर उसने हिम्मत न हारी, वह रोज़ उसी तरह प्रयत्न करती रहती। मकड़ी के उस प्रयत्न ने मेरे अंदर यह जोश भरा कि जब मकड़ी हार नहीं मानती, तो मैं क्यों हार मानूँ? मकड़ी ने मेरे अंदर उत्साह व आगे बढ़ने की ललक भर दी।

यह तो पता था कि अब आर्मी में तो नहीं जा सकता, पर यह भी पता था कि इस तरह बिस्तर पर भी पड़ा नहीं रह सकता। शरीर तो हिल-डुल नहीं सकता था, पर दिमाग चल रहा था। कुछ समय बाद मैंने पढ़ना शुरू किया। किताब इस तरह मेरे सामने लटका दी जाती, कि मैं उसे पढ़ सकूँ।

मैंने कंप्यूटर में मास्टर की डिग्री हासिल की। कई और प्रतियोगिताएँ जीतीं। आत्म-निर्भर बनने के लिए मैंने अपने लिए गाड़ी मॉडिफाई की। इस गाड़ी से मैंने न केवल आस-पास की सैर की, बल्कि 18632 फीट ऊँचे पहाड़ी दर्रे 'मर्सीमिक ला' पर पहुँचकर सितंबर 2004 में वर्ल्ड रिकॉर्ड स्थापित किया। विमान और ग्लाइडर उड़ाकर आसमान को भी छूने का प्रयास किया।

मेरा सपना था कि मैं गरीब और बेसहारा बच्चों की मदद करूँ और उन्हें जीने की एक नई राह दिखाऊँ, इसलिए मैंने 'अदा-अपनी दुनिया अपना आशियाना' नामक संस्था का निर्माण किया।

मुझे दस से अधिक राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिल चुके हैं, जिनमें हमारे भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ ए.पी.जे. अब्दुल कलाम द्वारा दिया गया 'नेशनल रोल मॉडल, अवॉर्ड भी शामिल है। सेना प्रमुख ने सन् 2005 में मुझे प्रशस्ति पत्र से भी सम्मानित किया। मेरा मानना है कि, 'हमारे शरीर और दिमाग में असीमित योग्यता होती है। हमारी योग्यता हमें काम करने से नहीं रोकती, हमारी सोच हमें रोकती है। इसलिए यदि कोई मुझे कोई डिसेबल कहता है तो मैं अपने आपको समझाता हूँ कि सही मायनों में देखा जाए, तो मैं डिसेबल नहीं बल्कि 'डब्बलि एबल' हूँ।'

झुक जाएगी दुनिया तेरे कदमों में
बस तू अपने अंदर विश्वास तो जगा,
इक कदम तो उठा।

—नवीन गुलिया

अध्याय

12.

नए जमाने के स्वाद

आजकल जीवन-शैली में जो परिवर्तन आए हैं, उन्हें देखकर पुरानी परंपरा पर चलने वालों को आश्चर्य होना स्वाभाविक है। नए जीवन-यापन के साथ-साथ खाने-पीने में आए बदलावों की यहाँ चर्चा की गई है।

पिछले दस-पंद्रह वर्षों में हमारी खान-पान की संस्कृति में एक बड़ा बदलाव आया है। इडली-डोसा-बड़ा-साँभर-रसम अब केवल दक्षिण भारत तक सीमित नहीं हैं। ये उत्तर भारत के भी हर शहर में उपलब्ध हैं और अब तो उत्तर भारत की 'ढाबा' संस्कृति लगभग पूरे देश में फैल चुकी है। अब आप कहीं भी हों, उत्तर भारतीय रोटी-दाल-साग आपको मिल ही जाएँगे। 'फास्ट फूड' (तुरंत भोजन) का चलन भी बड़े शहरों में खूब बढ़ा है। इस 'फास्ट फूड' में बर्गर, नूडल्स जैसी कई चीजें शामिल हैं। एक जमाने में कुछ ही लोगों तक सीमित 'चाइनीज़ नूडल्स' अब हर घर की खाने की मेज़ पर सजे रहते हैं।

'टू मिनट्स नूडल्स' के पैकेटबंद रूप से तो कम-से-कम बच्चे-बूढ़े सभी परिचित हो चुके हैं। इसी तरह नमकीन के कई स्थानीय प्रकार अभी तक भले मौज़ूद हों, लेकिन आलू चिप्स के कई विज्ञापित रूप तेज़ी से घर-घर में अपनी जगह बनाते जा रहे हैं।

गुजराती ढोकला-गाठिया भी अब देश के कई हिस्सों में स्वाद लेकर खाए जाते हैं और बंगाली मिठाइयों की केवल रसभरी चर्चा ही नहीं होती, वे कई शहरों में पहले की तुलना में अधिक उपलब्ध हैं। यानी स्थानीय व्यंजनों के साथ ही अब अन्य प्रदेशों के व्यंजन-पकवान भी प्राय: हर क्षेत्र में मिलते हैं और मध्यमवर्गीय जीवन में भोजन-विविधता अपनी जगह बना चुकी है।

कुछ चीज़ें और भी हुई हैं। मसलन अंग्रेज़ी राज तक जो ब्रेड केवल साहबी ठिकानों तक सीमित थी, वह कस्बों तक पहुँच चुकी है और नाश्ते के रूप में लाखों-करोड़ों भारतीय घरों में सेंकी-तली जा रही है। खान-पान की इस बदली हुई संस्कृति से सबसे अधिक प्रभावित नई पीढ़ी हुई है, जो पहले के स्थानीय व्यंजनों के बारे में बहुत कम जानती है, पर कई नए व्यंजनों के बारे में बहुत कुछ जानती है। स्थानीय व्यंजन भी तो अब घटकर कुछ ही चीज़ों तक सीमित रह गए हैं। मुंबई की पाव-भाजी और दिल्ली के छोले-कुलचों की दुनिया पहले की तुलना में बड़ी ज़रूर है, पर अन्य स्थानीय व्यंजनों की दुनिया में छोटी हुई है। जानकार ये भी बताते हैं कि मथुरा के पेड़ों और आगरा के पेठे-नमकीन में अब वह बात कहाँ रही! यानी जो चीज़ें बची भी हुई हैं, उनकी गुणवत्ता में फ़र्क पड़ा है। फिर मौसम और ऋतुओं के अनुसार फलों-खाद्यान्नों से जो व्यंजन और पकवान बना करते थे, उन्हें बनाने की फ़ुरसत भी अब कितने लोगों को रह गई है। अब गृहणियों या कामकाजी महिलाओं के लिए खरबूज़े के बीज सुखाना-छीलना और फिर उनसे व्यंजन तैयार करना सचमुच दु:साध्य है।

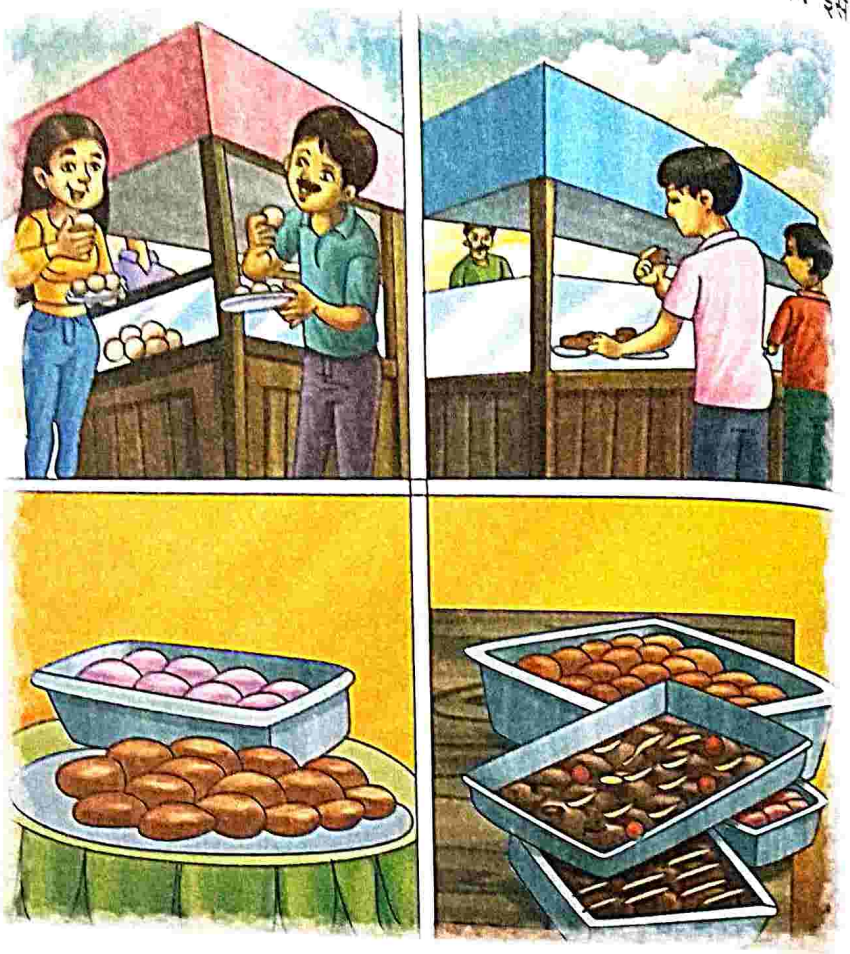

यानी हम पाते हैं कि एक ओर तो स्थानीय व्यंजनों में कमी आई है, दूसरी ओर वे ही देशी-विदेशी व्यंजन अपनाए जा रहे हैं, जिन्हें बनाने-पकाने में सुविधा हो। जटिल प्रक्रियाओं वाली चीज़ें तो कभी-कभार व्यंजन पुस्तिकाओं के आधार पर तैयार की जाती हैं। अब शहरी जीवन में जो भागमभाग है, उसे देखते हुए यह स्थिति स्वाभाविक लगती है। फिर कमरतोड़ महँगाई ने भी लोगों को कई चीज़ों से धीरे-धीरे वंचित किया है। जिन व्यंजनों में बिना मेवों के स्वाद नहीं आता, उन्हें बनाने-पकाने के बारे में भला कौन चार बार नहीं सोचेगा!

खान-पान की जो एक मिश्रित संस्कृति बनी है, इसके अपने सकारात्मक पक्ष भी हैं। गृहणियों और कामकाजी महिलाओं को अब जल्दी तैयार हो जाने वाले विविध व्यंजनों की विधियाँ उपलब्ध हैं। नयी पीढ़ी को देश-विदेश के व्यंजनों को जानने का सुयोग मिला है—भले ही किन्हीं कारणों से और किन्हीं खास रूपों में (क्योंकि यह भी एक सच्चाई है कि ये विविध व्यंजन इन्हें शुद्ध रूप में उपलब्ध नहीं हैं।)

आज़ादी के बाद उद्योग-धंधों, नौकरियों-तबादलों का जो एक नया विस्तार हुआ है, उसके कारण भी खान-पान की चीज़ें किसी एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में पहुँची हैं। बड़े शहरों के मध्यमवर्गीय स्कूलों में जब दोपहर के 'टिफिन' के वक्त बच्चों के टिफिन-डिब्बे खुलते हैं, तो उनसे विभिन्न प्रदेशों के व्यंजनों की एक खुशबू उठती है।

हम खान-पान से भी एक-दूसरे को जानते हैं। इस दृष्टि से देखें, तो खान-पान की नई संस्कृति में हमें राष्ट्रीय एकता के लिए नए बीज भी मिल सकते हैं। बीज भलीभाँति तभी अंकुरित होंगे, जब हम खान-पान से जुड़ी हुई दूसरी चीज़ों की ओर भी ध्यान देंगे। मसलन हम उस बोली-बानी, भाषा-भूषा आदि को भी किसी-न-किसी रूप में ज्यादा जानेंगे, जो किसी खान-पान विशेष से जुड़ी हुई है।

इसी के साथ ध्यान देने की बात यह है कि स्थानीय व्यंजनों का पुनरुद्धार भी ज़रूरी है, जिन्हें अब 'एथनिक' कहकर पुकारने का चलन बढ़ा है। ऐसे स्थानीय व्यंजन केवल पाँच सितारा होटलों के प्रचारार्थ नहीं छोड़ दिए जाने चाहिए। पाँच सितारा होटलों में वे कभी-कभार मिलते रहें, पर घरों-बाज़ारों से गायब हो जाएँ, तो यह एक दुर्भाग्य ही होगा। अच्छी तरह बनाई-पकाई गई पूड़ियाँ-कचौड़ियाँ-जलेबियाँ भी अब बाज़ारों से गायब हो रही हैं। मौसमी सब्ज़ियों से भरे समोसे भी अब कहाँ मिलते हैं? उत्तर भारत में उपलब्ध व्यंजनों की भी दुर्गति हो रही है।

अचरज नहीं कि पहले उत्तर भारत में जो चीज़ें गली-मुहल्लों की दुकानों में आम हुआ करती थीं, उन्हें अब खास दुकानों में तलाशा जाता है। यह भी एक कड़वा सच है कि कई स्थानीय व्यंजनों को हमने तथाकथित आधुनिकता के चलते छोड़ दिया है और पश्चिम की नकल में बहुत-सी ऐसी चीज़ें अपना ली हैं, जो स्वाद, स्वास्थ्य और सरसता के मामले में हमारे बहुत अनुकूल नहीं हैं।

हो यह भी रहा है कि खान-पान की मिश्रित संस्कृति में हम कई बार चीज़ों का असली और अलग स्वाद नहीं ले पा रहे। अकसर प्रीतिभोजों और पार्टियों में एक साथ ढेरों चीज़ें रख दी जाती हैं और उनका स्वाद गड्ड-मड्ड होता रहता है। खान-पान की मिश्रित या विविध संस्कृति हमें कुछ चीज़ें चुनने का अवसर देती है, हम उसका लाभ प्राय: नहीं उठा रहे हैं। हम अकसर एक ही प्लेट में कई तरह के और कई बार तो बिल्कुल विपरीत प्रकृति वाले व्यंजन परोस लेना चाहते हैं। इसीलिए खान-पान की जो मिश्रित-विविध संस्कृति बनी है—और लग यही रहा है कि यही और अधिक विकसित होने वाली है—उसे तरह-तरह से जाँचते रहना जरूरी है।

—संकलित

अध्यापन संकेत बच्चों को बताएँ कि उन्हें सभी मौसमों के फल तथा सब्ज़ियों को खाना चाहिए, तभी वे स्वस्थ रह सकते हैं।

शब्दार्थ

दु:साध्य – कठिन; मध्यमवर्गीय – न अधिक धनी, न अधिक निर्धन; गुणवत्ता – विशेषता का स्तर; सरसता – रस से पूर्ण; अनुकूल – माफ़िक; स्थानीय – स्थान विशेष के; एथनिक – पुराना किंतु राजसी।

अभ्यास

पाठ से

मौखिक प्रश्न

(क) इडली–डोसा खाने का प्रचलन अब कहाँ-कहाँ तक हो गया है?

(ख) फास्ट फूड में क्या-क्या चीज़ें शामिल हैं?

(ग) खान-पान की बदली हुई संस्कृति से कौन पीढ़ी सबसे अधिक प्रभावित हुई है?

(घ) खाने की कौन सी पुरानी चीज़ें अब बाज़ार से गायब हो रही हैं?

लिखित प्रश्न

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए–

(क) अब वे व्यंजन अपनाए जा रहे हैं, जो-

(अ) खट्टे हो ⬡ (ब) मीठे हो ⬡

(स) चटपटे हो ⬡ (द) जिन्हें बनाने-पकाने में सुविधा हो ⬡

(ख) इस खान-पान से भी-

(अ) एक-दूसरे को जानते हैं ⬡ (ब) कतराते हैं ⬡

(स) बलवान बनते हैं ⬡ (द) नुकसान करते हैं ⬡

(ग) आगरा के पेठे और नमकीन-

(अ) अब कोई नहीं खाता ⬡ (ब) हर जगह मिल जाते है ⬡

(स) में अब वो बात नहीं रही ⬡ (द) का नामोनिशान न रहा ⬡

(घ) नौकरियों और तबादलों से-

(अ) संस्कृति को नुकसान हुआ ⬡

(ब) एक स्थान के खान-पान की चीजें दूसरे स्थान पर पहुँचीं ⬡

(स) हानि ही हानि हुई ⬡

(द) परिवार टूट गए ⬡

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) उत्तर भारत की ढाबा संस्कृति कहाँ तक फैल चुकी है?

(ख) खान-पान की मिश्रित संस्कृति का सकारात्मक पक्ष क्या है?

(ग) खान-पान की संस्कृति से राष्ट्रीय एकता के बीज कैसे विकसित हो सकते हैं?

(घ) कौन से स्थानीय व्यंजन अब बाज़ारों से गायब हो रहे हैं?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) किन व्यंजनों की दुनिया आजकल बड़ी हुई है और किन व्यंजनों की छोटी?

(ख) अंग्रेज़ों के जमाने में ब्रेड की उपलब्धता कहाँ तक थी और अब कहाँ तक है?

भाषा ज्ञान

1. सही शीर्षक के नीचे रखिए-

होटल, संस्कृति, स्थानीय, जटिल, प्रक्रिया, चीज़, मौसम, दुर्गति, पार्टी, ब्रेड, बाज़ार, बर्गर, नूडल्स, चाइनीज़

हिंदी	_____	_____	_____	_____
	_____	_____	_____	_____
अंग्रेज़ी	_____	_____	_____	_____
	_____	_____	_____	_____
उर्दू	_____	_____	_____	_____
	_____	_____	_____	_____

2. संधि विच्छेद कीजिए-

(क) प्रचारार्थ _____

(ख) दुर्भाग्य _____

(ग) खाद्यान्न _____

(घ) पुनरुद्धार _____

(ङ) दुर्गति _____

3. वाक्य शुद्ध कीजिए-

(क) संस्कृति में बदलाव आई है।

_____

(ख) खान-पान पर उचित ध्यान देनी चाहिए।

_____

(ग) गृहणियाँ आजकल नौकरी भी करने लगा है।

(घ) सभी को जल्दबाजी लगा रहता है।

रचना के क्षण

- भाव-भूमि - 'जीवन में भोजन का स्थान' इस विषय पर अपने भाव प्रकट कीजिए।

कल्पना व चिंतन

- कल्पना कीजिए यदि प्रतिदिन एक ही प्रकार का भोजन करना पड़े, तो कैसा अनुभव होगा। 'विविधता' और 'परिवर्तन' क्यों आवश्यक है? इस विषय पर चिंतन-मनन कीजिए।

क्रिया-कलाप

- आप जो-जो व्यंजन बनाना जानते हैं, उसकी एक सूची बनाइए और उनमें से किसी एक व्यंजन को बनाने की विधि लिखिए।

पठन हेतु

सागर और मेघ

सागर – मेरे हृदय में मोती भरे हैं।

मेघ – हाँ, वे ही मोती जिनका कारण है— मेरी बूँदें।

सागर – हाँ, हाँ वही वारि-वारि, जो मुझसे हरण किया जाता है। चोरी का गर्व!

मेघ – हाँ, हाँ वही जिसको मुझसे पाकर बरसात की उमड़ी नदियाँ तुझे भरती हैं।

सागर – बहुत ठीक! क्या आठ महीने नदियाँ मुझे कर (टैक्स) नहीं देतीं?

मेघ – *(मुस्कराकर)* अच्छी याद दिलाई। वे मेरा बहुत-सा दान पृथ्वी के **पास धरोहर रख** छोड़ती हैं, उसी से कर देने की निरंतरता चलती है।

सागर – वाष्पमय शरीर! क्या बढ़-चढ़कर बातें करता है। अंत में तुझे भी गिरकर मुझमें ही मिलना पड़ेगा।

मेघ – खार की खान! संसार भर से नीच! सारी पृथ्वी के विकार! उसे मैं शुद्ध और मिष्ठ बनाकर उच्चतम स्थान देता हूँ, फिर तुम्हें अमृत वारि-धार से तृप्त और शीतल करता हूँ। उसी का यह फल है।

सागर – हाँ, हाँ, दूसरे की करतूत पर गर्व! सूर्य का यश अपने पल्ले!

मेघ – *(अट्टाहस करता है)* क्यों, मैं चार महीने सूर्य को विश्राम जो देता हूँ। वह उसी के निमित्त मे यह करता है। उसका यह कर्म मेरी संपत्ति है। वह तो बदले में केवल विश्राम का भागी है।

सागर – और मैं जो उसे प्रतिदिन विश्राम देता हूँ।

मेघ – उसके बदले तो वह तेरा जलशोषण करता है।

सागर – तब भी मैं अपना व्रत नहीं छोड़ता।

मेघ – *(इठलाकर)* धन्य रे व्रती! मानो श्रद्धापूर्वक तू सूर्य को वह दान देता हो। क्या तेरा जल वह हठात् नहीं भरता?

सागर – *(गंभीरता से)* **और बादल जो मुझे नित्य जलाया करता है, तो भी मैं उसे छाती से लगाए रहता हूँ। तनिक इस** पर ध्यान दो।

मेघ – *(मुस्करा दिया)* हाँ, उसमें तेरा और कुछ नहीं, शुद्ध स्वार्थ है, क्योंकि वह तुझे यदि जलाता न रहे तो तेरी मर्यादा न रह जाए।

सागर – *(गरजकर)* तो उसमें मेरी क्या हानि! हाँ प्रलय अवश्य हो जाए।

मेघ – *(एक साँस लेकर)* आह! **हिंसावृत्ति। और क्या**, मर्यादानाश क्या कोई साधारण बात है?

सागर – हो हुआ करे! मेरा आयाम तो बढ़ जाएगा।

मेघ – आह! उच्छृंखलता की इतनी बड़ाई।

सागर – अपनी ओर तो देख जो बादल होकर आकाश भर में इधर से-उधर मारा-मारा फिरता है।

मेघ – धन्य तुम्हारी शान! मैं यदि सारे आकाश में घूम-फिर के संसार का निरीक्षण न करूँ और जहाँ आवश्यकता हो, जीवन-दान न करूँ, तो रस नीरस हो जाए। तू नीचे रहने वाला हम ऊपर रहने वालों के इस तत्व को क्या जाने?

सागर – यदि तू मेरे लिए ऊपर है, तो मैं भी तेरे लिए ऊपर हूँ, क्योंकि हम दोनों का आकाश एक ही है।

मेघ – हाँ, नि:संदेह ऐसी दलील वे ही लोग दे सकते हैं, जिनके हृदय में कंकड़-पत्थर और शंख-घोंघे भरे हैं।

सागर – बलिहारी तुम्हारी बुद्धि के, जो रत्नों को कंकड़-पत्थर और मोतियों को सीप-घोंघे समझते हो।

मेघ – *(बड़े वेग से गड़गड़ करके हँसता हुआ।)* तुम्हारे रत्न तो मथकर कभी के देवताओं ने निकाल लिए अब तुम इन्हीं को रत्न समझ बैठे हो।

सागर – और मनुष्य जो इन्हें निकालने के लिए नित्य इतना श्रम करता है।

मेघ – वे अमीरों की झूठी स्पर्धा करने में मारे जाते हैं।

सागर – अच्छा! जिनका स्वरूप प्रतिक्षण बदला करता है, उनकी दलील का कोटिक्रम ऐसा ही होता है।

मेघ – और जो क्षण भर स्थिर नहीं रह सकते, उनके तर्क का नमूना तुम्हारी बातें हैं, क्यों है न?

सागर – अरे! अपनी सीमा में रमने की मौज़ को अस्थिरता समझने वाले मूर्ख! तू ढेर-सा हल्ला ही करना जानता है कि....।

मेघ – हाँ गरजता हूँ तो बरसता भी हूँ। तू–तो --------

सागर – यह भी क्यों नहीं कहता कि वज्र भी निपातित करता हूँ। करना जानता है कि --------।

मेघ – हाँ, तू संसार को दलित करने वाली उच्छृंखलता का पक्ष क्यों न लेगा, तू तो उन्हें छिपाता है न! जगह देना और संसार को सदैव भ्रम में डाले रहना।

सागर – मैं दीनों की शरण अवश्य हूँ।

मेघ – सच है अपराधियों के संगी। यही दीनों की सहायता है कि संसार के उत्पातियों और अपराधियों को जगह देना और संसार को सदैव भ्रम में डाले रहना।

सागर – दंड उतना ही देना चाहिए कि दंडित चेत जाए, उसे त्रास हो जाए, अगर वह अपाहिज हो गया तो?

मेघ – हाँ, यह भी कोई नीति है कि आततायी नित्य अपना सिर उठाना चाहे और क्षत्रिय उसी की चिंता में नित्य शस्त्र लिए खड़ा रहे, अपने राज्य की कोई उन्नति न करने पाए।

सागर – एक छोटे-से मैनाक की इतने बड़े विश्व में क्या गिनती?

मेघ – जो अक्ल की एक बूँद की, मनों दूध में। तू उस क्षात्रधर्म की सूक्ष्मता को क्या समझे!

सागर – और तूने हाथ में नर-कंकाल का एक टुकड़ा ले लिया कि बड़ा बृहस्पति बन बैठा।

मेघ – आहा, देवराज के शस्त्र की यह अवमानना! तू तो साठ हज़ार मर्त्यों का द्रव है।

सागर – तो क्या यह बात भी सत्य नहीं कि वज्र की रचना के लिए तपस्वी की हत्या कराई गई?

मेघ – हाँ, कुलिश ने अपनी उत्पत्ति से दधीचि की तपस्या सफल कर दी थी।

सागर – तुम लोग जान लेना कोई बात ही नहीं समझते।

मेघ – हम हत्या, वध आलंभन, बलिदान, हिंसा, नाश आदि का विभेद जानते हैं। इन गहन विषयों को तू क्या समझे?

सागर – मैं हत्यारों से बात करना नहीं चाहता।

मेघ – और मैं उन दुर्बल हृदय वालों से बात नहीं करना चाहता, जो कायरता को धर्मभीरुता मानते हैं।

—राय कृष्ण दास

अध्याय

13. शास्त्री जी

लालबहादुर शास्त्री स्वतंत्र भारत के दूसरे प्रधानमंत्री थे। यहाँ उन्हीं के जीवन की आंतरिक झाँकी दी गई है, जिनसे उनके विशेष गुणों का पता चलता है।

जब लालबहादुर जी प्रधानमंत्री चुने गए, तब कई महीनों तक लोगों में यह कानाफूसी चलती रही कि प्रधानमंत्री तो वे चुन लिए गए हैं, लेकिन मुल्क को वे चला सकेंगे या नहीं, यह अलग बात है। उस समय मैंने एक छोटे-से निबंध में यह इशारा किया था कि जो लोग लालबहादुर जी को दूध और बताशा समझ रहे हैं, वे गलती पर हैं। यह वह बकरी है, जिसकी टाँगें इस्पात की है। विनम्रता और सादगी लालबहादुर जी के सबसे बड़े गुण हैं, लेकिन वे इतने सीधे नहीं हैं कि लोग उन्हें चकमा दे जाएँ, न इतने विनम्र हैं कि जो चाहें, उन्हें झुका दे।'

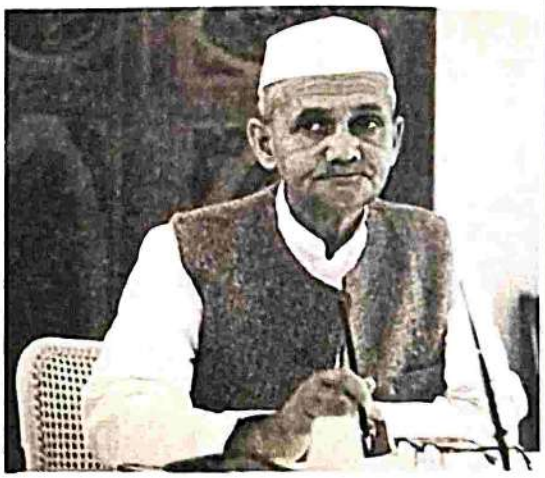

शास्त्री जी ने प्रधानमंत्री की गद्दी पर आकर यह प्रमाणित कर दिया कि इस पद के वे सर्वथा योग्य थे। अपने आखिरी दिनों में उन्होंने दृढ़ता, निर्भीकता, आत्म-निर्भरता, सूझ-बूझ और बहादुरी के जो चमत्कार दिखाए, उन्हें देखकर तो यही कहने को मन चाहता है कि भारत के सभी प्रधानमंत्री अगर लालबहादुर जी के समान हो जाएँ, तो सिर्फ़ पच्चीस वर्षों में यह देश संसार का अग्रणी देश हो सकता है।

शास्त्री जी लगभग देहाती आदमी थे, लेकिन देहाती वे उस अर्थ में थे, जिस अर्थ में ऋषि देहाती होता है। वशिष्ठ ऋषि थे, जंगल में रहते थे, मगर सारी अयोध्या उनके अधीन थी। चाणक्य मौर्य-साम्राज्य के भाग्य-विधाता थे, मगर खुद उनकी झोंपड़ी पर लौकी की लता तनती थी। शास्त्री जी भी तीस वर्षों तक राजनीति में रहे, मगर अपना घर वे कहीं भी खड़ा नहीं कर सके। क्या ऋषि इससे भी बड़ा मनुष्य होता है?

उपर्युक्त विचार रामधारी सिंह दिनकर के संस्मरण 'शास्त्री जी' से हैं। शास्त्री जी के व्यक्तित्व पर 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात' लोकोक्ति बिल्कुल खरी उतरती है। बचपन में उन्हें नन्हे के नाम से पुकारा जाता था। छोटी उम्र में ही उनके पिता की मृत्यु हो गई थी। उनकी माँ उन्हें लेकर मौसी के यहाँ आ गई थी।

एक दिन की बात है नन्हे अपने दोस्तों के साथ खेल रहा था। खेलते-खेलते ही बच्चे बगीचे में जा घुसे और फलों को तोड़ने लगे। इतने में माली आ गया। बस फिर क्या था। माली देखते ही सब बच्चे सिर पर पैर रखकर भागे, पर नन्हे माली की पकड़ में आ गया। माली ने आव देखा न ताव, नन्हे को ताबड़-तोड़ मारना शुरू कर दिया।

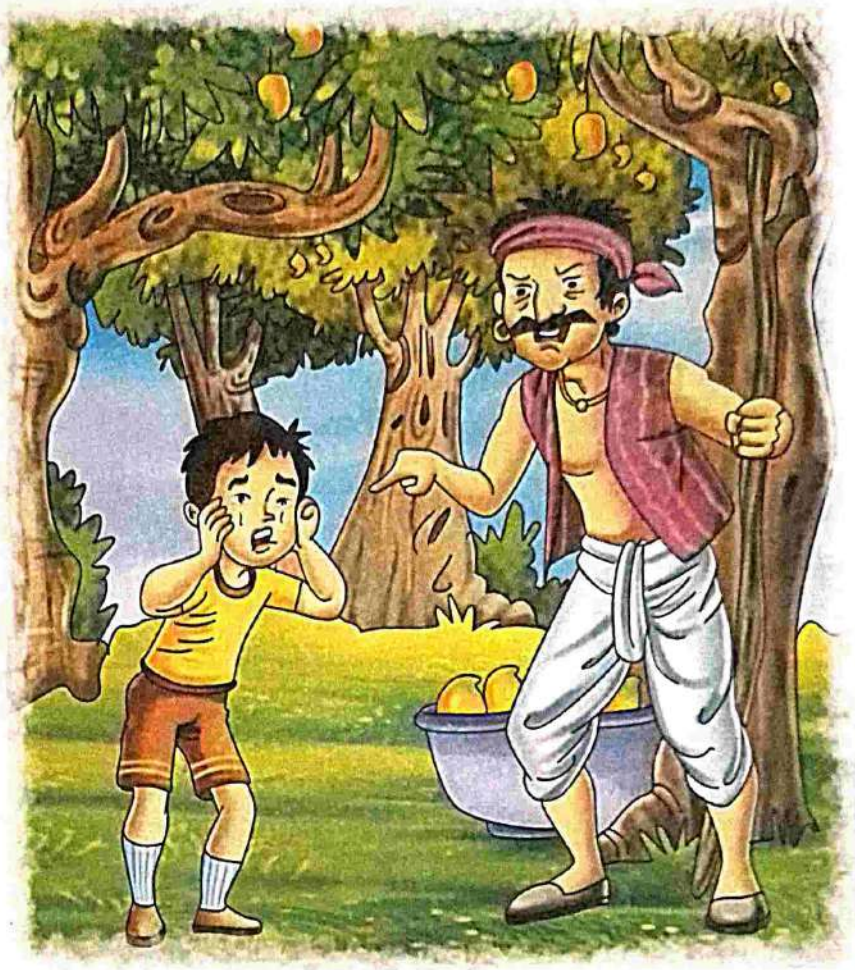

नन्हे माली की मार से घबराया और रोते-रोते बोला, 'माली भैया, मेरे पिता जी नहीं हैं, क्या इसलिए तुम मुझे इतनी बुरी तरह मार रहे हो?' इतना सुनते ही माली का दिल भर आया। उसे नन्हे पर दया आ गई। उसने नन्हे को समझाया कि, 'बेटे, अगर तुम्हारे पिता नहीं हैं, तब तो तुम्हें बिल्कुल शरारत नहीं करनी चाहिए, बल्कि अच्छी आदतों को सीखना चाहिए, ताकि तुम अपनी माँ का सहारा बन सको।' माली की यह बात नन्हे के मन में उतर गई। उसने शरारतें करना छोड़ दिया और पढ़ाई में मन लगाने लगा।

नन्हे का जन्म 2 अक्टूबर, 1904 को मुगलसराय (अब दीनदयाल उपाध्याय नगर) के एक गरीब परिवार में हुआ। इनके पिता का नाम शारदाप्रसाद वर्मा और माता का नाम रामदुलारी देवी था। माता-पिता ने इनका नाम लालबहादुर रखा। पिता वाराणसी की एक पाठशाला में अध्यापक थे। तनख्वाह बहुत कम थी और मुश्किल से गुज़ारा होता। डेढ़ साल की उम्र में ही पिता का साया उन पर से उठ गया। पिता की मृत्यु के बाद परेशानियों का पहाड़ ही उन पर टूट पड़ा। रिश्तेदारों की सहायता से माँ-बेटे का गुज़ारा होता था।

बचपन से ही लालबहादुर में पढ़ने की प्रबल चाह थी। इसलिए, मुगलसराय से प्राथमिक पाठशाला की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास करके, वह वाराणसी के हरिश्चंद्र हाईस्कूल में भरती हो गए। मुगलसराय और वाराणसी के मध्य गंगा नदी बहती है। लालबहादुर रोज़ गंगा पार करके स्कूल जाते थे। दिन भर पढ़ने के बाद गंगा पार करके घर आते थे। रोज आने-जाने से मल्लाह उन्हें पहचानने लगा था।

एक दिन स्कूल से वापस वह गंगा के तट पर तो आए पर नाव पर नहीं चढ़े। मल्लाह ने उनसे पूछा, 'क्या बात है भैया, आज घर नहीं जाना क्या?' लालबहादुर ने धीमे से कहा 'आज तुम्हें उतराई देने के पैसे मेरे पास नहीं है।' मल्लाह लालबहादुर की बात सुनकर हँस पड़ा और बोला कि, 'आज तुम्हारे पास पैसे नहीं है इसलिए क्या नाव पर नहीं चढ़ोगे? आओ, आज मैं तुम्हें बिना पैसे के ही घर लिए चलता हूँ।'

मल्लाह की बात सुनकर लालबहादुर के आत्म-सम्मान को ठेस पहुँची। उसने नाराज़गी से कहा, 'मैं भला मुफ़्त में तुम्हारी नाव पर क्यों चढ़ूँ?' मल्लाह उनकी यह बात सुनकर दंग रह गया और फिर खुश होकर बोला, 'तुम तो सचमुच बड़े अच्छे लड़के हो। मुझे जानकर बड़ी खुशी हुई कि तुम मुफ़्त में सवारी नहीं करना चाहते। ठीक है, तुम मुफ़्त में मत चलो, मैं तुमसे पैसे बाद में ले लूँगा। यह उतराई उधार रहीं तुम पर।'

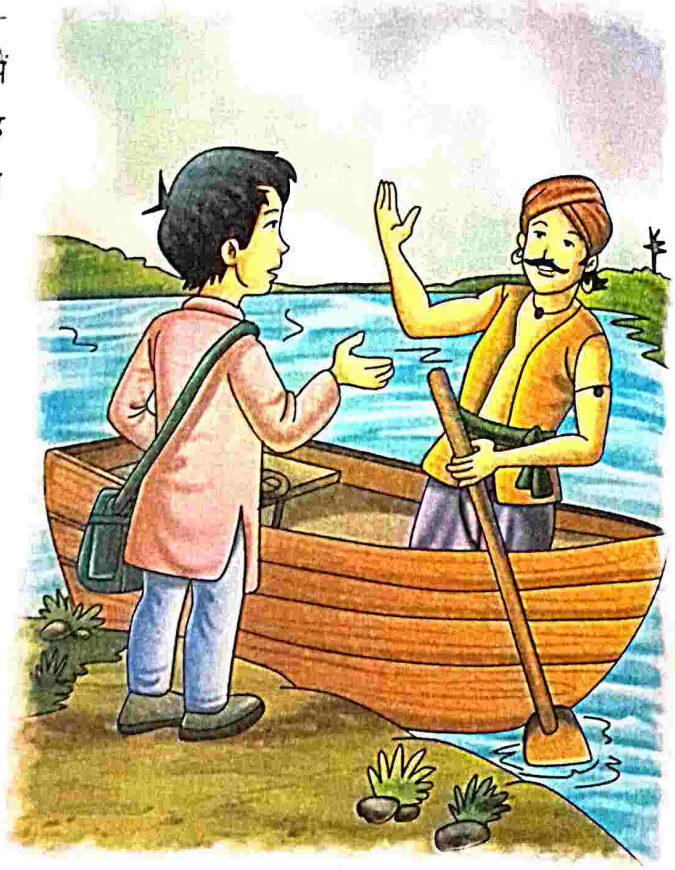

लालबहादुर ने उधार लेने से भी इंकार कर दिया और नदी तैरकर पार की। जब लालबहादुर घर पहुँचे, तो माँ ने उनके कपड़े गीले देखे, तो चौंककर पूछा, 'तेरे कपड़े कैसे भीग गए रे, नन्हे?'

लालबहादुर ने माँ को सारी बात बताकर कहा, 'सोचो भला माँ, मल्लाह भी तो आखिर गरीब आदमी है न! मेहनत-मज़दूरी करके किसी तरह अपना और अपने परिवार का पेट पालता है। उसकी नाव पर मुफ़्त में आना तो बुरा काम है न माँ! रही बात उधारी की, तो वह तो गंदी आदत है। इससे जितना बच सको, बचना चाहिए। फिर ज़रा-सी बात के लिए किसी का अहसान क्या लेना?'

माँ ने खुश होकर बेटे को छाती से लगा लिया। उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा कि 'जो अच्छे विचार रखता है, वह एक दिन अवश्य तरक्की करता है। मुझे विश्वास है कि तुम एक दिन ज़रूर बड़े आदमी बनोगे।'

माँ की भविष्यवाणी सच हुई। यही नन्हे आगे चलकर भारत के दूसरे प्रधानमंत्री बने। उन्होंने 'सादा जीवन उच्च विचार' को ही अपने जीवन की विचारधारा माना और देश की सेवा की।

—रामधारी सिंह दिनकर

अध्यापन संकेत बच्चों को आत्म-सम्मान से जीना सिखाएँ तथा आत्म-निर्भर बनने की प्रेरणा दें।

शब्दार्थ

कानाफूसी - कान में धीरे-धीरे बात करना, फुसफुसाना; मुल्क - देश; देहाती - ग्रामीण; तनख्वाह - वेतन; बगीचा - फुलवारी; मल्लाह - नाविक, नाव चलाने वाला; आत्मसम्मान - स्वाभिमान की रक्षा; ठेस - धक्का लगना।

अभ्यास

पाठ से

मौखिक प्रश्न

(क) जब लालबहादुर शास्त्री प्रधानमंत्री बने, तो लोगों में क्या चर्चा थी?

(ख) लेखक ने किन गुणों को शास्त्री जी के सबसे बड़े गुण कहा है?

(ग) शास्त्री जी किन अर्थों में देहाती थे?

(घ) शास्त्री जी कितने वर्षों तक राजनीति में रहे?

लिखित प्रश्न

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए–

(क) पिता की मृत्यु के पश्चात शास्त्री जी की माँ उन्हें ले आई-

(अ) नाना के घर ⬡ (ब) दादा के घर ⬡

(स) मौसी के घर ⬡ (द) मामा के घर ⬡

(ख) शास्त्री जी की माता का नाम था-

(अ) लक्ष्मी ⬡ (ब) रामदुलारी ⬡

(स) कौशल्या ⬡ (द) किरन ⬡

(ग) शास्त्री जी में प्रबल चाह थी-

(अ) नेता बनने की ⬡ (ब) खिलाड़ी बनने की ⬡

(स) कलाकार बनने की ⬡ (द) पढ़ने की ⬡

(घ) शास्त्री जी ने नदी तैरकर पार की क्योंकि

(अ) उन्हें तैरना पसंद था ⬡ (ब) उन्हें गरमी लग रही थी ⬡

(स) उनके पास किराया देने के लिए पैसे नहीं थे ⬡ (द) वह किसी की बात नहीं मानते थे ⬡

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) माली ने नन्हे को क्यों मारा?

(ख) नन्हे ने माली से क्या कहा?

(ग) माली ने नन्हे को क्या सीख दी?

(घ) माँ की कौन-सी भविष्यवाणी सच हुई?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

आशय स्पष्ट कीजिए-

'विनम्रता और सादगी लालबहादुर जी के सबसे बड़े गुण हैं, लेकिन वे इतने सीधे नहीं हैं कि लोग उन्हें चकमा दे जाएँ।'

भाषा ज्ञान

1. मुहावरों को वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

(क) चकमा देना

(ख) सिर पर पैर रखकर भागना

(ग) कानाफूसी होना

(घ) गुदड़ी में लाल

2. उचित योजक लगाकर दो वाक्यों का एक वाक्य बनाइए-

शास्त्री जी निर्धन थे। वे स्वाभिमानी थे।

शास्त्री जी निर्धन किंतु स्वाभिमानी थे।

(क) हमें अधिक पढ़ना है। परीक्षाएँ निकट हैं।

(ख) वह परिश्रमी है। वह सफलता प्राप्त करेगा।

(ग) प्रतिदिन व्यायाम करो। स्वस्थ रह सको।

(घ) उसने मज़बूती से तना पकड़ा। वह गिरी नहीं।

3. इन योजकों का प्रयोग करके वाक्य बनाइए-

मानो, अन्यथा, इसलिए, क्योंकि, ताकि

(क)

(ख)

(ग)

(घ)

(ङ)

रचना के क्षण

भाव-भूमि – सच्चे और अच्छे इंसान के प्रति आपके मन में कैसे भाव उमड़ते हैं? स्पष्ट कीजिए। 'क्या भलाई करने वाले को सदा कपट ही मिलते हैं' विचार कीजिए।

कल्पना व चिंतन

यदि हमारे सभी नेतागण ईमानदार व उच्च आदर्शों पर चलने वाले होते, तो आज देश की क्या स्थिति होती? चर्चा कीजिए।

क्रिया-कलाप

इनके विषय में भी जानिए-

(क) अब्राहम लिंकन

(ख) मदर टेरेसा

(ग) महात्मा गांधी

पठन हेतु

जब गांधी जी फैशन करने चले

गांधी जी अपनी युवावस्था में विदेश यात्रा के लिए पहली बार जा रहे थे, तो उन्होंने किस प्रकार फैशनेबल बनना चाहा, यहाँ उन्हीं के शब्दों में इसका वर्णन है।

मैंने 'सभ्यता' सीखने के लिए अपनी सामर्थ्य के परे का और छिछला रास्ता पकड़ा। विलायती होने पर भी बंबई के कटे-सिले कपड़े अच्छे ब्रिटिश समाज में शोभा न देंगे, इस विचार से मैंने 'आर्मी और नेवी' स्टोर में कपड़े सिलवाए। उन्नीस शिलिंग की (उस जमाने के लिहाज से तो यह कीमत बहुत ही कही जाएगी) 'चिमनी' टोपी सिर पर पहनी। इतने से संतोष न हुआ तो बॉंड स्ट्रीट में जहाँ शौकीन लोगों के कपड़े सिलते थे, दस पौंड पर बट्टी रखकर सायंकाल की वर्दी सिलवाई। भोले और बादशाही हृदय वाले बड़े भ्राता से मैंने दोनों जेबों में लटकाने लायक सोने की एक बढ़िया चेन मँगवाई और वह मिल भी गई। बँधी-बँधाई टाई पहनना शिष्टाचार में शुमार न था, इसलिए टाई बाँधने की कला हस्तगत की। देश में आईना हजामत के दिन ही देखने को मिलता था, पर यहाँ तो बड़े आईने के सामने खड़े रहकर ठीक से टाई बाँधने में और बालों में पट्टी डालकर सीधी माँग निकालने में प्रतिदिन लगभग दस मिनट तो बरबाद होते ही थे। बाल मुलायम न थे, इसलिए उन्हें अच्छी तरह मुड़े हुए रखने के लिए ब्रश (झाड़ू ही समझिए) के साथ प्रतिदिन लड़ाई चलती थी और टोपी पहनते तथा निकालते समय हाथ तो मानो माँग को सहेजने के लिए सिर पर पहुँच ही जाता था—और बीच-बीच में, समाज में बैठे-बैठे, माँग पर हाथ फिराकर बालों को व्यवस्थित रखने की एक और सभ्य क्रिया बराबर चलती ही रहती थी।

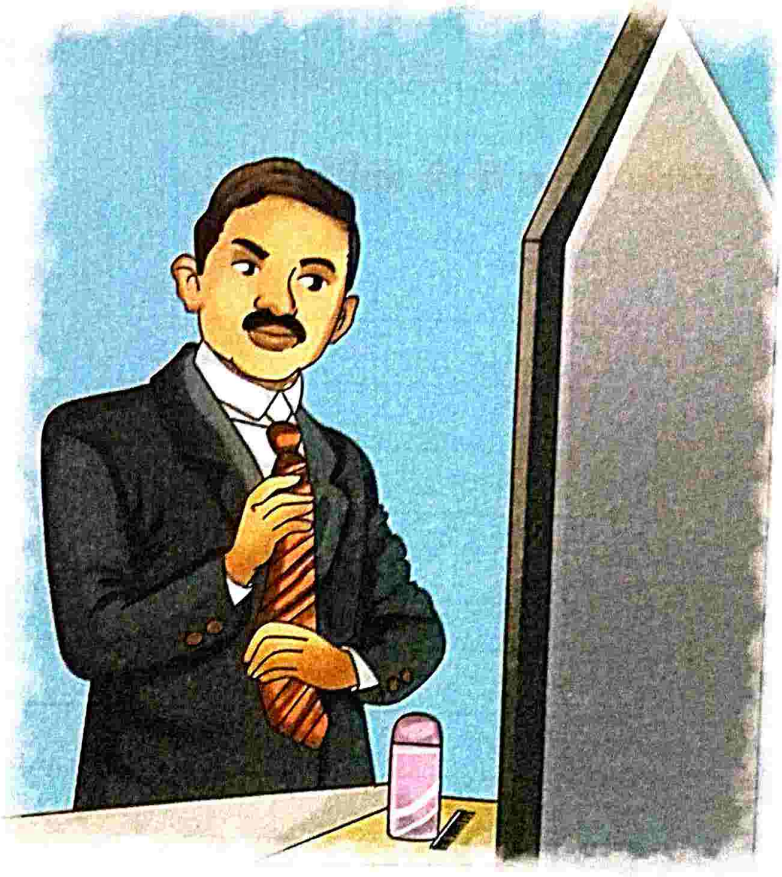

पर इतनी टीमटाम ही काफी न थी। अकेली सभ्य वर्दी से सभ्य थोड़े ही बना जा सकता था। मैंने सभ्यता के दूसरे कई बाहरी गुण भी जान लिए थे और मैं उन्हें सीखना चाहता था। सभ्य पुरुष को नाचना जानना चाहिए। उसे फ्रेंच

अच्छी तरह जान लेनी चाहिए; क्योंकि फ्रेंच इंग्लैंड के पड़ोसी फ्रांस की भाषा थी और सारे यूरोप की राष्ट्रभाषा भी थी और मुझे यूरोप में घूमने की इच्छा थी। इसके अलावा, सभ्य पुरुष को लच्छेदार भाषण करना भी आना चाहिए। मैंने नृत्य सीखने का निश्चय किया। एक कक्षा में भरती हुआ। एक सत्र के करीब तीन पौंड जमा किए। कोई तीन सप्ताह में करीब छह सबक सीखे होंगे। पैर ठीक से तालबद्ध पड़ते न थे। पियानो बजता था, पर वह क्या कह रहा है, कुछ समझ में न आता था। 'एक, दो, तीन' चलता, पर उसके बीच का अंतर तो वह बाजा ही बताता था, जो मेरे लिए अगम्य था, तो अब क्या किया जाए? अब तो बाबा जी की बिल्ली वाला किस्सा हुआ। चूहों को भगाने के लिए बिल्ली, बिल्ली के लिए गाय, यों बाबा जी का परिवार बढ़ा; उसी तरह मेरे लोभ का परिवार भी बढ़ा। वायलिन बजाना सीख लूँ, तो सुर और ताल का विचार हो जाए। तीन पौंड वायलिन खरीदने में गँवाए और कुछ उसकी शिक्षा के लिए भी दिए। भाषण करना सीखने के लिए तीसरे शिक्षक का घर खोजा। उन्हें भी एक गिन्नी तो भेंट की ही। बेल की 'स्टैंडर्ड एलोक्युशनिस्ट' पुस्तक खरीदी। पिट का एक भाषण शुरू किया।

इन बेल साहब ने मेरे कान में घंटी (बेल) बजाई। मैं जागा।

इंग्लैंड में मुझे कौन जीवन बिताना है! लच्छेदार भाषण करना सीखकर मैं क्या करूँगा? मैं तो विद्यार्थी हूँ। मुझे विद्या-धन बढ़ाना चाहिए। मुझे अपने व्यवसाय से संबंध रखने वाली तैयारी करनी चाहिए। मैं अपने सदाचार से सभ्य समझा जाऊँ, तो ठीक है, नहीं तो मुझे यह लोभ छोड़ना चाहिए।

मैंने इन विचारों की धुन में उपर्युक्त आशय के उद्गारों वाला पत्र भाषण-शिक्षक को भेज दिया। उनसे मैंने दो या तीन पाठ पढ़े थे। नृत्य-शिक्षिका को भी ऐसा ही पत्र लिखा। वायलिन शिक्षिका के घर वायलिन लेकर पहुँचा। उन्हें जिस दाम भी वह बिके, बेच डालने की इज़ाज़त दे दी। उनके साथ कुछ मित्रता का-सा संबंध हो गया था। इस कारण मैंने उनसे अपने मोह की चर्चा की। नाच आदि के जंजाल में से निकलने की मेरी बात उन्होंने पसंद की।

सभ्य बनने की मेरी यह सनक लगभग तीन माह तक चली होगी। वर्दी की टीमटाम तो बरसों चली। पर अब मैं विद्यार्थी बना।

कोई यह न समझ ले कि नाच आदि के मेरे प्रयोग उस समय की मेरी स्वच्छंदता के सूचक हैं। पाठकों ने देखा होगा कि उनमें कुछ समझदारी थी। मोह के इस समय में भी मैं एक हद तक सावधान था। पाई-पाई का हिसाब रखता था। खर्च का अंदाज़ रखता था। मैंने हर महीने पंद्रह पौंड से अधिक खर्च न करने का निश्चय किया था। मोटर में आने-जाने का या डाक का खर्च भी सदा लिखता था और सोने से पहले सदा अपनी रोकड़ मिला लेता था। यह लत अंत तक बनी रही और मैं जानता हूँ कि इससे जीवन में मेरे हाथों लाखों रुपयों का जो उलट-फेर हुआ है, उसमें मैं उचित किफायतशारी से काम ले सका हूँ। और आगे मेरी देख-रेख में जितने आंदोलन चले, उनमें मैंने कभी ऋण न किया, बल्कि हर एक में कुछ-न-कुछ बचत ही रही। यदि हर एक नवयुवक उसे मिलने वाले थोड़े रुपयों का भी हिसाब खबरदारी के साथ रखेगा, तो उसका लाभ वह भी उसी तरह अनुभव करेगा, जिस तरह भविष्य में मैंने और जनता ने किया।

अध्याय

14.
कर्ण का मित्र-प्रेम

प्रस्तुत कविता में कर्ण, श्रीकृष्ण को स्वयं पर दुर्योधन द्वारा किए गए उपकारों का ऋणी होना बता रहे हैं और कह रहे हैं कि वे कृतज्ञता के कारण उसी का साथ देंगे। यही उनका कर्तव्य है और यही उनका धर्म। इसे बदलना उनके लिए असंभव होगा।

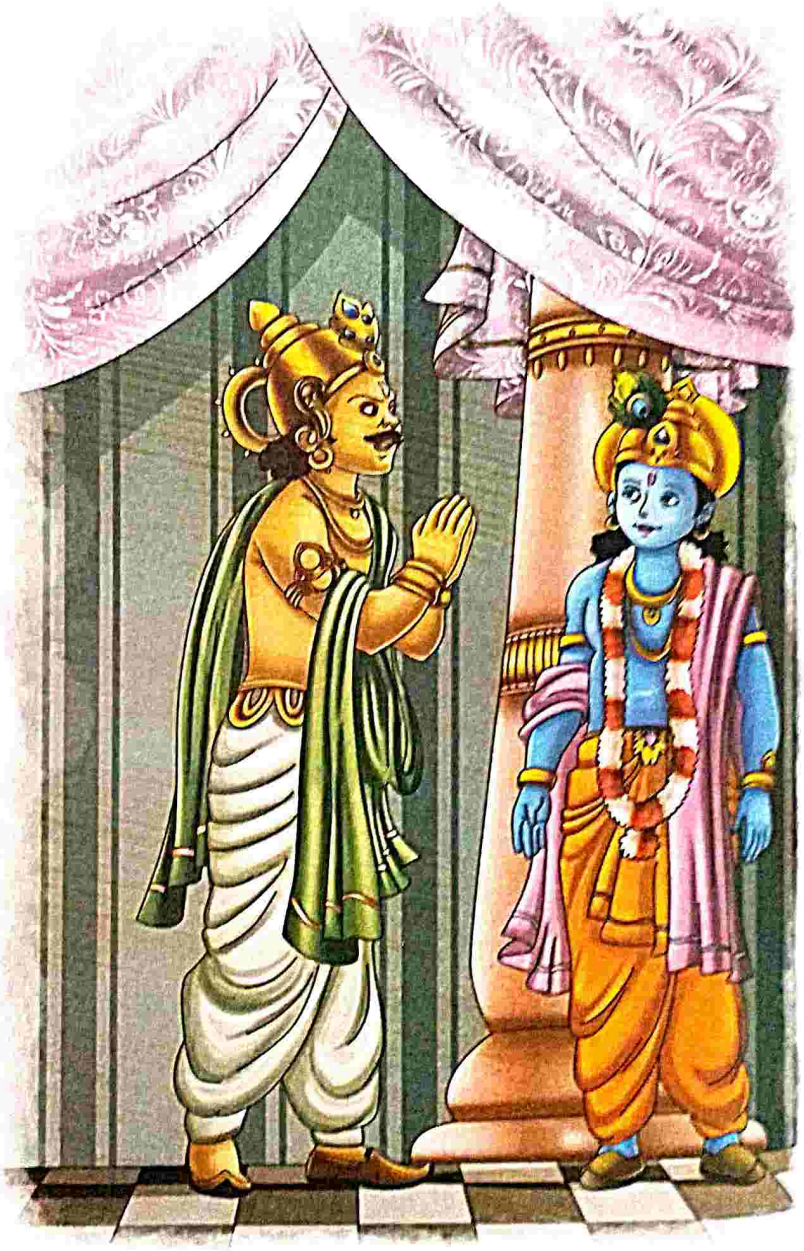

हे कृष्ण! ज़रा यह भी सुनिए,
सच है कि झूठ मन में गुनिए,
धूलों में था मैं पड़ा हुआ,
किसका स्नेह पा बड़ा हुआ?

किसने मुझको सम्मान दिया?
नृपता दे महिमावान किया।

है ऋणी कर्ण का रोम-रोम,
जानते सत्य यह सूर्य-सोम,
तन, मन, धन दुर्योधन का है,
यह जीवन दुर्योधन का है।

सुरपुर से भी मुख मोड़ूँगा,
केशव! मैं उसे न छोड़ूँगा।

जिस नर की बाँह गही मैंने,
जिस तरु की छाँह गही मैंने,

उस पर न वार चलने दूँगा,
कैसे कुठार चलने दूँगा?
जीते-जी उसे बचाऊँगा,
या आप स्वयं कट जाऊँगा।

मित्रता बड़ा अनमोल रतन,
कब इसे तौल सकता है धन?
धरती की तो है क्या बिसात?
आ जाए अगर बैकुंठ हाथ,

उसको भी न्योछावर कर दूँ
कुरुपति के चरणों पर धर दूँ।

—श्री रामधारी सिंह 'दिनकर'

अध्यापन संकेत विद्यार्थियों को बताएँ कि हमें अपने जीवन-मूल्यों पर दृढ़ रहना चाहिए, भले ही इसके लिए सब-कुछ न्योछावर करना पड़े।

शब्दार्थ

गुनिए - गहन भाव से सोचिए; नृपता - नृपत्व, राजा होने का भाव; ऋणी - कर्ज़दार; सोम - चंद्र; सुरपुर - स्वर्ग; केशव - कृष्ण; गही - पकड़ी; कुठार - कुल्हाड़ी; बैकुंठ - स्वर्ग; कुरुपति - दुर्योधन।

कविता से

मौखिक प्रश्न

(क) यह प्रसंग किस युद्ध से संबंधित है?

(ख) कृष्ण के सम्मुख कर्ण क्या तर्क देकर पांडवों का साथ दे पाने में अपनी असमर्थता जता रहे हैं?

(ग) कर्ण को राजा किसने बनाया था?

(घ) कर्ण किनके साक्षी होने की शपथ लेकर दुर्योधन के एहसानों का वर्णन कर रहे हैं?

लिखित प्रश्न

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए–

(क) कर्ण ने अपनी प्रारंभिक स्थिति के वर्णन में कहा कि वह-

(अ) बड़ा शूरवीर था ⬡ (ब) धूल में पड़ा था ⬡

(स) राजा था ⬡ (द) मंत्री था ⬡

(ख) कर्ण ने माना कि दुर्योधन ने उसे दिया–

(अ) तन-मन-धन तथा जीवन ⬡ (ब) एक महल ⬡

(स) एक सेवक ⬡ (द) एक रथ ⬡

(ग) दुर्योधन के लिए कर्ण छोड़ने को तैयार है–

(अ) माता-पिता ⬡ (ब) सुरपुर ⬡

(स) देश-जाति ⬡ (द) धर्म ⬡

(घ) दुर्योधन को बचाने के लिए कर्ण प्रस्तुत है–

(अ) एक सेना देने को ⬡ (ब) धन देने को ⬡

(स) अपने प्राण देने को ⬡ (द) अपना कवच देने को ⬡

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) 'नृपता दे महिमावान किया' कहने से कर्ण का क्या अभिप्राय है?

(ख) कर्ण ने अनमोल रतन किसे कहा है?

(ग) यदि कर्ण को अवसर मिले, तो वह दुर्योधन के चरणों में क्या रख देना चाहता है?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) कविता पढ़कर कर्ण के चरित्र की क्या विशेषताएँ ज्ञात होती हैं?

(ख) कर्ण ने किसे 'तरुवर की छाँह' कहा है और क्यों?

भाषा-ज्ञान

1. तुक मिलाइए–

(क) सुनिए / गुनिए

(ख) मोड़ूँगा / _____

(ग) दिया / _____

(घ) बाँह / _____

(ङ) रोम / _____

(च) रतन / _____

2. पढ़िए और समझिए–

(क) धरती, पृथ्वी, भूमि।

(ख) तरु, वृक्ष, पेड़।

(ग) स्वयं, खुद, आप।

(घ) मित्रता, दोस्ती, मैत्री।

3. 'वान' प्रत्यय जोड़कर लिखिए–

(क) महिमा _____

(ख) धन _____

(ग) बल _____

(घ) विद्या _____

(ङ) रूप _____

(च) गुण _____

4. उचित कारक चिह्न से रिक्त स्थान भरिए–

(क) मित्रता _____ हाथ

(ख) जड़ _____ अलग

(ग) कृष्ण _____ समझाया

(घ) वीरगति _____ प्राप्त

को
ने
से
का

रचना के क्षण

- भाव-भूमि– क्या आप कर्ण के विचारों का हृदय से अनुमोदन करते हैं? यदि आपके साथ ऐसी स्थिति होती, तो आप क्या करते?

कल्पना व चिंतन

- कल्पना कीजिए कि आप गहरी दुविधा में हों और आपका कोई हितैषी आपको लाभ का मार्ग दिखाए, जबकि आपका मन उससे सहमत न हो, तो आप क्या करेंगे?

क्रिया-कलाप

- महाभारत की पूरी कथा समझकर लिखिए कि दुर्योधन ने कर्ण पर क्या-क्या उपकार किए थे।
- 'बुरा कहलाने वाले व्यक्ति में भी कुछ अच्छाइयाँ होती हैं।' इस विषय पर एक वार्ता आयोजित कीजिए।

अध्याय

15. धरती व पर्यावरण : संकट के घेरे में

मनुष्य की असावधानी और लोभ के कारण आज पृथ्वी की स्थिति चिंताजनक है। इसी की समीक्षा लेखक ने यहाँ गहनता से की है।

आज धरती माँ के माथे पर शिकन है। बुखार में उसका शरीर तप रहा है। उसके दिल में उथल-पुथल मची हुई है। इन सबके चलते कहीं भूकंप-सुनामी का कहर है, तो कहीं ग्लेशियर पिघल रहे हैं। पर हमें चिंता ही नहीं है। भोगवादी सभ्यता ने हमें धरती का कसाई बना दिया है। हमने अपने इस पाप को छिपाने के लिए प्रकृति के शोषण को उसे नगदी में बदलने को विकास की संज्ञा दी है। गांधी जी ने एक ही वाक्य में इसे स्पष्ट करते हुए कहा था कि प्रकृति के पास हमारी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त साधन है, लेकिन हमारे लालच को पूरा करने के लिए एक भी नहीं है। महापुरुषों को उनके जीवन काल में किसी ने नहीं सुना। सुकरात, ईसा और गांधी के साथ यही हुआ। समय बीतने के साथ ही लोगों का उन पर ध्यान जाता है। गांधी जी के संदर्भ में इसलिए कि धरती की सुरक्षा भी आज उन्हीं रास्तों पर चलकर संभव है, जिसके लिए महात्मा हमेशा सचेत किया करते थे। आज भौतिक वैभव को सभ्यता की निशानी माना जाता है। एक ओर धरती माता के खज़ाने खाली हुए हैं, दूसरी ओर बड़ी संख्या में लोगों को अभाव में जीना पड़ रहा है। ज़िंदा रहने के लिए अनिवार्य प्राणवायु कम हो गई है। नगरों के विस्तार के साथ आज वायु और जल संकट बढ़ रहा है। पानी का संकट, वैश्विक तापमान वृद्धि के साथ बड़ा संकट बनकर आया है। इस संकट का मुकाबला प्रचलन में पानी की तरह बहाने के मुहावरों को पानी की तरह बचाने वाले मुहावरों में बदलना होगा। गांधी जी इलाहाबाद के आनंद भवन में एक लोटे पानी से मुँह-हाथ धो रहे थे। जवाहरलाल जी ने मज़ाक में कहा, "क्यों बापू, इतनी कंजूसी क्यों? यहाँ तो गंगा-जमुना बह रही है।" गांधी जी ने तपाक से कहा, "कोई मेरे लिए ही थोड़ी बह रही है। हिमालय की सुनो..."

जल-संकट का मुकाबला करने के लिए हमें हिमालय की सुध-बुध लेनी होगी। अब हिमालय में हिमपात बहुत कम होता है। पौड़ी में अब बरफ नहीं पड़ती, मसूरी में कब पड़ती है और गल जाती है, पता नहीं चलता। पहले सफ़ेद रूई की-सी चादर बिछती थी, वह अब नज़र नहीं आती। गंगोत्री हिमनद के पास एक लंबा रेगिस्तान बन गया है।

हिमालय को तो चौड़ी पत्तियों वाले ऐसे वृक्षों से ढँकना पड़ेगा, जिनसे वृक्ष तो खड़े रहें। अखरोट मीठा पागर के वृक्ष चाहिए। खुबानी और चूलू जैसे बीजों से तेल मिलता है। पद्म जैसा वृक्ष शहद के लिए जाना जाता है। इसके अलावा हर क्षेत्र में मौसमी फलों के पेड़ होते हैं। कुछ ऐसा संतुलन हो कि चारे के लिए वृक्ष हों और शहतूत रेशमकीट पालन के लिए रेशा मिल सके।

पृथ्वी को बचाने के लिए बड़े उपक्रमों की ज़रूरत नहीं है। इसके लिए बस जीने का थोड़ा तरीका बदलने की ज़रूरत है। आचार-विचारों में थोड़ा परिवर्तन की ज़रूरत है। बहुत छोटी-छोटी बातों पर गौर कीजिए। हम कितना पानी खर्च कर रहे हैं? हम कहीं बिना ज़रूरत अकेले कार में सफ़र तो नहीं कर रहे? कहीं बेधड़क पॉलिथीन का इस्तेमाल तो नहीं कर रहे? हम प्रकृति के संसाधनों का उपयोग किस तरह कर रहे हैं। कहीं हमारा चूल्हा कार्बन डाइ-ऑक्साइड बढ़ाने में मददगार तो नहीं हो रहा? ऐसी कई बातें हैं। हम प्रकृति के मित्र बन पाए हैं या नहीं इस बात को सोचना होगा। एक सूक्ति है कि 'पृथ्वी की दी हुई रोटियाँ खाई जाती हैं,' पृथ्वी बहुत उदार है। उसके पास हमें संतुष्ट रखने का अथाह खजाना है पर हम उसे रौंदते चले आ रहे हैं। हमारी पूरी जीवन शैली, सोच और तैयारी इसके लिए खतरा बन गई है। ज़रूरी यही है कि हम जो कुछ भी करें, उससे पहले यही सोचें कि कहीं हम इससे धरती का विनाश तो नहीं कर रहे हैं। इस पृथ्वी को इज़्ज़त देने के लिए हम अपने स्तर पर बहुत कुछ कर सकते हैं।

हमें सादगी और संयम भरा जीवन जीना होगा। गांधी जी अपनी जीवन-शैली को केवल आज़ादी भर के लिए नहीं देखते हैं, बल्कि उन्हें इस बात का अहसास था कि भविष्य में दुनिया किस तरफ़ जाने वाली है। उनका पहला सूत्र संयम और सादगी का है। सबसे सभ्य मनुष्य वह है जो सबसे कम वस्तुओं से अपना काम चलाता है। दुर्भाग्यवश वैभव को सभ्यता की निशानी माना गया है। हम दूसरों की तरफ़ न देखें, बस सादगी भरे जीवन की पहल खुद से करें। हम सादगी से जी रहे होंगे, तो पृथ्वी की चीजों की हमें कम-से-कम ज़रूरत होगी उनका अवशोषण नहीं होगा। सार्वजनिक वाहनों का अधिक उपयोग करें। निजी वाहन बहुत ज़रूरी हो, तभी उपयोग में लाएँ। अगर उनका उपयोग कर रहे हों, तो लोगों को लिफ्ट दें। बड़ी कार खाली न दौड़ाएँ।

पर्यावरण को लेकर बहुत कुछ कहा गया है। अब प्रकृति को बचाने के लिए आगे आने का वक्त है। उन चीज़ों का बहिष्कार करें, जो इस धरती पर दबाव डाल रहीं हैं। कोला ड्रिंक्स तैयार करने वाली बड़ी कंपनियाँ धरती से बहुत पानी खींच रही हैं। यहाँ तक कि राजस्थान में भी धरती से पानी खींचा जा रहा है। ऐसी कई चीज़ें हैं, जिसका हमें बहिष्कार करना चाहिए। प्लास्टिक भी इसी तरह का नुकसान पहुँचा रहा है। हम जागरूक होंगे, तो हमें बड़े बाँधों के खतरे और पिघलते ग्लेशियरों का संकट भी समझ में आएगा। पर्यावरण के लिए अपने अंदर समझ विकसित करनी होगी। यह हमारे सरोकार में होना चाहिए। हमें पता होना चाहिए कि जंगलों में चीड़ के पेड़ बढ़ाना वानिकीकरण नहीं है।

वर्षा का अधिकांश जल बिना उपयोग के समुद्र में चला जाता है। पर अपने स्तर पर भी हमें जल-संचयन करना चाहिए। पानी की एक-एक बूँद का महत्व समझना चाहिए। प्रकृति की उदारता है कि वर्षा नियत रूप से हो रही है, अगर दुर्भाग्य से ऐसा नहीं हुआ तो, हमें अहसास होगा कि पानी का संकट किस तरह गहराया हुआ है। घर, आँगन में बड़े लॉनों में हज़ारों लीटर पानी खर्च होता है। इसके बजाय ट्री-फॉर्मिंग को अपनाना चाहिए।

घरों के आगे पेड़ लगाने चाहिए। पेड़ का मतलब यूकेलिप्टस नहीं है। हम फूलों की खेती करें, लेकिन इसमें ध्यान रखना होगा कि फल पराग वाले हों, महज शोभा के लिए लगाए फूलों का कोई महत्व नहीं। नहाने में शावर के बजाय बाल्टी का प्रयोग करें। इसी तरह कार धोते समय, ब्रश करते समय भी हम पानी की बचत कर सकते हैं।

अपने भोजन में यथाशक्ति ऐसी चीज़ों का उपयोग करें, जो धरती पर बोझ न बनती हों। सुनना अजीब-सा लगेगा, लेकिन चावल और गन्ने की खेती को पानी की ज़रूरत होती है। चावल, चीनी जैसी चीज़ें खाना बंद तो नहीं कर सकते, पर उपयोग की मात्रा कम कर सकते हैं। हम अपने खान-पान को संतुलित रखेंगे, तो कई चीज़ों की बर्बादी स्वयं ही रुक जाएगी। इसका हमारे जीवन से सीधा असर है। हम उन तमाम चीज़ों को खान-पान में शामिल न करें, जो पर्यावरण पर असर डाल रही हैं।

उस प्रकृति और उस पृथ्वी से स्नेह करना होगा, जो हमें जीवन दे रही हैं। हम जीते तो हैं, पर कभी यह ध्यान नहीं रखते कि प्रकृति की उदारता से ही यह संसार गतिमान है। ऐसा होगा, तो इसके विपरीत होती किसी भी चीज़ से हम तुरंत चेत जाएँगे। पृथ्वी से प्रेम का अर्थ है- वन्य और वानस्पतिक संपदा को बचाना, गौरैया को भी, शेर व बाघों को भी। पूरी प्रकृति के प्रति हमें लाड़-दुलार हो। जब तक यह भावना नहीं उमड़ेगी, तब तक पृथ्वी के संरक्षण के लिए असल बात नहीं उमड़ेगी। अच्छा यह हो कि हमें बचपन से ही प्रकृति के प्रति रुझान बढ़ाने की जरूरत है। इन सूत्रों का पालन करके हम पृथ्वी को बचाने में अपना योगदान दे सकते हैं।

—सुंदरलाल बहुगुणा

अध्यापन संकेत पाठ के माध्यम से विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता व प्रेम उत्पन्न करने का प्रयास करें।

शब्दार्थ

शिकन – बल पड़ना; वैभव – ठाठ-बाट; हिमपात – बर्फ़ गिरना; नियत – निश्चितः चेत – सावधान; वन्य – जंगल।

अभ्यास

पाठ से

मौखिक प्रश्न

(क) किसके माथे पर आज शिकन है और क्यों?

(ख) प्रकृति के शोषण के पाप को हम क्या कहकर छिपाते हैं?

(ग) नगरों के विस्तार के साथ-साथ कौन-कौन सी समस्याएँ बढ़ी हैं?

(घ) पृथ्वी से प्रेम का क्या अर्थ है?

लिखित प्रश्न

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए–

(क) प्रस्तुत लेख के लेखक हैं–

(अ) रामचंद्र शुक्ल
(ब) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(स) शरद जोशी
(द) सुंदरलाल बहुगुणा

(ख) अब हिमालय में हिमपात–

(अ) कम होता है
(ब) पहले की भाँति होता है
(स) अधिक होता है
(द) नहीं होता है

(ग) पृथ्वी को बचाने के लिए–

(अ) बड़े उपक्रम चाहिए
(ब) जीने का तरीके में बदलाव लाना होगा
(स) सभाएँ करनी होगी
(द) सैनिक तैयार करने होंगे

(घ) सभ्य मनुष्य वह है–

(अ) जो पूजा-पाठ करे
(ब) सुंदर वस्त्र पहने
(स) कम वस्तुओं से अपना काम चलाए
(द) अंग्रेज़ी बोले

रचना के क्षण

भाव-भूमि – मनुष्य के स्वार्थ ने ही उसे अनेक समस्याओं में ढकेल दिया है। वृक्षों की हरियाली से हीन स्थानों पर जीवन कितना नीरस हो जाता है, अपने विचार व्यक्त कीजिए।

कल्पना व चिंतन

यदि प्रकृति के उपहार धूप, पानी, हवा, ऑक्सीजन आदि का उपयोग भली-भाँति किया जाए, तो जीवन में कितनी खुशहाली आ सकती है, स्वास्थ्य में क्या सुधार आ सकता है, मनन-चिंतन कीजिए।

क्रिया-कलाप

'वायु-प्रदूषण से बचाव कैसे करें' इस विषय पर एक वार्ता आयोजित कीजिए और उसका निष्कर्ष लिखिए।

जल-प्रदूषण व ध्वनि-प्रदूषण के हानिकारक प्रभावों पर एक अनुच्छेद लिखिए।

पठन हेतु

सचिन तेंदुलकर की डायरी से

31.1.1987

भारत में ही नहीं, समस्त विश्व में खेलों का मौसम ज़ोरों पर है। मैं तो लगभग बचपन से ही खेलता रहा हूँ। चाचा कहते हैं कि बोलना शुरू करने से पहले ही मैंने तीन पहियों की साइकिल चलाना शुरू कर दिया था। कपड़े कूटने की थपकी मेरा प्रिय बल्ला रही है और गेंदबाजी का यह आलम था कि अपने और पास-पड़ोस की खिड़कियों के शीशे तोड़ने का मेरा रिकॉर्ड शायद ही कोई तोड़ सके। स्कूल में भी खूब खेला, ऐसा खेला कि पढ़ाई में पिछड़ा ही रहा। मुझे भी केवल मैट्रिक पास करना था, कौन-सी नौकरी करनी थी! पर उस दिन तो आश्चर्य हुआ ही, आज भी आश्चर्य है कि मैं अच्छे सेकंड डिवीज़न में पास कैसे हो गया! "यह कैसे पास हो गया?" सबकी जुबान पर यही सवाल था, जैसे मुझे फेल होना चाहिए था। खैर, एक बात है, जिसकी वजह से मैं पास हो गया। वह यह कि मुझे पाठ बार-बार नहीं पढ़ना पड़ा, कोई नियम बार-बार नहीं समझना पड़ा। एक बार पढ़ा-समझा कि दिमाग में बैठ गया। लेकिन परीक्षा में तो लिखकर बताना पड़ता है कि बात समझ में आ गई है और लिखना ज़रा कठिन और **अभ्यास-सिद्ध** काम है।

मैं समझता हूँ कि खेल और पढ़ाई में **संतुलन** हो। सभी खेलें और सभी पढ़ें। यह जो एक हज़ार विद्यार्थियों में केवल सौ-सवा-सौ विद्यार्थियों को ही खेलों में अटकाए रखने वाली बात है, यह बिल्कुल गलत है। स्कूलों में खेलकूद **अनिवार्य** विषय हो, खेलने का नियमित और निरंतर अभ्यास कराया जाए, और पढ़ाई की कीमत पर खेलों को समय न दिया जाए, तो शायद यह अच्छी बात होगी।

10.1.1987

एक हफ़्ते से हमारे क्लब में एशियाड 1986 पर चर्चा चल रही है। एशियाड में हम खेले और खूब पिटे। वह तो बहनों ने लाज रख ली, या खजानसिंह ने आँसू पोंछ दिए। परंतु कुल मिलाकर शर्मिंदगी ही तो पल्ले पड़ी। कितना बड़ा देश! अगर लाख पीछे एक के हिसाब से चोटी का खिलाड़ी पैदा किया जाए, तो सात-आठ सौ चोटी के खिलाड़ी आसानी से मुकाबलों में खड़े हो सकते हैं। तो दिक्कत कहाँ हैं? क्या हमारे खिलाड़ियों को प्रशिक्षण नहीं

मिलता? क्या उन्हें ठीक **खुराक** नहीं मिलती? क्या कोई भाई-भतीजावाद खिलाड़ियों के ठीक चयन में बाधा डाल रहा है? क्या हमारे खिलाड़ियों में मनोबल की कमी है? इन सारे प्रश्नों का उत्तर 'हाँ' में है। इसके अलावा दल-भावना के अभाव का ग्रहण भी हमारे खिलाड़ियों को लग गया है, इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता।

अस्तु! खेलों को प्रोत्साहन कैसे मिले? हमारे 'अर्जुनों' को संसार में भी मान्यता कैसे मिले? कैसे सारे नवयुवकों के बल, बुद्धि, साहस, चातुर्य और संकल्प का पता संसार को चले? चीन, जापान और दक्षिणी कोरिया ने खेलों में ही **श्रेष्ठता** सिद्ध नहीं की है, बल्कि उन्होंने अपनी अलग पहचान भी बना ली है। इन प्रश्नों को कोई उत्तर ढूँढ़ना ही पड़ेगा। सारी समस्याओं का हल खोजना ही होगा।

7.1.1987

आज 'भारतीय खेलों का इतिहास' पुस्तक हाथ लग गई। हॉकी में हम तब भी विश्व-विजयी थे, जब हम अंग्रेज़ों के अधीन थे। तब गामा विश्व का सर्वश्रेष्ठ पहलवान था। रंजी और दिलीप, दोनों चाचा-भतीजे क्रिकेट-जगत के हीरो थे। दादा ध्यानचंद और उनके भाई रूपसिंह की हॉकी ने संसार को चकित कर दिया था।

स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद शेरपा तेनसिंह ने एवरेस्ट की चोटी पर तिरंगा लहराकर विजय-घोषणा की। फ्लाइंग सिख मिल्खा सिंह, मोरोमियो और श्रीराम सिंह अच्छे **धावक** रहे हैं। कमलजीत संधू ने दौड़ में सर्वप्रथम स्वर्ण-पदक प्राप्त कर भारतीय धाविकाओं के लिए स्वर्ण-पदकों का द्वार ही खोल दिया। गीता जुत्शी, बालसम्मा और उड़नपरी पी.टी. ऊषा को इससे प्रोत्साहन मिला। कुश्तियों में गणपति अंदालकर, मारुति माने, करतार सिंह और सतपाल जाने-माने नाम हैं। परंतु... फिर वही 'परंतु' एक प्रश्न बनकर सामने आ खड़ा होता है। इसे तो सुलझाना ही होगा।

24.1.1987

सोचता हूँ, मुझे खेलने का शौक न होता, तो क्या होता। तब शायद मुझमें कुछ कमी रह जाती। खेलों ने मुझे **धैर्य** दिया है। मैं एकाएक उखड़ता नहीं! इससे मानसिक संतुलन बना रहता है। खेलों ने मुझे हार-जीत और लाभ-हानि को गंभीरता से न लेना सिखाया है। इससे जीवन **समरस** बना रहता है। खेलों ने लक्ष्य की ओर बढ़ना सिखाया है। मैं समझता हूँ, लक्ष्य की प्राप्ति का इतना महत्व नहीं, जितना कि लक्ष्य की ओर दृढ़ निश्चय के साथ और स्पष्ट मस्तिष्क के साथ निरंतर आगे बढ़ने का। लक्ष्य से परे भी लक्ष्य है, 'आसमाँ से परे आसमाँ और भी है', केवल यह आसमान की ऊँचाई की अंतिम सीमा नहीं।

खेल मेरी कमज़ोरी है। पाँच बजे नहीं कि जैसे कोई मुझे मैदान या कोर्ट में खींच ले जाता है। खेल मेरी ज़िंदगी है। अगर किसी दिन खेलूँ नहीं, तो चेहरे पर मुर्दनी-सी छा जाती है। पर, मैं खेलता हूँ खेलने के लिए, शील्ड या मैडल के लिए नहीं। खेल को व्यवसाय बनाना मुझे पसंद नहीं।

—सचिन तेंदुलकर की डायरी से

अध्याय

16. हार की खुशी

प्रस्तुत कहानी एक ऐसे बालक की है, जो अपनी चंचलता के कारण लक्ष्य से भटक गया था, किंतु बाद में उसने लक्ष्य प्राप्त किया, पर कैसे? आइए पढ़ें।

घड़ी ने दो बजाए तो मैंने किताब बंद कर दी। एक बार रवि की ओर देखा। वह गहरी नींद में निश्चिंत सो रहा था। रवि को जैसे याद भी नहीं है कि वार्षिक परीक्षा के लिए अब कुछ ही महीने शेष है। मैंने बत्ती बुझा दी और रवि के बारे में सोचता रहा। याद आया वह दिन जब रवि की माँ उसे हॉस्टल में भर्ती करने आई थी। कितनी चिंतित थी वे। अकेला रवि कैसे रहेगा, क्या खाएगा, कैसे पढ़ेगा, कौन उसकी देखभाल करेगा? माँ का दिल जो ठहरा। जैसे कलेजे पर पत्थर रखकर वे रवि को यहाँ छोड़ गई थीं। उसके सिर पर बार-बार हाथ फेरती और समझाती, बेटे, तुम्हारे पिता जी की यही इच्छा थी कि मैं तुम्हें खूब पढ़ाऊँ। मैं खुद भूखी रह लूँगी, पर तुम्हें कोई तकलीफ़ नहीं होने दूँगी। तुम मन लगाकर पढ़ना। अपने पिता जी का सपना पूरा करना, इसी में मेरी खुशी है। उनकी आँखें भर आई थीं। रवि उन्हें हॉस्टल के फाटक तक पहुँचाने गया था। पीछे-पीछे मैं भी गया था।

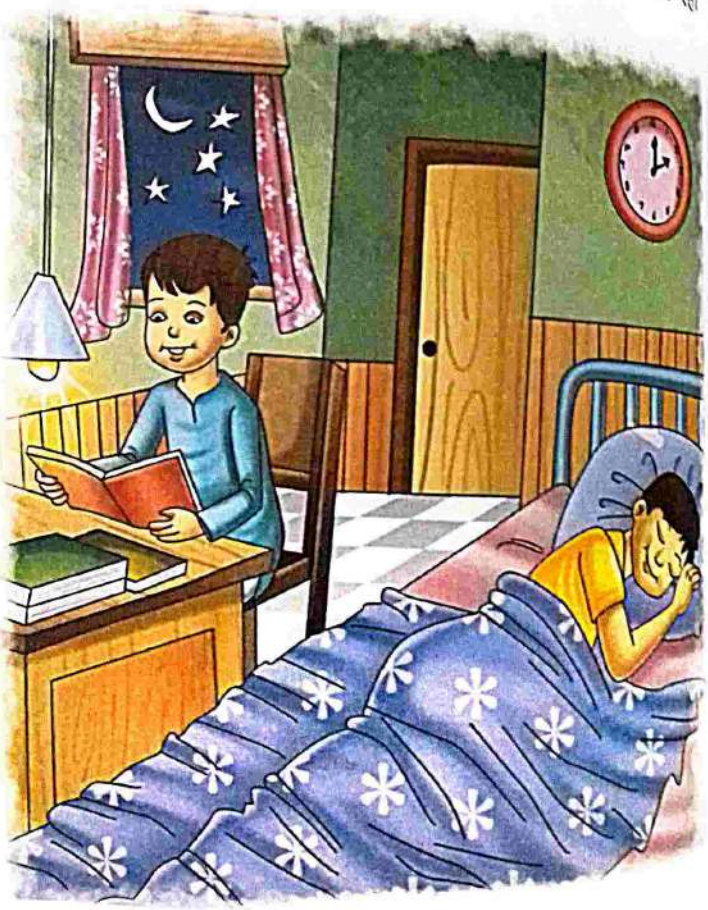

उस दिन से रवि मेरे साथ है। हम दोनों एक ही कमरे में रहते हैं। एक ही कक्षा में पढ़ते हैं। एक साथ खाना, एक साथ स्कूल जाना..... हम दोनों एक-दूसरे के बिना नहीं रह सकते। बस अंतर है, तो इतना कि रवि लापरवाह है। पढ़ाई में मन ही नहीं लगता। स्कूल से लौटते ही खेलने चला जाता है। जिस दिन गप्पों के लिए कोई लिफ्ट

नहीं देता तो सिनेमा देखने चला जाता है या फिर खाना खाकर सो जाता है। पढ़ने के नाम पर कुछ किस्से-कहानियों की किताबों के अलावा कुछ नहीं पढ़ता है। एक काम ज़रूर नियम से करता है—सुबह स्कूल जाने से पहले पास ही बने शिव मंदिर में ज़रूर जाता है।

पिछली बार, जब छमाही परीक्षा का फल निकला था, तो रवि उसमें असफल घोषित हुआ था। उसे अधिक मेहनत करने की चेतावनी दी गई थी, किंतु रवि पर उसका कोई असर नहीं पड़ा। मैं उसे सावधान कर देता था, पर वह मेरी सुनता कब है।

उस रात मैं रवि के बारे में ही सोचता रहा। मेरी नींद उड़ चुकी थी। मन बहुत परेशान था कि उसकी माँ कितने कष्ट उठाकर उसे पढ़ा रही है ..... और रवि?

रातभर जागने के कारण सुबह मेरी तबियत ठीक न थी। मैं उदास था। रवि ने दो-एक बार मेरी उदासी का कारण जानना चाहा, पर मैं टाल गया। स्कूल में भी रवि के बारे में सोचता रहा। एक वर्ष पूरा होने को आ रहा है, किंतु रवि ने अपनी कोई भी कापी चैक नहीं कराई। कभी होम-वर्क करके नहीं लाता, क्लास वर्क नहीं करता। सभी अध्यापकों ने कुछ दिन तक तो उसे टोका, पर अब कोई उसे टोकता भी नहीं। रवि को जैसे आज़ादी मिल गई है। वह क्लास में भी उधम मचाता है। लेकिन दूसरे लड़के भी अब उसे नापंसद करने लगे हैं। वे उसके पास बैठने से कतराते हैं। जानते हैं कि न यह पढ़ेगा और न पढ़ने देगा। तब वह हारकर मेरे पास आकर बैठ जाता है। मुझे कई अध्यापकों ने अलग बुलाकर कहा— "किशन, तुम रवि को अपने जैसा क्यों नहीं बनाते?" मैं भला उन्हें क्या उत्तर देता?

उस दिन शाम को लौटकर मैं बिस्तर पर लेट गया। रवि मेरे पास ही आकर बैठ गया। बोला, "किशन! तू मुझसे नाराज़ है, या सचमुच तेरी तबियत ठीक नहीं है।"

"तुमसे नाराज़ हूँ, जानते हो, कल रात मैं सिर्फ़ तुम्हारी वज़ह से सो नहीं सका।"

यह सुनते ही वह ठहाका लगाकर हँस पड़ा। बोला, "यार यह बात सबेरे ही बता देता, तो मैं माफ़ी माँग लेता। कम से कम दिन तो अच्छा गुजरता।" फिर बोला, "अच्छा, अब जल्दी से बता, मुझसे क्यों नाराज़ है?" मैंने सीधे-सीधे ही बात कह दी— "मैं दुखी हूँ कि तुम पढ़ते नहीं हो। अगर मैं तुम्हारी सारी बातें तुम्हारी माँ को लिख भेजूँ, तो उन पर क्या गुज़रेगी? वे जब-जब आती हैं, मुझे उनके सामने तुम्हारे बारे में झूठ बोलना पड़ता है और तब लगता है कि मैं एक माँ के साथ कितना बड़ा धोखा कर रहा हूँ। रवि! यह मत भूलो कि मुझसे बड़े अपराधी तुम हो, जो अपनी माँ को धोखा दे रहे हो। उनके सपनों को मिट्टी में मिला रहे हो। तुम्हें नहीं पढ़ना है, तुम्हारा मन नहीं लगता है तो साफ़-साफ़ उनसे कह क्यों नहीं देते।"

रवि पर इस उपदेश का कोई असर नहीं हुआ। वह सारी बातों को सदा की तरह हँसी में टाल गया और बोला, "तुम तो बेकार ही परेशान हो। मैं बस उतना ही पढ़ता हूँ, जितना ज़रूरी है..... मंदिर के पुजारी जी कहते हैं कि भगवान शिव का जिसे आशीर्वाद प्राप्त होता है, वह कभी असफल नहीं हो सकता। उन्होंने कहा था— बेटे, शिवजी के दर्शन करने रोज़ जाना। वे ही सहारा देंगे, कष्ट दूर करेंगे।" मुझे उसके अंधविश्वास पर हँसी आई और क्रोध भी। मैंने पूछा, "छमाही परीक्षा भी तूने भगवान शिव के ही सहारे दी थी। उनके आगे किताब खोलकर आने

वाले प्रश्नों की भविष्यवाणी किया करता था, लेकिन नंबर कितने मिले? मैं तुम्हारी ईश्वरभक्ति का विरोध नहीं करता, किंतु जो मेहनत नही करता, भगवान उसकी कभी नहीं सुनते।''

''अच्छा बाबा, अब यह उपदेश बंद करो और खाना खाने चलो।'' रवि ने मेरी बात काट दी। लेकिन मेरे मन का बोझ हल्का नहीं हुआ। हम दोनों खाना खाकर लौटे, तो रवि सदा की तरह एक मित्र के कमरे में गप्पे हाँकने के लिए बैठ गया। मैं अपने कमरे की ओर लौट आया।

अचानक एक विचार आया। उस समय रात के नौ बजने वाले थे। मैं भगवान शिव के मंदिर की ओर चल पड़ा। दस बजे तक मंदिर खुला रहता है। दर्शन करने वालों की भीड़ लगी रहती है।

मैंने दर्शन किए। फिर पुजारी जी के पास जाकर बैठ गया। मैंने कहा, ''मैं रवि का दोस्त हूँ.... हम दोनों एक ही कमरे में रहते हैं।....'' इसके बाद मैंने पुजारी जी को सारी बातें बताईं। हम दोनों ने एक गुप्त योजना बनाई।

अगली सुबह रवि नहा-धोकर मंदिर पहुँचा। उसने शिवजी के सामने बैठकर जैसे ही माथा टेका कि एक भारी आवाज गूँज उठी, ''तुम जिस काम के लिए यहाँ आए हो, उसे तुरंत पूरा करो। अगर इस बार परीक्षा में सफल न हुए, तो तुम अंधे हो जाओगे। जाओ और हर रोज़ अपने हर विषय का एक-एक पाठ याद करते जाओ। याद रखो, मैं हर पल तुम्हारे आस-पास रहता हूँ। तुम्हारा एक-एक काम मुझे मालूम रहता है। मुझे धोखा देने की कोशिश मत करना।'' रवि घबराया-सा था। यह कैसी आवाज़ थी! क्या भगवान शिव ने उससे कुछ कहा! वह धीरे-धीरे सरकता हुआ बाहर आया। मंदिर के द्वार पर पुजारी जी से मुलाकात हो गई। पुजारी जी ने हाल पूछा ''कहो बेटा रवि कैसे हो?''

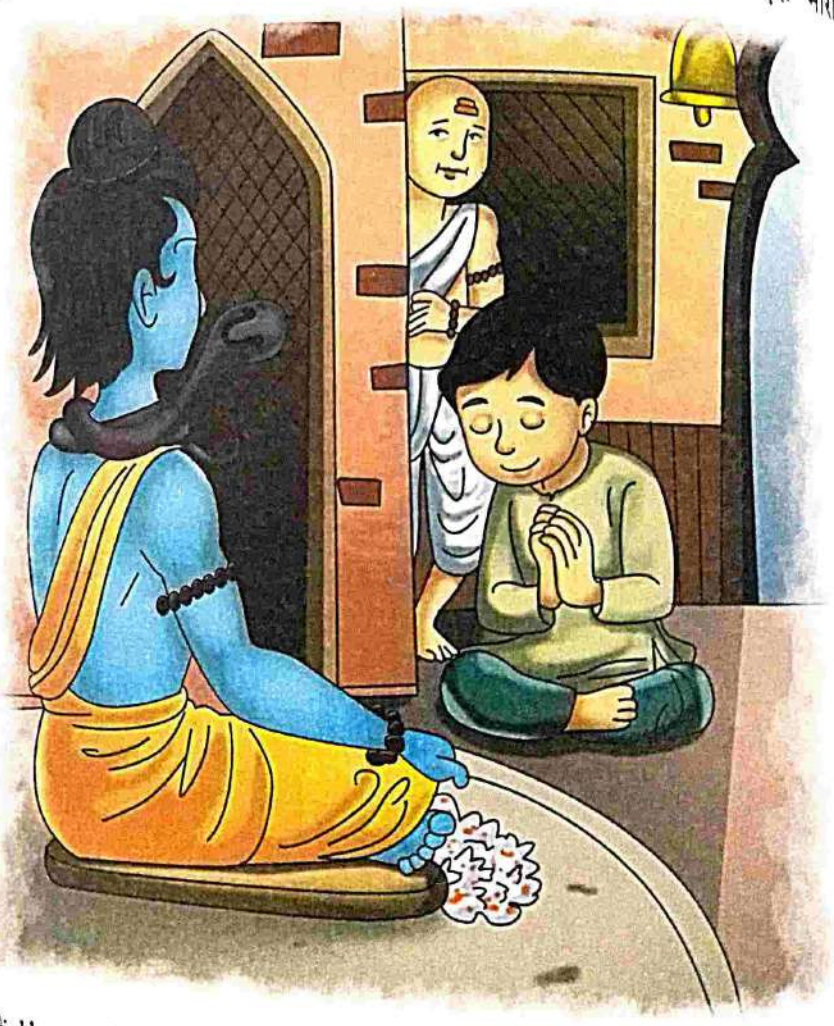

''ठीक हूँ... पुजारी जी। ऐसा लगता है, भगवान शिव ने आज मुझे कुछ आदेश दिए हैं।'' वह बोला।

''बेटा! भगवान अपने भक्तों पर हर पल नज़र रखते हैं। फिर, भगवान शिव का तो कहना ही क्या? वे भोले शंकर हैं। प्रसन्न हो जाएँ, तो तुम्हें मुँह-माँगा वरदान दे दें और नाराज़ हो जाएँ, तो तुम्हें भस्म कर सकते है?''

रवि की घबराहट अभी कम नहीं हुई थी। उसने जो कुछ सुना था, सब बता दिया। पुजारी बोले, ''बेटा, तुम कितने भाग्यशाली हो कि तुमने भगवान शिव की वाणी सुनी! अब इस बात की चर्चा किसी से मत करना। उन्होंने जो

कुछ कहा है, उसे चुपचाप पूरा करो। याद रखना, अगर तुमने उनका आदेश मानने में कोई गड़बड़ी की, तो तुम अपनी आँख...!''

''नहीं ..... नहीं ऐसा मत कहिए। मैं वचन देता हूँ।''

''शाबाश। याद रखो तुम्हारा परिश्रम, तुम्हारी लगन कभी व्यर्थ नहीं जाएगी। हिम्मत से काम करो।'' उस दिन रवि कक्षा में चुपचाप बैठा रहा। उसने क्लासवर्क किया। शाम को कमरे में आकर होमवर्क करने बैठ गया। मैंने टोका, ''रवि, आज खेलने नहीं गए।'' ''नहीं यार।'' फिर उसने टालते हुए, कहा, ''जरा अपनी कापियाँ दे दे, मैं बकाया काम पूरा करना चाहता हूँ।'' उस रात देर तक रवि काम करता रहा। मेरे बार-बार कहने पर बड़ी मुश्किल से सोया। मैं उठा, तो मैंने देखा, रवि मुझसे पहले ही उठ गया था। किताब खोले हुए कुछ याद कर रहा था। रवि में हुए इस अचानक परिवर्तन के प्रति सभी को आश्चर्य था और खुशी भी।

वार्षिक परीक्षा के लिए अभी एक महीना शेष था। उस दिन हमारा अंतिम मासिक टेस्ट था। रवि ने सभी विषयों की तैयारी करने की भरसक कोशिश की थी। शाम को जब लौटा, तो उसके चेहरे पर खुशी की मुस्कराहट थी। बोला, ''यार मैंने सभी विषयों के टेस्ट पेपर बहुत अच्छे किए हैं। मुझे इस बात से बहुत खुशी हो रही है। सोचता हूँ, मैं अपनी खुशी की यह बात माँ को लिख भेजूँ।''

''ज़रूर लिखो,'' मैंने कहा। उस रात मैंने देखा कि रवि देर तक माँ को पत्र लिखता रहा। माँ को इतना लंबा पत्र लिखते हुए उसे मैंने पहली बार ही देखा।

ज्यों-ज्यों परीक्षा के दिन निकट आ रहे थे, रवि उतना ही गंभीर होता जा रहा था। इसी बीच मासिक टेस्ट के नंबर भी बताए गए। आश्चर्य था कि रवि कक्षा में दूसरे स्थान पर था, यानी मुझसे दस नंबर कम।

उस दिन शाम को रवि मंदिर गया। पुजारी जी ने उसे देखते ही कहा, ''रवि, तुम्हारा दूसरा नंबर आया है न।''

''आपको कैसे मालूम?'' रवि ने आश्चर्य से पूछा।

''ये ही बता रहे थे। कहते थे— मैं इस लड़के से बहुत खुश हूँ।'' पुजारी जी ने भगवान शिव की ओर इशारा करके कहा। हमारी वार्षिक परीक्षाओं का समय आया। इसके बाद दस दिन की छुट्टी थी। हमें पिकनिक पर जाना था। वहाँ से लौटकर तीस अप्रैल को परीक्षाफल घोषित होना था और इसके बाद हमें अपने-अपने घर जाने की छुट्टी मिलने वाली थी। परीक्षा के दौरान रवि को देखकर कोई नहीं सोच सकता था कि यह वही लड़का है जो पिछले कुछ महीनों तक एक निहायत लापरवाह, गप्पी और खिलाड़ी लड़का था। समझ में नहीं आता था कि यह अचानक परिवर्तन हुआ कैसे। किंतु मैं इस परिवर्तन से बेहद खुश था। इतना खुश कि जी चाहता, रवि को सारे नाटक की बात बता दूँ। किंतु यह उसके हित में ठीक न था। हम पिकनिक पर गए। खूब मज़ा लिया। कुछ समय के लिए पढ़ाई का बोझ उतर गया था। लौटकर आए, तो परीक्षाफल के बारे में सभी अपनी-अपनी अटकलें लगा रहे थे। एक बात तो निश्चित ही थी कि मुझे प्रथम स्थान मिलना था, इसलिए मैं निश्चित था। चिंता थी तो सिर्फ़ रवि की, उसकी माँ की आशाओं की।

30 अप्रैल सुबह से ही हम सभी के मन में आशा और निराशा के भाव आ-जा रहे थे, लेकिन रवि एकदम शांत और उदास था। उसे बार-बार यही लगता, "यार, अगर मैंने पूरे साल भर पढ़ाई की होती, तो आज जो दुख महसूस हो रहा है वह न होता।"

"लेकिन किस बात का दुख रवि?" मैंने पूछा।

"यही कि मैं असफल न हो जाऊँ।" रवि ने कहा।

"लेकिन तुम्हें तो भगवान शिव पर भरोसा था न! फिर.....।"

"हाँ, किंतु वह भी तभी मदद करेंगे, जब मैं पढ़ूँगा। बिना पढ़े तो कोई किसी की मदद नहीं करता।"

तब हमारे कुछ और साथी भी आ गए थे। वे सब हमें खींचकर स्कूल ले गए।

कुछ ही देर में परीक्षाफल घोषित हुआ। रवि मेरी कक्षा में प्रथम आया था और मैं दूसरे नंबर पर था। रवि की इस सफलता पर सभी को आश्चर्य था। मेरा नंबर पिछड़ जाने पर मेरे साथियों को अफ़सोस था। किंतु मुझे न आश्चर्य था, न अफ़सोस। मैं बहुत खुश था। दरअसल इस हार में भी अनोखी खुशी थी, उसे भला कैसे बताऊँ! उसे तो रवि ही जान सकता है।

—हरिकृष्ण देवसरे

अध्यापन संकेत बच्चों को समझाएँ कि हमें सफलता पाने के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ती है। भगवान भी हमारी मदद तभी करता है जब हम स्वयं मेहनत करते हैं।

शब्दार्थ

लापरवाह – बेपरवाह या किसी की परवाह न होना; असफल – सफलता न मिलना; छमाही – छह महीना; चेतावनी – आगाह; क्रोध – गुस्सा; योजना – उपाय करना; गप्पे – फालतू बातें; आश्चर्य – अचंभा; अफसोस – खेद।

अभ्यास

पाठ से

मौखिक प्रश्न

(क) रवि को हॉस्टल छोड़ते समय माँ को क्या चिंताएँ थीं?

(ख) रवि कौन-सा काम नियमपूर्वक करता था?

(ग) रवि को क्या अंधविश्वास था?

(घ) रवि में परिवर्तन किस प्रकार आया?

लिखित प्रश्न

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए–

(क) रवि की रुचि थी–

(अ) पढ़ाई में ⬡ (ब) लड़ाई में ⬡

(स) गप्पों में ⬡ (द) क्रिकेट में ⬡

(ख) रवि अपनी पढ़ाई के लिए-

(अ) चिंतित था ⬡ (ब) ईमानदार था ⬡

(स) परिश्रम करता था ⬡ (द) लापरवाह था ⬡

(ग) रवि के हॉस्टल के साथी-

(अ) उसे पसंद करते थे ⬡ (ब) उससे बचते थे ⬡

(स) उसे डराते थे ⬡ (द) उससे लड़ते थे ⬡

(घ) रवि ने पढ़ाई पर ध्यान दिया-

(अ) माँ के कहने पर ⬡ (ब) मित्र के कहने पर ⬡

(स) पुजारी के कहने पर ⬡ (द) मंदिर में भविष्यवाणी सुनकर ⬡

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) रवि स्कूल से लौटकर क्या करता था?

(ख) छमाही परीक्षा के परिणाम में रवि की क्या स्थिति थी?

(ग) पुजारी जी ने रवि को कौन-सी बात किसी को न बताने के लिए कहा?

(घ) वार्षिक परीक्षाफल में रवि का क्या स्थान रहा?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

पाठ के आधार पर विश्वास के महत्व के विषय में अपने विचार प्रकट कीजिए।

भाषा ज्ञान

1. मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

(क) गप्पे हाँकना – _____

_____

(ख) आँखें भर आना –

(ग) नज़र रखना –

(घ) हवा पर सवार होना –

2. दिए गए शब्दों का वर्ण-विच्छेद कीजिए-

(क) गंभीर ग् + अ + म् + भ् + ई + र् + अ

(ख) वरदान ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___

(ग) आवाज ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___

(घ) लगन ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___

3. उचित शीर्षक के अंतर्गत लिखिए-

हॉस्टल, विषय, टेस्ट, पेपर, वाणी, घोषित, मुलाकात, मदद, नजर, धोखा, कोशिश, उपदेश, मालूम, लापरवाह, परीक्षा

हिंदी _____ _____ _____ _____

_____ _____ _____ _____

अंग्रेज़ी _____ _____ _____ _____

_____ _____ _____ _____

उर्दू _____ _____ _____ _____

_____ _____ _____ _____

रचना के क्षण

- भाव-भूमि – यदि परिवार का कोई सदस्य अपने कर्तव्यों के प्रति लापरवाह हो तो उसके प्रति मन में क्या भाव उत्पन्न होते हैं? व्यक्त कीजिए।

कल्पना व चिंतन

- क्या मन को वश में किए बिना कोई अच्छा कार्य पूर्ण किया जा सकता है? कल्पना कीजिए कि यदि सब अपनी मनमर्ज़ी का आचरण करें, तो कैसी अव्यवस्था फैल जाएगी। एकाग्रता कैसे प्राप्त की जाए? इसमें क्या-क्या बाधा डालने वाली स्थितियाँ हो सकती हैं? विचार कीजिए।

क्रिया-कलाप

1. पढ़ाई में एकाग्रता के लिए सीखिए-

योग - ध्यान

सीखने के लिए आजकल उपलब्ध हैं-

(i) योग आश्रम

(ii) पुस्तकें

(iii) टी.वी. व अन्य संचार माध्यम

2. जिस काम में आपका बहुत मन लगता हो, उसका विवरण दीजिए।

पठन हेतु

बरसात की आती हवा

बरसात होने के पश्चात् जो हवा चलती है, वह बड़ी मधुर और सुखदायी लगती है। कविता में उसी का वर्णन किया गया है।

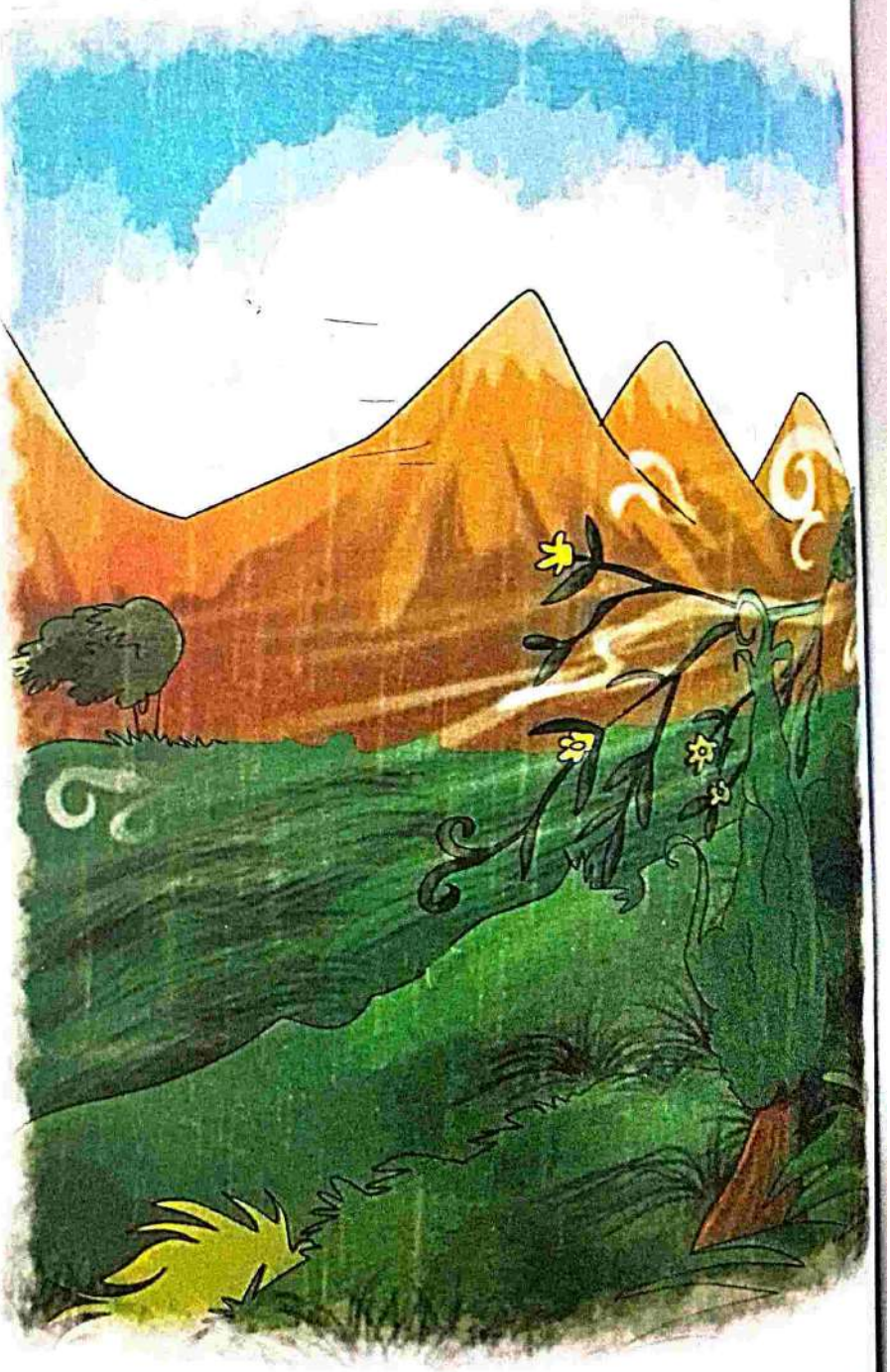

बरसात की आती हवा
वर्षा धुले आकाश से
या चंद्रमा के पास से
या बादलों की साँस से
मंद मदमाती हवा
बरसात की आती हवा।

यह खेलती है ढाल से
ऊँचे शिखर के भाल से
आकाश से पाताल से
झकझोर लहराती हवा
बरसात की आती हवा।

यह खेलती तरुमाल से
यह खेलती हर डाल से
हरी लता के जाल से
अठखेलती इठलाती हवा
बरसात की आती हवा।

यह शून्य से होकर प्रकट
नव-हर्ष से आगे झपट
हर अंग से जाती लिपट
आनंद सरसाती हवा
बरसात की आती हवा।

—हरिवंशराय बच्चन

17. निक्की, रोज़ी और रानी

महादेवी वर्मा जी ने अनेक पशु-पक्षियों के साथ बड़ी आत्मीयता का संबंध रखा। प्रस्तुत है उनकी स्मृतियों पर आधारित यह संस्मरण।

मेरे अतीत में बचपन के कोहरे में जो रेखाएँ अपने संपूर्ण ममत्व के विविध रंगों में उदय होने लगती हैं उनके आधारों में, तीन ऐसे भी जीव हैं, जो मानव समष्टि के सदस्य न होने पर भी मेरी स्मृति में छपे-से हैं। निक्की नेवला, रोज़ी कुत्ती और रानी घोड़ी।

रोज़ी की जैसे ही आँखें खुली, वैसे ही वह, मेरे पाँचवें जन्म-दिन पर, पिता जी के किसी राजकुमार विद्यार्थी द्वारा मुझे उपहार रूप में भेंट कर दी गई। स्वाभाविक ही था कि हम दोनों साथ ही बढ़ते। रोज़ी मेरे साथ दूध पीती, मेरे खटोले पर सोती, मेरे लकड़ी के घोड़े पर चढ़कर घूमती और मेरे खेलकूद में साथ देती। वस्तुतः मेरे पशु-प्रेम का आरंभ रोज़ी के साहचर्य से ही माना जा सकता है, जो 13 वर्ष की लंबी अवधि तक अविच्छिन्न रहा।

रोज़ी सफेद थी, किंतु उसके छोटे सुडौल कानों के कोने, पूँछ का सिरा, माथे का मध्य भाग और पंजों का अग्रांश कत्थई रंग का होने के कारण उसमें कत्थई किनारीवाली सफ़ेद साड़ी की धवल रंगीनी का आभास मिलता था। वह छोटी पर तेज़ टैरियर जाति की कुत्ती थी, और कुछ प्रकृति से और कुछ हमारे साहचर्य से श्वान दुर्लभ विशेषताएँ उत्पन्न हो जाने के कारण, घर में उसे बच्चों के समान ही वात्सल्य मिलता था। हम सबने तो उसे ऐसा साथी मान लिया था, जिसके बिना न कहीं जा सकते थे और न कुछ खा सकते थे।

उस समय पिता जी इंदौर के डेली कालेज (जो राजकुमारों का विद्यालय था) के वाइस प्रिंसिपल थे और हम सब छावनी में रहते थे, जहाँ दूर तक कोई बस्ती ही नहीं थी। हमें पढ़ाने वाले शिक्षक प्रातः और संध्या समय आते थे। इस प्रकार दोपहर का समय हमारे लिए अवकाश का समय था, जिसे हम अति व्यस्तता में बिताते थे।

सबसे छोटा भाई तो हमारी व्यस्तता में साथ देने के लिए बहुत छोटा था, परंतु मैं, मुझसे छोटी बहन और उससे छोटा भाई दोपहर भर बया चिड़ियों के घोंसलें तोड़ते, बबूल की सूखी और बीजों के कारण बजने वाली छीमियां बीनते घूमते रहते। ग्रीष्म में जब हवा ठहर-सी जाती थी, वर्षा में जब वातावरण गलकर बरसने-सा लगता था और शीत में जब समय जम-सा जाता था, हमारी व्यस्तता एकरस क्रियाशील रहती थी।

घूमते-घूमते थक जाने पर हमारा प्रिय विश्रामालय आम के वृक्षों से घिरा एक सूखा पोखर था, जिसका ऊँचा कगार पेड़ों की छाया में 8-9 फुट और खुली धूप में 4-5 फुट के लगभग गहरा था। कोई-कोई आम के पेड़ों की शाखाएँ लंबी, नीची और सूखे पोखर पर झूलती-सी थीं। सूखी पत्तियों ने झर-झरकर सूखी गहराई को कई फुट भर भी डाला था। हम तीनों डाल पर बैठकर झूलते रहते या राबिंसन क्रूसो के समान अपने समतल समुद्र के गहरे टापू की सीमाएँ नापते रहते। घूमने के क्रम में यदि हमें मकोई का पौधा या करौंदे की झाड़ी फूली-फूली मिल जाती, जो नंदन वन की प्रतीति होने लगती।

हमारे इस भ्रमण में रोज़ी निरंतर साथ देती। जब हम डाल पर बैठकर झूलते रहते, वह कगार के सिरे पर हमारे पैरों के नीचे बैठी कूदने के आदेश की आतुर प्रतीक्षा करती रहती, जब हम पोखर की परिक्रमा करते, वह हमारे आगे-आगे मानो राह दिखाने के लिए दौड़ती और जब हम मकोई और करौंदे एकत्र करने लगते, तब वह किसी झाड़ की छाया में बड़े विरक्त भाव से बैठी रहती। गरमी के दिनों में आम के पेड़ों से छोटी-बड़ी अंबियाँ हवा के झोंकों से नीचे गिरती रहतीं और उनके गिरने के स्वर के साथ रोज़ी सूखे पोखर में कूदती और पत्तियों के सरसराहट भरे समुद्र में से उसे खोज लाती। कच्ची केरी की चोपी लग जाने से बेचारी का गुलाबी छोटा मुँह धवीला हो जाता, परंतु वह इस खोज कार्य से विरत न होती।

दोपहर को पिता जी कालेज में रहते और माँ घर के कार्य में या छोटे भाई की देखभाव में व्यस्त रहती। रामा बाज़ार चला जाता और कल्लू की माँ या तो सोती या माँज-माँज कर बरतन चमकाने में दत्तचित्त रहती। वे सब समझते कि हम लोग या तो अपने कमरे में सो रहे हैं या पढ़-लिख रहे हैं। पर हम कुछ ऊँची खिड़की की राह से पहले रोज़ी को उतार देते और फिर एक-एक करके तीनों बाहर बगीचे में उतरकर करौंदे की झाड़ियों में छिपते-छिपते अपने उसी सूने मुक्तिलोक में पहुँच जाते। तीन में से किसी को भी कमरे में छोड़ना शंका से रहित नहीं था, क्योंकि वह बिस्कुट, पेड़ा, बर्फी आदि किसी भी उत्कोच के लोभ में मुखबिर बन सकता था। परिणामत: तीनों का जाना अनिवार्य था। रोज़ी भी हमारे संप्रदाय में दीक्षित हो चुकी थी, अत: वह भी साथ आती थी। हमारे अभियान के रहस्यों को वह इतना अधिक समझ गई थी कि दोपहर होते ही खिड़की से कूदने को आकुल होने लगती और खिड़की से उतार दिए जाने पर नीचे बैठकर मनोयोगपूर्वक हमारा उतरना देखती रहती। कभी खिड़की से कूदते समय हममें से कोई उसी के ऊपर गिर पड़ता था, पर वह चीं करना भी नियम विरुद्ध मानती थी।

ऐसे ही एक स्वच्छंद विचरण के उपरांत जब हम आम की डाल पर झूल-झूलकर अपने संग्रहालय का निरीक्षण कर रहे थे, तब एक आम गिरने का शब्द हुआ और रोज़ी नीचे कूदी। कुछ देर तक वह पत्तियों में न जाने क्या खोजती रही, फिर हमने आश्चर्य से देख वह मुँह में एक नकुल-शिशु को दबाए हुए ऊपर आ रही है। पत्तियों में से छोटा मुँह निकालकर उसने जैसे ही बाहर विस्मित दृष्टि डाली, वैसे ही अपने आपको रोज़ी के छोटे मुख-विवर में पाया। निरंतर बिना दाँत चुभाए कच्ची अंबिया लाते-लाते रोज़ी इतनी अभ्यस्त हो गई थी कि उस कुलबुलाते जीव को भी सुरक्षित हम तक ले आई।

आकार में वह गिलहरी से बड़ा न था, पर आकृति में स्पष्ट अंतर था। भूरा चूकीली रंग, काली कत्थई आँखें, नर्म-नर्म पंजे, गुलाबी नन्हा मुँह, रोओं में छिपे हुए नन्ही सीपियों में कान, सब कुछ देखकर हमें वह जीवित नन्हा खिलौना-सा जान पड़ा। रोज़ी ने उसे हौले से पकड़ा था, पर बचने के संघर्ष में उसके कुछ खरोंच लग ही गई थी। चोट की अधिकता से वह निश्चेष्ट था। उसे पाकर हम सब इतने प्रसन्न हुए कि घोंसले, चिकने पत्थर, जंगली कनेर के फूल आदि का अपना विचित्र संग्रहालय छोड़कर उसे लिए हुए घर की ओर भागे। उस समय की उत्तेजना में हम अपने अज्ञात भ्रमण की बात भी भूल गए, परंतु माँ ने यह नहीं पूछा कि वह छोटा जीव हमें कहाँ और कैसे मिला। उन्होंने जीव-जंतुओं को न सताने के संबंध में लंबा उपदेश देने के उपरांत उसे उसके नकुल माता-पिता के पास बिल में रख आने का आदेश दिया।

हमें बेचारे नकुल-शिशु से बड़ी सहानुभूति हुई। छोटे-से बिल में रात-दिन बड़े माता-पिता के सामने बैठे रहने में जो कष्ट बच्चे को हो सकता है, उसका हम अनुमान कर सकते थे। यदि एक छोटे कमरे में हमें सामने बैठाकर बाबू जी रात-दिन पढ़ते रहें और माँ सिलाई-बुनाई में लगी रहें तो हमारा क्या हाल होगा! ऐसी ही कोई अप्रिय स्थिति बिल में रही होगी, नहीं तो यह इतना छोटा बच्चा भागता ही क्यों? अत: नकुल-शिशु के बिल और बिल निवासी माता-पिता की खोज में हम अनिच्छापूर्वक गए और खोज में असफल होकर निराश से अधिक प्रसन्न लौटे।

अब तो उस लघु प्राणी का हमारे अतिरिक्त कोई आश्रय ही नहीं रहा। प्रसन्नतापूर्वक हमने अपने खिलौनों के छोटे बॉक्स को खाली कर उसमें रूई और रेशमी रूमाल बिछाया। फिर बहुत अनुनय-विनय कर और उसके सब आदेश मानने का वचन देकर रामा को, उसे रूई की बत्ती से दूध पिलाने के लिए राजी किया। इस प्रकार हमारे लघु परिवार में एक लघुतम सदस्य सम्मिलित हुआ।

जब रामा की सतर्क देखरेख में वह कुछ दिनों में स्वस्थ और पुष्ट होकर हमारा समझदार साथी हो गया, तब हम रामा को दिए वचन भूलकर फिर पूर्ववत् अराजकतावादी बन गए।

माँ ने उसका नाम रखा नकुल जो उसकी जातिवाचक संज्ञा का तत्सम रूप था, किंतु न जाने संक्षिप्तीकरण की किस प्रवृत्ति के कारण हम उसे निक्की पुकारने लगे।

पालने की दृष्टि से नेवला बहुत स्नेही और अनुशासित जीव है। गिलहरी के खाने योग्य कीट-पतंगा, फल-फूल आदि कोई भी खाद्य खाकर वह अपने पालने वाले के साथ चौबीसों घंटे रह सकता है। जेब में, कंधे पर, आस्तीन में, बालों में जहाँ कहीं भी उसे बैठा दिया जाए वह शांत, स्थिर भाव से बैठकर अपनी चंचल पर सतर्क आँखों से चारों ओर की स्थितियाँ देखता-परखता रहता।

निक्की मेरे पास ही रहता था। निक्की या तो मेरे दुपट्टे की चुन्नट में छिपा हुआ झूलता रहता या गर्दन के पीछे चोटी में छिपकर बैठता और कान के पास नन्हा मुँह निकालकर चारों ओर की गतिविधि देखता। रोज़ी का कार्य तो हमारे साथ दौड़ना ही था परंतु निक्की इच्छा होने पर ही अपने सुरक्षित स्थान से कूद कर दौड़ता। एक दिन जैसे ही हम खिड़की से नीचे उतरे वैसे ही निक्की की सतर्क आँखों ने गुलाब की क्यारी के पास घास में एक लंबे काले साँप को देख लिया और वह कूदकर उसके पास पहुँच गया। हमने आश्चर्य से देखा कि निक्की दोनों पिछले पैरों पर खड़ा होकर साँप को मानो चुनौती दे रहा है और साँप हवा में आधा उठकर फुँफकार रहा है।

निक्की को साँप ने मार डाला समझकर हम सब चीखने-पुकारने और साँप को पत्थर मारने लगे। यदि हमारा कोलाहल सुनकर रामा न आ जाता, तो परिणाम कुछ दुखद भी हो सकता था।

उस दिन प्रथम बार हमें ज्ञात हुआ कि हमारा बालिश्त भर का निक्की कई फुट लंबे साँप से लड़ सकता है। उन दोनों की लड़ाई मानो पेड़ की हिलती डाल से बिजली का खेल थी। निक्की, साँप के सब ओर इतनी तेज़ी से घूम रहा था कि वह एक भूरे और घूमते हुए धब्बे की तरह लग रहा था। साँप फन पटक रहा था, फुँफकार रहा था, उसे अपनी कुंडली में लपेट लेने के लिए आगे-पीछे हट-बढ़ रहा था, परंतु बिजली की तरह तड़प उठने वाले निक्की को पकड़ने में असमर्थ था। वह तेज़ी से उछल-उछलकर साँप के फन के नीचे पैने दाँतों से आघात कर रहा था।

रामा के कारण इस असम युद्ध का अंत देखने के लिए तो हम बाहर खड़े न रह सके, परंतु जब निक्की खिड़की पर आकर बैठा, तब हमने झाँककर साँप को कई खंडों को कटा देखा। निक्की के मुँह में विष न लगा हो, इस भय से रामा ने उसके मुँह को पानी में डुबा-डुबाकर धोया और फिर दूध दिया।

साँप जैसे विषधर को खंड-खंड करने की शक्ति रखने पर भी नेवला नितांत निर्विष है। जीव-जगत में जो निर्विष है, वह विष से मर जाता है और जिसमें अधिक मारक विष है, वह कम मारक विष वाले को परास्त कर देता है पर नेवला इसका अपवाद है। वह विषरहित होने पर भी न सर्प के विष से मरता है और न संघर्ष में विषधर से परास्त होता है।

नेवला सर्प की तुलना में बहुत कोमल और हल्का है। यदि साँप चाहे, तो उसे अपनी कुंडली में लपेटकर चूर-चूर कर डाले। फन के फूत्कार से मूर्च्छित कर दे, परंतु वह नेवले के फूल से हल्केपन और बिजली जैसी गति से परास्त हो जाता हैं। नेवला न उसे दर्शन का अवसर देता है, न व्यूह रचना का अवकाश और अपनी लाघवता के कारण नेवले को न विशेष अवसर चाहिए न सुयोग।

इसी बीच में बाबू जी ने मुझे शहर के मिशन स्कूल में भरती कराने का निश्चय लिया। इस योजना से तो हमारे समस्त कार्यक्रम के ध्वस्त होने की संभावना थी, अत: हम सब अत्यंत दुखी और चिंतित हुए, परंतु विवशता थी।

निक्की सदा के समान मेरे साथ था तथा बाबू जी के आदेश से उसे घर पर ही छोड़ देना आवश्यक हो गया। मिशन स्कूल पहुँच कर देखा कि वह शिकरम की छत पर बैठ कर वहाँ पहुँच गया है। फिर तो कपड़ों में छिपा कर भीतर ले जाने में मुझे सफलता मिल गई। परंतु कक्षा में उसे मेरे पास देखकर जो कोहराम मचा, उसने मुझे स्तंभित और अवाक् कर दिया। 'शी हैज ब्रॉट अ रेपटाइल, थ्रो इट अवे' आदि कहकर जब सिस्टर्स तथा सहपाठिनियाँ चिल्लाने-पुकारने लगीं, तब रेपटाइल का अर्थ न जानने पर भी मैंने समझ लिया कि वह निक्की के लिए अपमानजनक संबोधन है। मैंने अप्रसन्न मुद्रा में बार-बार कहा कि यह मेरा निक्की है, किसी को काटता नहीं, परंतु कोई उसके साथ बैठने को राजी नहीं हुआ। निरुपाय मैंने उसे फाटक से चारदीवारी तक फैली लता में बैठा तो दिया, परंतु उसके खो जाने की शंका से मेरा मन पढ़ाई-लिखाई से विरक्त ही रहा।

आने के समय जब निक्की कूदकर मेरे कंधे पर आ बैठा तब आनंद के मारे मेरे आँसू आ गए। तब से नित्य यही क्रम चलने लगा।

प्रतिदिन मुझे पहुँचाने और लेने रामा आता था और वह पालक के नाते निक्की के प्रति बहुत सदय था, अत: मार्ग भर निक्की मेरी गोद में बैठकर आता था और मिशन के फाटक की लता में या बाड़े में घूम-घूमकर मेरी पढ़ाई के घंटे बिताता था। छुट्टी होने पर मेरे फाटक पर पहुँचते ही उसका कूदकर मेरे कंधे पर बैठ जाना इतना नियमित और निश्चित था कि उसमें कुछ मिनटों का हेर-फेर भी कभी नहीं हुआ।

इसके उपरांत हमारे परिवार में एक सबसे बड़ा जीव सम्मिलित हुआ। रियासत होने के कारण इंदौर में शानदार घोड़ों और सवारों का आधिक्य था। इसके अतिरिक्त हम अंग्रेज़ों के बच्चों को छोटे टट्टुओं या सफेद गधों (जिसकी जाति के संबंध में रामा ने हमारा ज्ञानवर्द्धन किया) पर घूमते देखते थे।

एक दिन हम तीनों ने बाबूजी को मौखिक स्मृति-पत्र (मेमोरेंडम) दिया कि हमारे छोटा घोड़ा न रखना अन्याय की बात है। यदि अन्य बच्चों को घोड़े पर बैठने का अधिकार है, तो हमें भी वह अधिकार मिलना चाहिए।

बाबू जी ने हँसते हुए पूछा- सफ़ेद टट्टू पर बैठोगे? कुछ दिन बाद हमने पास देखा— एक छोटा-सा चॉकलेटी रंग का टट्टू आँगन के पश्चिम वाले बरामदे में बाँधा गया है। बरामदा तो घोड़े बाँधने के लिए बनाया नहीं गया था, अत: बाहर से टट्टू को लाने ले जाने के लिए दीवार में एक नया दरवाज़ा लगाया गया और उसकी मालिश करने तथा खाने, पीने, घूमने आदि की देख-रेख के लिए छुट्टन नाम का साईस रखा गया।

अब तो हम उस छोटे टट्टू से बहुत प्रभावित और आतंकित हुए। हमारे तथा हमारे अन्य साथी जीवों के लिए न मकान में कोई परिवर्तन हुआ न कोई विशेष नौकर रखा गया। रामा को तो नौकर कहा नहीं जा सकता, क्योंकि वह तो डाँटने-फटकारने के अतिरिक्त हमारे कान भी खींचता था और हमारी खिड़की तक दरवाज़े में परिवर्तित नहीं हो सकी, जिससे हम रोज़ी और निक्की के साथ कूदने के कष्ट से मुक्त हो सकते। बाबूजी से यह सुनकर भी कि वह टट्टू हमारी सवारी के लिए आया है हम सब चार-पाँच दिन उससे रुष्ट और अप्रसन्न ही घूमते रहे, परंतु अंत में उसने हमारी मित्रता प्राप्त ही कर ली। रामा से उसका नाम पूछने पर ज्ञात हुआ कि उसे ताजरानी कह

कर पुकारा जाता है। ताजमहल का चित्र हमने देखा था और रामा और कल्लू की माँ की सभी कहानियों में रानी के सुख-दुख की गाथा सुनते-सुनते हम उसके प्रति बड़े सदय हो गए थे। ताजमहल जैसे भवन की रानी होने पर भी यह वहाँ से कहानी की रानी की तरह निकाल दी गई है, यह कल्पना करते ही हमारी सारी ईर्ष्या और सारा रोष करुणा से पिघल गया और हम उसे और अधिक आराम देने के उपाय सोचने लगे।

वह इतनी सुंदर थी कि अब तक उसकी छवि आँखों में बसी जैसी है। हल्का चॉकलेटी चमकदार रंग जिस पर दृष्टि फिसल जाती थी। खड़े छोटे कानों के बीच में माथे पर झूलता अयाल का गुच्छा, बड़ी काली, स्वच्छ और पारदर्शी जैसी आँखें, लाल नथुने जिन्हें फुला-फुलाकर चारों ओर की गंध लेती रहती। उजले दाँत और लाल जीभ की झलक देते हुए गुलाबी ओंठों वाला लंबा मुँह, जो लोहा चबाते रहने पर भी क्षत-विक्षत नहीं होता था। ऊँचाई के अनुपात से पीठ की चौड़ाई अधिक है, सुडौल, मज़बूत पैर और सघन पूँछ जो मक्खियाँ उड़ाने के क्रम में मोरछल के समान उठती-गिरती रहती थी।

हम बार-बार सोचते हैं कि वह कुछ और छोटी क्यों न हुई। होती तो हम रोज़ी और निक्की के समान उसे भी अपने कमरे में रख लेते।

रानी को अपने कमरे में ले जाना संभव नहीं था, अत: अस्तबल बना हुआ बरामदा ही हमारी अराजकता का कार्यालय बना।

बरामदा घोड़े बाँधने के लिए तो बना नहीं था, अत: उसकी दीवार में एक खुली अलमारी और कई आले ताख थे। उन्हीं में हमारा स्वेच्छया विस्थापित और शरणार्थी खिलौनों का परिवार स्थापित होने लगा।

रानी की गरदन में झूल-झूलकर, उसके कान और अयाल में फूल खोंस-खोंसकर और उसको बिस्कुट, मिठाई आदि खिला-खिलाकर थोड़े ही दिनों में हमने उससे ऐसी मैत्री कर ली कि हमें न देखने पर वह अस्थिर होकर पैर पटकने और हिनहिनाने लगती।

फिर हमारी घुड़सवारी का कार्यक्रम आरंभ हुआ। मेरे और बहन के लिए सामान्य छोटी पर सुंदर जीन खरीदी गई और भाई के लिए चमड़े के घेरे वाली ऐसी जीन बनवाई गई, जिससे संतुलन खोने पर भी गिरने का भय नहीं था।

बाहर के चबूतरे पर खड़े होकर हम बारी-बारी से रानी पर आरूढ़ होते और छुट्टन साथ दौड़ता हुआ हमें घुमाता। सवेरे भाई-बहन घूमते और स्कूल से लौटने पर तीसरे पहर या संध्या समय मेरे साथ यह कार्यक्रम दोहराया जाता।

परंतु ऐसी सवारी से हमारी विद्रोही प्रकृति कैसे संतुष्ट हो सकती थी। अस्तबल में रानी की गर्दन में झूलकर तथा स्टूल के सहारे उसकी पीठ पर चढ़कर भी हमें संतोष न होता था।

अंत में एक छुट्टी के दिन दोपहर में सबके सो जाने पर हम रानी को खोलकर बाहर ले आए और चबूतरे पर खड़े होकर उसकी नंगी पीठ पर सवारी करके बारी-बारी से अधूरी शिक्षा की पूरी परीक्षा लेने लगे।

यह स्वाभाविक ही था कि ताजरानी हमारी अराजक प्रवृत्तियों से प्रभावित हो जाती। वास्तव में बालकों में चेतना के विभिन्न स्तरों का बोध न होकर सामान्य चेतना का ही बोध रहता है, अत: उनके लिए पशु, पक्षी, वनस्पति सब एक परिवार के हो जाते हैं।

निक्की रानी की पूँछ झूलने लगता था, रोज़ी इच्छानुसार उसकी गर्दन पर उछलकर चढ़ती और कूदती थी और हम सब उसकी पीठ पर ऐसे गर्व से बैठते थे, मानो मयूर सिंहासन पर आसीन हो।

रानी हम सबकी शक्ति और दुर्बलता जानती थी। उसकी नंगी पीठ पर अयाल कर बैठने वालों को वह दुल्की चाल से इधर-उधर घुमाकर संतुष्ट कर देती थी। परंतु एक बार मेरे बैठ जाने पर भाई ने अपने हाथ की पतली संटी उसके पैरों में मार दी। चोट लगने की तो संभावना ही नहीं थी, परंतु इससे न जाने उसका स्वाभिमान आहत हो गया या कोई दुखद स्मृति उभर आई। वह ऐसे वेग से भागी मानो सड़क, पेड़, नदी, नाले सब उसे पकड़ बाँध रखने का संकल्प किए हों।

कुछ दूर मैंने अपने आपको उस उड़नखटोले पर सँभाला, परंतु गिरना तो निश्चित था। मेरे गिरते ही वह मानो अतीत से वर्तमान में लौट आई, और इस प्रकार निश्चल खड़ी रह गई, जैसे पश्चाताप की प्रस्तर प्रतिमा हो।

साथियों की चीख-पुकार से सब दौड़े और फिर बहुत दिनों तक मुझे बिछौने पर पड़ा रहना पड़ा! स्वस्थ होकर रानी के पास जाने पर वह ऐसी करुण पश्चाताप भरी दृष्टि से मुझे देखकर हिनहिनाने लगी कि मेरे आँसू आ गए।

एक बार भाई के जन्मदिन पर नानी ने उसके लिए सोने के कड़े भेजे। सामान्यत: हम कोई भी नया कपड़ा या आभूषण पहनकर रानी को दिखाने अवश्य जाते थे। सुंदर छोटे-छोटे शेर मुँह वाले कड़े पहनकर भाई भी रानी को दिखाने गया और न जाने किस प्रेरणा से वह दोनों कड़े उतारकर रानी के खड़े सतर्क कानों में वलय की तरह पहना आया।

फिर हम सब खेल में कड़ों की बात भूल गए। संध्या समय भाई के कड़े रहित हाथ देखकर जब माँ ने पूछताछ की, तब खोज आरंभ हुई, पर कहीं भी कड़ों का पता नहीं चला।

रानी अपने कानों को खुरों से खोदती और हिनहिनाती रही। अंत में बाबू जी का ध्यान उसकी ओर गया और उन्होंने मिट्टी हटाने का आदेश दिया। किसी ने कुछ गहरा गड्ढा खोदकर दोनों कड़े गाड़ दिए थे। दंड तो किसी को नहीं मिला, परंतु रानी सारे घर के हृदय में स्थान पा गई।

एक घटना अपनी विचित्रता में स्मरणीय है। एक सवेरे उठने पर हमने रानी के पास एक छोटे-से घोड़े के बच्चे को देखा। 'यह कहाँ था?' कह-कहकर हमने रामा को इतना थका दिया कि उसने निरुपाय घोषणा की कि वह नया जीव रानी के पेट में दाना चारा खाकर सो रहा था। भाई ने उत्साह से पूछा 'और भी है' और रामा ने स्वीकृति में सिर हिलाया।

अब तो हम विस्मित भी हुए और क्रोधित भी। यह छोटे जीव कोई काम-धाम नहीं करते और हमको पीठ पर बैठा कर दौड़ने वाली रानी का दाना चारा स्वयं खाकर उसके पेट में लेटे रहते हैं।

भाई ने कहा- रानी का पेट चीरकर हम कम-से-कम एक और बच्चा घोड़ा निकाल लें- तब बच्चे घोड़ों पर बैठे छोटे बहन-भाई बैठेंगे और रानी मेरी सेवा में रहेगी। प्रस्ताव मुझे भी उचित जान पड़ा। जब एक दोपहर को वह कहीं से शाक काटने का चाकू ले आया, तब मेरे साहस ने जवाब दे दिया। एक और भी समस्या की ओर हमारा ध्यान गया। आखिर हम रानी का पेट सिएँगे कैसे? माँ की महीन-सी सुई से तो सीना संभव नहीं था। टाट सीने का बड़ा सूआ रामा अपनी कोठरी में रखता था, जहाँ हमारी पहुँच नहीं थी। कुछ दिनों के उपरांत जब रानी का अश्व शिशु कुछ बड़ा होकर दौड़ने लगा, तब हमें न अपना क्रोध स्मरण रहा और न प्रस्ताव।

फिर अचानक हमारे अराजक राज्य पर क्रांति का बवंडर बह गया और हमें समझदारों के देश में निर्वासित होना पड़ा। अवकाश के दिनों में जब हम घर लौटे, तब निक्की मर चुका था, रानी और उसका बच्चा पवन किसी को दे दिए गए थे। केवल, दुर्बल, अकेली और खोई-सी रोज़ी हमारे पैरों से लिपटकर कूँ-कूँ करके रोने लगी।

—महादेवी वर्मा

अध्यापन संकेत बच्चों को महादेवी वर्मा के एक अन्य संस्मरण 'गिल्लू' के बारे में बताएँ तथा उन्हें जीवों पर दया करना समझाएँ।

शब्दार्थ

साहचर्य - साथ; श्वान - कुत्ता; प्रतीति - आभास; विरक्त - उदासीन; दत्तचित्त- लीन; अनुनय-विनय - मिन्नत-खुशामद; पूर्ववत- पहले की भाँति; अराजकतावादी - मनमानी करने वाले; निर्विष - ज़हर के बिना; मारक- मार डालने वाला; स्तंभित- हैरान; निरुपाय- उपाय रहित; सदय- दयालु; निश्चल- स्थिर; वलय- गोल घेरा।

अभ्यास

पाठ से

मौखिक प्रश्न

(क) रोज़ी महादेवी जी के घर किसके द्वारा आई?

(ख) घूमते-घूमते थक जाने पर बच्चों ने अपना विश्रामालय कहाँ बनाया था?

(ग) निक्की को कौन ढूँढ़कर लाया था?

(घ) बच्चों ने रानी से किस प्रकार मैत्री कर ली?

(ग) आँख, नासिका, नेत्र, लोचन, दृग।

(घ) पवन, जल, वायु, समीर, हवा।

2. सुमेल कीजिए-

स्तंभ 'अ'	स्तंभ 'ब'
(क) दुखद	(i) शत्रुता
(ख) मैत्री	(ii) असंतुष्ट
(ग) स्वच्छ	(iii) विराटता
(घ) संतुष्ट	(iv) अस्वच्छ
(ङ) लाघवता	(v) सुखद

3. अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

(क) ध्वस्त –

(ख) आतंकित –

(ग) निरुपाय –

(घ) अराजक –

रचना के क्षण

- भाव-भूमि – आपने भी कभी पशु-पक्षियों के साथ कुछ समय व्यतीत किया होगा, आपके हृदय में उनके प्रति क्या भाव उत्पन्न हुए व्यक्त कीजिए।

कल्पना व चिंतन

- कल्पना कीजिए कि धरती पर पशु-पक्षी न रहे, तो कैसा अनुभव होगा। क्या इसकी सुंदरता व सहजता में कमी अनुभव होगी? बताइए।

क्रिया-कलाप

- पशु-पक्षियों की अनेक प्रजातियाँ अब लुप्त होती जा रही हैं? इसका क्या कारण है? पता लगाकर लिखिए-

- छोटे भाई-बहनों को पशु-पक्षियों की कहानियाँ सुनाइए और आनंद लीजिए।

अध्याय

18. भक्ति पदावली

मीराबाई एक ऐसी स्त्री थीं जो महारानी होते हुए भी एक तपस्विनी की भाँति कृष्ण की भक्ति और प्रेम में लीन रहीं। यहाँ उनके कुछ पद दिए जा रहे हैं, जिनमें उन्होंने अपने प्रेम व सतगुरु भक्ति को व्यक्त किया है। साथ ही सूरदास जी का एक पद है।

मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई।
जाके सिर मोर मुकुट, मेरो पति सोई।
छाँड़ि दई कुल की कानि, कहा करिहै कोई।
संतन संग बैठि-बैठि, लोक-लाज खोई।
अँसुवन जल सींचि-सींचि प्रेम बेल बोई।
अब तो बेल फैल गई, आनंद फल होई।
भगति देखि राजी हुई, जगत देखि रोई।
दासी मीरा लाल गिरिधर, तारो अब मोही।।

पायो जी मैं तो राम-रतन धन पायो।
वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरु, करि किरपा अपणायो।
जनम-जनम की पूँजी पाई, जग मैं सबै खोवायो।
खरचै न खुटै कोई चोर न लूटे, दिन-दिन बढ़त सवायो।
सत की नाव खेवटिया सतगुरु, भवसागर तरि आयो।
'मीरा' के प्रभु गिरधर नागर, हरख-हरख जस गायो।

मैया मोरी! मैं नहिं माखन खायो।
भोर भए गैयन के पाछे, मधुबन मोहि पठायो।
चार पहर बंसीबट भटक्यो, साँझ परे घर आयो।
मैं बालक बहियन को छोटो, छींको केहि विधि पायो।
ग्वाल-बाल सब बैर परे हैं, बरबस मुख लपटायो।
जिय तेरे कछु भेद उपजि है, जानि परायो जायो।
यह ले अपनी लकुटि कमरिया, बहुतै नाच नचायो।
सूरदास तब बिहसि जसोदा, लै उर कंठ लगायो।

—सूरदास

अध्यापन संकेत अध्यापक बच्चों को मीराबाई के जीवन के बारे में बताएँ कि वे किस प्रकार कृष्ण की भक्ति करती थीं।

शब्दार्थ

कुल की कानि – खानदान की लाज; रतन – बहुमूल्य नगीना; खेवटिया – नाविक; गैयन – गाएँ; बरबस – ज़बरदस्ती; भेद – अंतर; मोर मुकुट – मोर के पंखों से बना मुकुट; तारो – उद्धार करो; अमोलक – अनमोल; हरख – हर्षित, प्रसन्न; पठायो – भेजती हो; बहियन – बाँहें; परायो जायो – दूसरे का बेटा; खुटै – कम होना।

अभ्यास

कविता से

मौखिक प्रश्न

(क) मीरा ने अपना पति किसे कहा है?

(ख) मीरा किन लोगों के साथ उठती-बैठती है?

(ग) मीरा ने कौन सा धन पाया था?

(घ) कृष्ण माता को किस बात की सफ़ाई देते हैं?

लिखित प्रश्न

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए-

(क) मीरा ने छोड़ दी है-

(अ) गृहस्थी (ब) तिजोरी

(स) दुनिया तथा समाज की लज्जा (द) भाई-बहनें

(ख) मीरा की नौका के खिवैया हैं-

(अ) उसके पति (ब) उसके पिता

(स) उसके रिश्तेदार (द) सतगुरु

(ग) कृष्ण अस्वीकार करते हैं-

(अ) गाय चराना (ब) माखन खाना

(स) बंसी बजाना (द) खेलना-कूदना

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) मीरा ने प्रेम की बेल किस प्रकार सींची?

(ख) मीरा क्या देखकर राजी हुई और क्या देखकर रोई?

(ग) भवसागर तरने में मीरा को किस भाँति सफलता मिली?

(घ) क्या सुनकर यशोदा हँस पड़ी?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

आशय स्पष्ट कीजिए-

मैं बालक बहियन को छोटो, छींको किस विधि पायो।

ग्वाल बाल सब बैर परे हैं, बरबस मुख लपटाओ।

भाषा-ज्ञान

1. सुमेल कीजिए-

स्तंभ 'अ'	स्तंभ 'ब'
(क) अमोलक	(i) कृपा
(ख) असुँवन	(ii) लज्जा
(ग) किरपा	(iii) अश्रु
(घ) हरख	(iv) अमूल्य
(ङ) लाज	(v) हर्ष

2. जहाँ किसी वर्ण की आवृत्ति बार-बार होती है, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है, जैसे-

मैया मोरी मैं नहिं·····

में 'म' वर्ण की आवृत्ति बार-बार हुई है, अतः यहाँ अनुप्रास अलंकार है।

इसी प्रकार अनुप्रास अलंकार के कोई दो अन्य उदाहरण लिखिए।

(क) _____

(ख) _____

3. निम्नलिखत शब्दों को सही शीर्षक के सामने लिखिए-

बेल, आँसू, नाव, माखन, संत, कृपा, खर्च, जल, वन, छींका, बाँसुरी, मैया।

स्त्रीलिंग _____ _____ _____ _____

_____ _____ _____ _____

पुल्लिंग _____ _____ _____ _____

_____ _____ _____ _____

रचना के क्षण

- भाव-भूमि – आपके मन में भी कभी-कभी भक्ति के भाव उमड़ते-घुमड़ते होंगे। तब आपको कैसा अनुभव होता है, व्यक्त कीजिए।

कल्पना व चिंतन

- बालकों की मनोहारी बातों के बिना जीवन कितना सूना व बोझिल हो उठता है, कल्पना कीजिए। यदि बालक बचपन से ही बड़ों जैसा व्यवहार करें, तो कैसा लगेगा? विचार कीजिए कि आजकल बच्चों में भी अतिशय गंभीरता क्यों आती जा रही है।

क्रिया-कलाप

- मीरा के भजनों को ध्यानपूर्वक सुनिए और उनके भावों को ग्रहण कीजिए।
- सूरदास जी द्वारा लिखित कृष्ण-भक्ति के कुछ अन्य पद भी पढ़िए।

पूर्व मध्यावधि प्रश्न-पत्र

पाठ 1 से 5 पर आधारित

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए–

(क) सरस्वती देवी से माँगी गई है–

(अ) विद्या विनय की ⬡ (ब) रिद्धि सिद्धि ⬡

(स) संपदा ⬡ (द) शत्रु पर विजय ⬡

(ख) स्कूल का वर्णन सुनकर लेखक को लगा कि स्कूल

(अ) में सख्ती होगी ⬡ (ब) धरती की सबसे अच्छी जगह होगी ⬡

(स) जाना बहुत कठिन है ⬡ (द) कभी नहीं जाना चाहिए ⬡

(ग) लेखक का काम देखकर अमेरिकी महिला–

(अ) संतुष्ट हुई ⬡ (ब) क्रोधित हुई ⬡

(स) उदास हुई ⬡ (द) डाँटने लगी ⬡

(घ) कुंती चाहती थी कि–

(अ) कर्ण उनका आदर करें ⬡ (ब) कर्ण पांडवों का साथ दे ⬡

(स) कर्ण विवाह करें ⬡ (द) कर्ण अपने अस्त्र त्याग दे ⬡

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) सेवा किस भाव से की जानी चाहिए?

(ख) लेखक का हुलिया देखकर हैड टीचर पर क्या प्रभाव पड़ा?

(ग) क्या कर्ण ने कुंती के प्रति द्वेषभाव रखा?

(घ) कर्ण से कुंती ने क्या छीन लिया था?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

आशय स्पष्ट कीजिए—

हे माता! जिसने मातृ-स्नेह तक मुझसे छीन लिया वही मुझे सिंहासन का आश्वासन दे, यह असंभव है न, जिस दौलत को तुमने एक दिन मुझसे छीन लिया था, उसे अब लौटाना तुम्हारे सामर्थ्य की बात हे, माँ तुमने मेरा उच्च राजवंश मेरा भाई सब कुछ मुझसे छीन लिए, मेरे जन्म लेते ही ···।

4. 'अन्' उपसर्ग जोड़कर लिखिए—

आवश्यक, वन, देखी, उपयोगी।

5. **सही शीर्षक के नीचे लिखिए-**

एस्ट्रोनॉट, मेहमाननवाज़ी, बटुआ, खिचड़ी, फेवीकोल, कैलेंडर, संभावना, जिक्र, आघात, अप्रत्याशित, सादर, लंच, डिनर, किस्म, स्वीट होम, शरारत, खर्राटा, गेटआउट

हिंदी	_____	_____	_____	_____
अंग्रेजी	_____	_____	_____	_____
उर्दू	_____	_____	_____	_____
लोकभाषा	_____	_____	_____	_____

6. **संधि-विच्छेद कीजिए-**

(क) महत्वाकांक्षा _____

(ख) प्रतिदिन _____

(ग) महाविद्यालय _____

(घ) समकालीन _____

(च) सूर्योदय _____

7. **भाववाचक संज्ञाएँ बनाइए-**

(क) सुंदर _____ (ख) बूढ़ा _____

(ग) योग्य _____ (घ) ऊँचा _____

(ङ) गहरा _____ (च) सज्जन _____

8. **अर्थ लिखिए-**

(क) सुयोग _____

(ख) मनोभीष्ट _____

(ग) सौख्य _____

(घ) परमार्थ _____

(ङ) लौह स्तंभ _____

(च) विसर्जित _____

(छ) अर्जित _____

(ज) परित्यक्त _____

(झ) निश्छल _____

मध्यावधि प्रश्न-पत्र

पाठ 1 से 9 पर आधारित

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए–

(क) अभिनंदन करना है–

(अ) नेता का

(ब) अभिनेता का

(स) सत्य का

(द) पंडित का

(ख) कर्ण ने कुंती के प्रस्ताव को–

(अ) मान लिया

(ब) स्वार्थपूर्ण बताया

(स) विचार कर के मानने का आश्वासन दिया

(द) विनम्रता से ठुकरा दिया

(ग) लोकमान्य तिलक ने रचना की–

(अ) पुराण की

(ब) वेद की

(स) पंचतंत्र की

(द) गीता भाष्य की

(घ) आखेटक और सिद्धार्थ के बीच हुआ–

(अ) युद्ध

(ब) वैर

(स) विवाद

(द) हिंसा

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) शहर पहुँचने पर लेखक की क्या दशा थी?

(ख) लेखक ने अतिथि के साथ किन-किन विषयों पर चर्चा कर ली थी?

(ग) 'मातृभूमि के लिए तिलक की अमूल्य भेंट' नेता जी ने किसे कहा है?

(घ) मशीनी विचारक की दुनिया की क्या-क्या विशेषताएँ थी?

(ङ) हामिद ने चिमटा क्यों खरीदा?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

व्याख्या कीजिए-

'अतिथि कल का सूरज तुम्हारे आगमन का चौथा सूरज होगा और वह मेरी सहनशीलता की अंतिम सुबह होगी। उसके बाद मैं लड़खड़ा जाऊँगा। यह सच है कि अतिथि होने के कारण तुम देवता हो, पर मैं भी आखिर मनुष्य हूँ।'

4. वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

(क) लौह-स्तंभ

(ख) श्रेय

(ग) सर्र-सर्र

(घ) ढूँढ़

5. **सुमेल कीजिए-**

स्तंभ 'अ'	स्तंभ 'ब'
(क) नजदीक	(i) धनराशि
(ख) नज़र	(ii) व्यय
(ग) रकम	(iii) प्रारंभ
(घ) शुरुआत	(iv) समीप
(ङ) खर्च	(v) दृष्टि

6. **दिए गए श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्दों (सुनाई देने में लगभग समान किंतु अर्थ भिन्न-भिन्न) से वाक्य बनाइए-**

(क) अनल –

अनिल –

(ख) दिन –

दीन –

(ग) व्रत –

वृत्त –

(घ) कपट –

कपाट –

7. **वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखिए-**

(क) मशीन से चलने वाला –

(ख) काव्य रचना करने वाला –

(ग) भाषण देने वाला –

(घ) भाषण, कविता आदि सुनने वाला –

8. **सही स्थान पर उचित विराम चिह्न का प्रयोग कीजिए-**

रीटा गीता मेले जाने की जिद कर रही थीं माँ ने समझाया कि मेले में एक दूसरे का हाथ मत छोड़ना ज्यादा खिलौने मत छेड़ना और बाबूजी जो दिलवा दें चुपचाप ले लेना मेले में रीटा आगे चली गई तो गीता ने पुकारा सुनो रुको मैं भी आती हूँ तुम क्या लोगी रीटा ने पूछा।

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर के सामने (✓) लगाइए–

(क) लेखक को शहर में रहने का ठिकाना इसलिए नहीं मिला क्योंकि वह–

(अ) अश्वेत था ⬡ (ब) अनपढ़ था ⬡

(स) परिचय पत्र नहीं लाया था ⬡ (द) पैसे नहीं दे सकता था ⬡

(ख) उपवन में सिद्धार्थ कर रहे थे–

(अ) व्यायाम ⬡ (ब) भ्रमण ⬡

(स) मनोरंजन ⬡ (द) विश्राम ⬡

(ग) आत्मविश्वास को दृढ़ करने के लिए किसको अस्तित्व बनाया गया है?

(अ) बच्चों का ⬡ (ब) ईश्वर का ⬡

(स) मनुष्य का ⬡ (द) इनसान का ⬡

(घ) आगरा के पेठे और नमकीन–

(अ) अब कोई नहीं खाता ⬡ (ब) हर जगह मिल जाते हैं ⬡

(स) में अब वो बात नहीं रही ⬡ (द) का नामोनिशान न रहा ⬡

2. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) घर को 'स्वीट होम' क्यों कहा जाता है?

(ख) चिमटे की सच्चाई जानकर अमीना के मन में क्या भाव उठे?

(ग) मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु किसे माना गया है?

(घ) माली ने नन्हे को क्या सीख दी?

(ङ) वार्षिक परीक्षाफल में रवि का क्या स्थान रहा?

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) जहाज का कप्तान कैसा व्यक्ति था? लेखक का काम उसे कैसा लगा?

(ख) तिलक जी किसके सहारे जेल के दुख और यंत्रणाओं को झेल गए?

(ग) कर्ण ने किसे 'तरूवर की छाँह' कहा है और क्यों?

(घ) हम पृथ्वी को बचाने में अपना योगदान किस-किस प्रकार दे सकते हैं?

(ङ) भ्रमण के दौरान रोजी क्या करती रहती थी?

4. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–

(क) सफलता _____ (ख) विश्वास _____ (ग) विवाहित _____

(घ) कर्मण्य _____ (ङ) सामाजिक _____ (च) सत्य _____

5. निम्नलिखित शब्दों में से विशेषण तथा विशेष्य को अलग-अलग करके लिखिए–

	विशेषण	विशेष्य
(क) नया जीवन	_____	_____
(ख) सुंदर समय	_____	_____
(ग) चंचल युवती	_____	_____
(घ) मनमोहक दृश्य	_____	_____
(ङ) उज्ज्वल प्रातः	_____	_____

6. वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

(क) चकमा देना _____

(ख) कानाफूसी होना _____

(ग) गुदड़ी में लाल _____

7. दी गई क्रियाओं से भाववाचक संज्ञा बनाइए-

क्रिया	भाववाचक संज्ञा	क्रिया	भाववाचक संज्ञा
(क) बनाना –	_____	(ख) सजाना –	_____
(ग) धोना –	_____	(घ) चुनना –	_____
(ङ) मिलाना –	_____	(च) बहना –	_____

8. उचित शीर्षक के अंतर्गत लिखिए-

हॉस्टल, विषय, टेस्ट, पेपर, वाणी, घोषित, मुलाकात, मदद, नजर, धोखा, कोशिश, उपदेश, मालूम, लापरवाह, परीक्षा

हिंदी _____ _____ _____ _____

_____ _____ _____ _____

अंग्रेज़ी _____ _____ _____ _____

_____ _____ _____ _____

उर्दू _____ _____ _____ _____

_____ _____ _____ _____

is an innovative digital solution for teachers and students. It contains three modules delivering the content that can be used effectively with the coursebooks.

For Desktop Application

- Go to www.vardhmanbooks.com/digital library to download our UDC (Unique Digibank Code) desktop software.
- Open the software and get registered.
- Select the series and click on the Add Book Icon.
- Submit Book Series Code.
- Submit Digibank Code UDC (Unique Digibank Code) provided on the front page.
- Now, the digital version of the book would start downloading.
- Once downloaded, the digibook can be opened up inside the UDC software.

For Mobile Application

Our animated e-books can be viewed and read on android mobiles as well.

How to enter in our Digital world?

- Download vardhmanbooks app from Play Store. (https://play.google.com/store/apps/details?id=com.siron.vardhman)
- Click on the Add Book Icon and then scan the QR code given here.
- Submit the book code (UDC – Unique Digibank Code) in the download panel and download your book.
- After downloading, a pop-up button appears on your app screen showing– yes or no asking for installation. When you click on the yes button, your e-book will get installed.
- Now, the e-book icon would be shown on the shelf. Click on it to explore a brighter, more active and cheerful learning world.

Web Support For Teachers

- Teacher manuals are provided for pedagogical guidance.
- Paper generator is also provided for creating and managing tests, exam papers from our pool of thousands of questions.
- Lesson Plan and Worksheets are also available on our website.
- We are also providing e-books for teacher's aid.

अंशांश

हिंदी पाठमाला

हिंदी पाठमाला 'अंशांश' (भाग 1 से भाग 8) की रचना बच्चों के मानसिक एवं बौद्धिक स्तर को ध्यान में रखकर की गई है। यह पाठमाला नवीनतम शिक्षा प्रणाली के अनुरूप बनाई गई है।

इस पाठमाला की प्रमुख विशेषताएँ हैं–

- सरल से जटिल को दृष्टिगत रखकर रोचक पाठों का क्रम निर्धारण
- बच्चों के जीवन और अनुभवों की अभिव्यक्ति
- सरल तथा सरस भाषा का प्रयोग
- रोचक चित्रकथाएँ, चित्र-वर्णन, भाषा ज्ञान आदि
- विषयानुकूल आकर्षक पाठ्य-सामग्री
- साहित्य की सभी विधाओं का समावेश
- अभ्यास के अंतर्गत बहुविकल्पीय, लिखित, मौखिक प्रश्नों तथा व्याकरण आदि का समावेश
- मूल्यांकन के लिए परीक्षा प्रश्न-पत्र
- रचनात्मक गतिविधियों द्वारा ज्ञान में वृद्धि

Vardhman

Vardhman Books International Pvt. Ltd.

Plot No. 16, Sector 10-C, IInd Floor, Vasundhara, Delhi/NCR-201012

Toll Free No. 1800-121-9968

Info@vardhmanbooks.com

www.vardhmanbooks.com

ISBN : 978-93-88513-07-4